Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 फरवरी 2024

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 8 अंक 2, फरवरी 2024

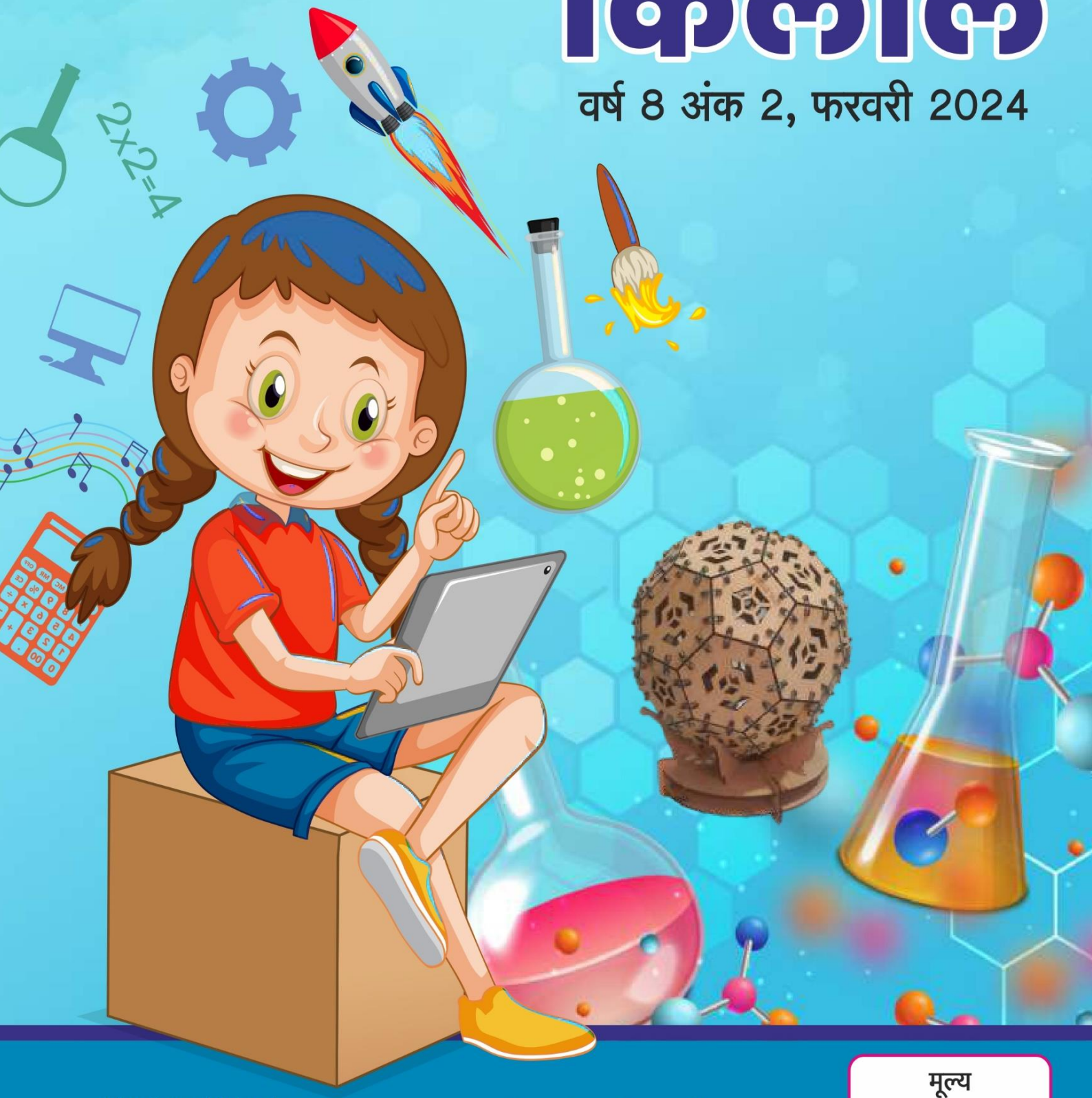

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक

डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों,

फरवरी का महीना हम सब के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है. फरवरी माह में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है. 28 फरवरी को देश के महान वैज्ञानिक सीवी रमन ने 'रमन प्रभाव' का आविष्कार किया था. उनके इस आविष्कार के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. इस माह ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में हमने जितनी तरक्की की है.उस तरक्की को अंजाम तक पहुंचने वाले महान विभूतियों वैज्ञानिकों एवं उनके कृतियों को भी स्मरण करते है. हमें अपने महान विभूतियों के कार्यों से प्ररेणा लेकर कड़ी मेहनत करना चाहिए.

एक बात और याद दिलाना चाहूंगी आप किलोल पढ़ना व अपनी रचना भेजना न भूलें. आपकी रचनाओं का हमें इंतिजार रहता है.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक

डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

सर्दी दीदी 8

साहस से हम आगे बढ़ते 9

पंचतंत्र की कहानी 10

नव वर्ष पर कविता 13

A Children's Poem 14

मैं भी किसान 15

अधूरी कहानी पूरी करो 17

गरीब किसान और कंजूस जमींदार 17

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 18

कु. भूमिका राजपूत,आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 19

श्रीमती ज्योति बनाफर, बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी 20

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 21

अंगूर खट्टे हैं 21

आओ मिलकर करें नमन 22

चुनमुन बकरी और गोपू हाथी 23

नया उदय 25

चित्र देख कर कहानी लिखो 27

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 27

आईना झूठ नहीं बोलता 27

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 28

नन्हे खरगोश 29

खरगोश और जंगल 30

हैप्पी न्यू ईयर 31

चालाक लोमड़ी 33

मेरा शहर बिल्हा 34

कलम 35

बचपन की यादें 36

चन्दन क सपना 38
इनसान की लापरवाही और गधे की समझदारी 39
समय के फेर 40
जंगल में नया साल 42
नटखट खरगोश 43
हमारा तिरंगा 44
अपना भारत 45
नशा नाश की जड़ है 47
तरीका 49
देश हमारा 51
वंदेमातरम 53
एक सुंदर सुबह हुई 54
पर्यावरण 56
कहानी 57
समय का उपयोग 58
पहेलियां 60
बाल पहेली 62
स्ट्राबेरी 64
गणित की पहेलियाँ 66
शून्य से शिखर तक 68
उसकी चिट्ठी 70
खाएं खजूर 72
जग में सबसे मिलकर रहना 74
नववर्ष का स्वागत 76
रामभक्त केवट 78
सूरज बाबू 81
FLN नारा 82
अवसर की तलाश न कर 83
जन्मदिन 85
बन्दर का जुखाम 86
कोयल गीत सुनाती है 87

प्यारा घोड़ा 88
जंगल में पिकनिक 89
जीवंत गजल 91
गणतंत्र 93
बने विजेता वो सदा 95
भोले मन की अभिलाषा 98
विद्युतचालित सायकिल 100
बहादुर लोमड़ी और खरगोश 102
हिंदी हमारी शान 103
स्वयं पर कविता 105
युवाओं के प्रेरणाश्रोत विवेकानंद जी 106
मेरी बातें 109
समय सबके पास होता है 111
BAD INFLUENCE 112
हौसला जिंदगी का 113
बचपन 115
नारी 117
भले इंसान 118
दोस्त की मदद 120
एक घमंडी हाथी और चींटी 122
घमंडी हाथी और चींटी 124
मनुष्य 125
युवाओं के प्रेरणास्रोत- स्वामी विवेकानंद 127
चलो मदारी 129
ख़ुशी मनाओ जी 130
गीत सुनाती 131
प्यारा चम्मच 132
परीक्षा 133
गीताली और गिल्लू 134
यूँ ही नही मिलती मंजिल 136
बाल पहेलियाँ 137

एक अनोखी दोस्ती 139
मेरा, भारतवर्ष महान है 140
मंजिल का ताला कैसे मैं खोलू 141
मेरी पाठशाला 142
मेरा सबसे प्यारा तिरंगा 144
न हारो कभी मन से 145
हिंदी से हम हिंदुस्तान 147
10 जनवरी विश्व हिंदी दिवस विशेष 149
मकड़ी 151
आम 153
छुक-छुक करती रेलगाड़ी 154
आदित्य एल - 1 यान 155
मड़ई- मेला 157
टामी 160
बेटी 162
पर्यावरण से मत कर खिलवाड़ 163
वसंत 165
दिल्ली 167
परीक्षा पे चर्चा 169
बेटियाँ 172
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको 174
रंगीली गुड़िया 176
लाल टमाटर 177
नटखट बंदर 178
NEP 2020 शिक्षा गीत 179
पहेलियाँ 181
ठंड का मौसम 183
आवव खाबो गुपचुप 184
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 185
निपुण बना दो 187
पहेलियाँ 189

गणित के खेल 190
बेटी 192
अपना विद्यालय 194
कहते मुझसे पर्यावरण 195
धन्य एक्सपोसेट मिशन 197
सर ना झुकाएंगे जीवन में हम 199
बड़प्पन 201
तिरंगा 204
नन्हीं चिड़िया 206
मैं हूँ किताब 208
ऊर्जा संरक्षण 210
नया साल, नई उम्मीदें, नए सपने, नए लक्ष्य 212
नया साल : लक्ष्य की ओर 217
छत्तीसगढ़ के माटी 218
कोहिनूराँचल 220
परीक्षा पर चर्चा 221
पीपल की पुकार 223
आज राम का दिन है 224

सर्दी दीदी

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

सर्दी दीदी! सर्दी दीदी!
ठिठुरन लेकर आई है.
बच्चे काँप रहे हैं थर- थर
शीतलहर संग लाई है.

सूरज दादा छिपे हुए हैं
कम्बल और रजाई में.
भैया कहते ठंड बहुत है
मन लगता नहीं पढ़ाई में.

खाओ डटकर हरी सब्जियाँ
अच्छी सेहत बन जाए.
गाजर- मूली और टमाटर
बेचन ठेले पर लाए.

*****

साहस से हम आगे बढ़ते

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

नहीं अधिक हम सो पाते हैं,
जीवन पथ पर चलते रहते.
बाधाओं से कभी न डरते,
साहस से हम आगे बढ़ते.

बड़े बोझ भी ढो लेते हैं,
भले देह है मेरी छोटी.
काम सभी हम कर लेते हैं,
अक्ल नहीं है मेरी मोटी.

काम हमारा बढ़ते जाना,
कभी नहीं हम अलसाते हैं.
खुशियाँ बाँटा करते सबको,
दुख में भी तो मुस्काते हैं.

*****

पंचतंत्र की कहानी

चुहिया के स्वयंवर की कहानी

गंगा नदी के तट पर एक धर्मशाला थी. वहां एक गुरु जी रहा करते थे. वह दिनभर तप और ध्यान में लीन होकर अपना जीवन यापन करते थे.

एक दिन जब गुरु जी नदी में नहा रहे थे, उसी समय एक बाज अपने पंजे में एक चुहिया लेकर उड़ा जा रहा था. जब बाज गुरु जी के ऊपर से निकला तो, चुहिया अचानक बाज के पंजे से फिसलकर गुरु जी की अंजुली में आकर गिर गई.

गुरु जी ने सोचा कि अगर उन्होंने चुहिया को ऐसे ही छोड़ दिया, तो बाज उसे खा जाएगा. इसलिए, उन्होंने चुहिया को अकेला नहीं छोड़ा और उसे पास के बरगद के पेड़ के नीचे रख दिया और खुद को शुद्ध करने के लिए फिर से नहाने के लिए नदी में चले गए.

नहाने के बाद गुरु जी ने अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करके चुहिया को एक छोटी लड़की में बदल दिया और अपने साथ आश्रम ले गए. गुरु जी ने आश्रम पहुंचकर सारी बात अपनी पत्नी को बताई और कहा कि हमारी कोई संतान नहीं है, इसलिए इसे ईश्वर का वरदान समझ कर स्वीकार करो और इसका अच्छे से लालन-पालन करो.

फिर उस लड़की ने स्वयं गुरु जी की देखरेख में धर्मशाला में पढ़ना-लिखना शुरु कर दिया. लड़की पढ़ने में बहुत होशियार थी. यह देखकर गुरु जी और उनकी पत्नी को अपनी बेट पर बहुत गर्व होता था.

एक दिन गुरु जी को उनकी पत्नी ने बताया कि उनकी लड़की विवाह योग्य हो गई है. तब गुरु जी ने कहा कि यह विशेष बच्ची एक विशेष पति की हकदार है.

अगली सुबह अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए गुरु जी ने सूर्य देव की प्रार्थना की और पूछा "हे सूर्यदेव, क्या आप मेरी बेटी के साथ विवाह करेंगे?"

यह सुनकर लड़की बोली "पिताजी, सूर्य देव पूरी दुनिया को रोशन करते हैं, लेकिन वह असहनीय रूप से गर्म और उग्र स्वभाव के हैं. मैं उनसे शादी नहीं कर सकती. कृपया मेरे लिए एक बेहतर पति की तलाश करें."

गुरु जी ने आश्चर्य से पूछा, "सूर्य देव से बेहतर कौन हो सकता है?"

इस पर सूर्य देव ने सलाह दी, "आप बादलों के राजा से बात कर सकते हैं. वह मुझसे बेहतर हैं, क्योंकि वह मुझे और मेरे प्रकाश को ढक सकते हैं."

इसके बाद, गुरु जी ने अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए, बादलों के राजा को बुलाया और कहा, "कृपया मेरी बेटी को स्वीकार करें. मैं चाहता हूं कि अगर बेटी की स्वीकृति हो, तो आप उससे शादी करें."

इस पर बेटी ने कहा, "पिताजी, बादलों का राजा काला, गीला और बहुत ठंडा होता है. मैं उससे शादी नहीं करना चाहती. कृपया मेरे लिए एक बेहतर पति की तलाश करें."

गुरु जी ने फिर से आश्चर्य में पूछा, "भला बादलों के राजा से भी बेहतर कौन हो सकता है?"

बादलों के राजा ने सलाह दी, "गुरुजी, आप हवाओं के भगवान वायुदेव से बात करें. वह मुझसे बेहतर हैं, क्योंकि वह मुझे कहीं भी उड़ा कर ले जा सकते हैं."

इसके बाद, गुरु जी ने फिर से अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए, वायु देव को बुलाया और कहा, "कृपया मेरी बेटी के साथ विवाह स्वीकार करें. अगर वह आपको चुनती है तो."

लेकिन बेटी ने वायुदेव से भी विवाह करने से इनकार कर दिया और कहा, "पिता जी, वायु देव बहुत तेज हैं. वह अपनी दिशा बदलते रहते हैं. मैं उनसे शादी नहीं कर सकती. कृपया मेरे लिए एक बेहतर पति की तलाश करें."

गुरु जी फिर सोचने लगे, "वायुदेव से भी बेहतर कौन हो सकता है?"

इस पर वायु देव ने सलाह दी, "आप पहाड़ों के राजा से इस विषय में बात कर सकते हैं. वह मुझसे बेहतर है, क्योंकि वह मुझे बहने से रोक सकते हैं."

इस के बाद गुरु जी ने अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए, पहाड़ों के राजा को बुलाया और कहा, "कृपया मेरी बेटी का हाथ स्वीकार करें. मैं चाहता हूं कि अगर वह आपको पसंद करती है, तो आप उससे शादी करें."

फिर बेटी ने कहा, "पिता, पहाड़ों के राज बहुत कठोर हैं. वह अचल हैं. मैं उससे शादी नहीं करना चाहती. कृपया मेरे लिए एक बेहतर पति की तलाश करें."

गुरु जी ने सोचा, "पहाड़ों के राज से भी बेहतर कौन हो सकता है?"

पहाड़ों के राजा ने सलाह दी, “गुरुजी, आप चूहे के राजा से बात करके देखिए. वह मुझसे बेहतर है, क्योंकि वह मुझमें छेद कर सकता है.”

आखिर में गुरु जी ने अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए चूहे के राजा को बुलाया और कहा, “कृपया मेरी बेटी का हाथ स्वीकार करें. मैं चाहता हूं कि आप उससे शादी करें, अगर वह आपसे शादी करना चाहे.”

जब बेटी चूहे के राजा से मिली, तो वह खुश होकर शादी के लिए राजी हो गई.

गुरु ने अपनी बेटी को एक सुंदर चुहिया के रूप में वापस बदल दिया. इस प्रकार गुरु जी की बेटी चुहिया का स्वयंवर सम्पन्न हुआ.

कहानी से सीख: जो जन्म से जैसा होता है, उसका स्वाभाव कभी नहीं बदल सकता.

*****

नव वर्ष पर कविता

रचनाकार- अनुष्का शुक्ला, कक्षा - 6वीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहार बिलासपुर

आया आया नया साल ये आया,
सबके लिए खुशियाँ ले आया.
भूल कर बीती बातो को,
एक नया मुकाम पाना है.
नए साल में हमको,
एक नया इतिहास बनाना है.
नए वर्ष में नई पहल हो,
कठिन जिंदगी और शरल हो.
अनसुलझी जो रही पहेली,
अब शायद उसका भी हल हो.
खुशियों से भरा नजारा,
अभिनंदन नव वर्ष तुम्हारा.
आया आया नया साल यह आया,
सबके लिए खुशियाँ ले आया.

*****

A Children's Poem

Tikeshwar Sinha "Gabdiwala", Balod

O my dear !
Happy New Year.

Let's sing a song.
Ding-dong ding-dong.

Play the big drum.
Tarah-rum pum-pum.

We have good chance.
So make fine dance.

Now clap with cheer.
Happy New Year.

*****

मैं भी किसान

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

दादा जी ओ दादा जी,
बोलो- बोलो क्या है जी.
मैं भी आज किसान बनूँ,
ट्रेक्टर लेकर खेत चलूँ.

पढ़ने जाओ विद्यालय,
पढ़- लिखकर ज्ञान बढ़ाना.
वैज्ञानिक विधि से खेती,
कर बढ़िया उपज उगाना.

खुश होकर धरती माता,
हरी भरी हो जाएगी.
रंग- बिरंगे फसलों से फिर,
घर- आँगन इठिलाएगी.

हरी सब्जियाँ खेतों से,
सबके घर आ जाएगी.

बाग- बगीचों की डाली,
फलों से लद जाएगी.

गाँव- शहर के लोग सभी ,
खाकर सब स्वस्थ रहेंगे.
बच्चे, युवा और किसान,
उन्नति पथ सभी बढ़ेंगे.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

गरीब किसान और कंजूस जमींदार

एक गांव में एक अमीर जमींदार रहता था.

उसे अपने पैसों पर बड़ा घमंड था.

जितने अधिक पैसे उसके पास थे, उतना ही वह कंजूस भी था.

अपने खेतों में काम करने वाले किसानों से वह खूब काम करवाता, मगर पगार कौड़ी भर भी न देता.

मजबूर गरीब किसान मन मारकर उसके खेत में काम करते. उसी गांव में रामू नामक एक किसान रहता था.

उसके पास थोड़ी सी जमीन थी. उसी में खेती-बाड़ी कर वह अपना और अपने परिवार का गुजारा चलाता था.

रामू बड़ा मेहनती था. वह दिन भर अपने खेत में काम करता और अपनी मेहनत के दम पर इतनी फसल प्राप्त कर लेता कि अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी जुटा सके.

गांव के बाकी किसानों के पास रामू के मुकाबले अधिक जमीनें थीं. वे रामू की मेहनत देखकर हैरान होते कि कैसे इतनी सी जमीन में वह इतनी फसल उगा लेता है.

एक साल गांव में भयंकर सूखा पड़ा.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

बिना बारिश के खेत खलिहान सूखने लगे.गरीब किसानों के पास सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं था.वे सिंचाई के लिए बारिश पर ही निर्भर थे.इसलिए उनकी सारी फसल बर्बाद हो सकते हैं.रामू के साथ भी यही हुआ.अपने छोटे से खेत में वह किसी तरह अपने परिवार का पालन पोषण कर रहा था.अब उनके सामने भूखों मरने की नौबत आ गई.मजबूर होकर रामू एवं उनके साथी गरीब किसान,गांव के अमीर जमींदार के पास कर्ज मांगने गये.ताकि उन पैसों से बोरवेल खुदाई कराकर,फसल बर्बाद होने के पहले खेत में सिंचाई किया जा सके.

किसानों ने जमींदार के पास अपनी बातें रखी.किसानों की बात सुनकर जमींदार ठहाका मारकर हंसने लगे और उसने कहा-"तुम लोग बोरवेल से खेत में सिंचाई करोगे?इतना जल्दी कभी तुम्हारे सोचे हुए कार्य पूरा नहीं होंगे.अगर बोरवेल में पानी नहीं निकला तो तुम मेरे पैसे कैसे दे पाओगे.यह कहकर उन सभी को अपने घर से भगा दिया.

सभी किसान वापस आ रहे थे.तभी गांव में सर्वे कर रहे कृषि विकासखंड अधिकारी को देखा.सभी किसान को चिंतित देखकर,अधिकारी महोदय ने उनकी चिंता के कारण पूछा.किसानों ने अपनी समस्याओं को बताया.वह अधिकारी सरकार के द्वारा किसानों को दिए जाने वाले कृषि से संबंधित लाभों का जानकारी दिया और वह तत्काल किसान के खेत में बोरवेल खुदाई कराया तथा मशीन लगाकर फसल को नष्ट होने से बचाया.उस बोरवेल से सभी गरीब किसानों के खेतों में पर्याप्त मात्रा में पानी हो गया.जिसके कारण सभी किसानों को अधिक फसल प्राप्त हुआ.सभी गरीब किसानों ने उस अधिकारी को धन्यवाद दिया.जिसके कारण उसके जीवन में खुशहाली आया.इधर कंजूस जमींदार की फसल को पानी प्राप्त नहीं हुआ.जिस कारण से उसकी पूरी फसल नष्ट हो गया.वह किसानों के खेत से प्राप्त फसल को देखकर पश्चाताप करने लगा.सोचने लगा कि अगर किसानों से मिलजुल कर रहता तो निश्चित ही मुझे भी अधिक मात्रा में फसल मिलता.उस जमींदार को पैसों का घमंड था.वह पूरी तरह टूट गया और उन्होंने सभी किसानों से मिलजुल कर रहने की बात कहकर,उसने किसानों से क्षमा मांगा.सभी किसानों ने उस जमींदार को क्षमा कर,एक साथ सभी खुशी से रहने लगे.

बच्चो इस कहानी से हमने सीखा कि सदा जरूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए.अपने संपत्ति पर घमंड नहीं करनी चाहिए.

कु. भूमिका राजपूत,आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

बिना बारिश के खेत खलिहान सूखने लगे.गरीब किसानों के पास सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं था.वे सिंचाई के लिए बारिश पर ही निर्भर थे.इसलिए उनकी सारी फसल बर्बाद हो सकते थे.फसल के बर्बादी को रोकने के लिए कोई भी तरीका से पानी की व्यवस्था करना है.इस कारण रामू ने सभी किसानों को बुलाकर अपने सोचे हुए विचारों की जानकारी दिया. जिसमें जमीदार को भी बुलाया गया था.

रामू ने कहा कि हम सभी किसान मिलकर क्यों न तत्काल एक कुआं खुदाई किया जाए. ताकि कुएं में वाटर पंप लगाकर फसल का सिंचाई किया जा सके. सभी किसानों ने रामू के विचारों का स्वागत किया.लेकिन जमींदार को अपने पैसों का अधिक घमंड था.जिसके कारण वह इस कार्य में शामिल न होने की बात कह कर अपने घर चले गए.

सभी किसान बारी-बारी से कुआं की खुदाई प्रारंभ कर दिया. कुछ ही दिन पश्चात कुआं में पर्याप्त मात्रा में पानी आ गया. सभी किसान मिलकर वाटर पंप की व्यवस्था किया और फसल सूखने के पहले किसानों के खेत में जरूरत अनुसार पानी डाला गया.जिसके कारण किसानों को पहले से अधिक मात्रा में फसल का उत्पादन हुआ.चुकी जमींदार को पानी नहीं मिलने के कारण उसकी फसल पूरी तरह नष्ट हो गया और उसे आकाल का सामना करना पड़ा. जमींदार,किसानों के पर्याप्त मात्रा में फसल के उत्पादन देखकर अपने किए गए कार्यों पर शर्मिंदा हुआ.

श्रीमती ज्योति बनाफर, बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी

बारिश का नामोनिशान न था. सभी किसानों के साथ-साथ रामू भी बहुत परेशान होने लगा. किसान गांव की जमींदार के पास जाकर मजदूरी और काम की गुहार लगाने लगे.जमींदार ने काम तो दिया पर वह इन लोगों से ज्यादा काम लेकर बहुत कम मजदूरी देता था.रामू ने कहा ऐसे में तो हम भूख से मर जाएंगे.उसने कुछ किसान भाइयों से कहा कि यहां से कुछ दूरी पर एक नाला बहता है और उसे नाले में हमेशा पानी रहता है.क्योंकि उस नले का पानी ऊपर पहाड़ से बर्फ पिघलने के कारण आता है.तो क्यों ना हम उसे नाले से अपने खेत तक पानी ले आए जिससे कि हमारे खेत में काम करने के लिए पानी की समस्या हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी.पर गांव की सभी किसान कहने लगी कि इतनी दूर से पानी लाना गांव तक बहुत आसान काम नहीं है.रामू धीरे-धीरे सबका मनोबल बढ़ाने लगा पर इससे भी कुछ बहुत ज्यादा हासिल नहीं हुआ.रामू को लगा क्यों ना मैं अकेली ही इस काम में लग जाऊं अपने परिवार के साथ कुछ दिनों में जरूर पानी मेरे खेत तक आ जाएगा

रामू अपने परिवार के साथ बहुत जल्द ही इस काम में लग गया.उसको इस काम में लगा हुआ देखकर गांव की अन्य महिलाएं भी अपने घर में चर्चा किये और उन्होंने भी रामू का साथ दिया .सब मिलकर मेहनत करने लगे.जमींदार इस काम से बहुत नाराज हुआ और इस काम में रामू का साथ नहीं दिया और जो उनके साथ दे रहा था उन सभी को धमकाने लगा.सभी ने रामू को अपना नेता मानकर धीरे-धीरे खुदाई करते हुए एक दूसरे की मदद से नले का पानी खेत तक लाने में सफल हो गए. अब देखते ही देखते सभी की खेत में पानी आने लगा

खेतो में फसल लहलहाने लगी. इस बीच कंजूस जमींदार भी पानी की तलाश में सबको प्रलोभन देने लगा कि मेरे खेत की ओर नाले का पानी मोड़ दो मई तुम्हे मालामाल कर दूंगा. पर किसी ने उनका साथ नही दिया. सभी किसान एक स्वर में कहने लगे हम जमींदार को पानी नहीं देंगे. पर रामू ने सभी से आग्रह किया और उसके खेत के लिए पानी की एक नाली मोड़ दी .जिससे जमींदार बहुत प्रसन्न हो गया. उसने गांव वालों की हमेशा मदद करने की कसम खाई और कहा कि अब किसी भी प्रकार से मैं गांव वालों को तंग नहीं करूंगा और हमेशा उनका साथ दूंगा.इस तरह से गांव में फिर से एक बार सभी की मेहनत और लगन से खुशहाली छा गई.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

अंगूर खट्टे हैं

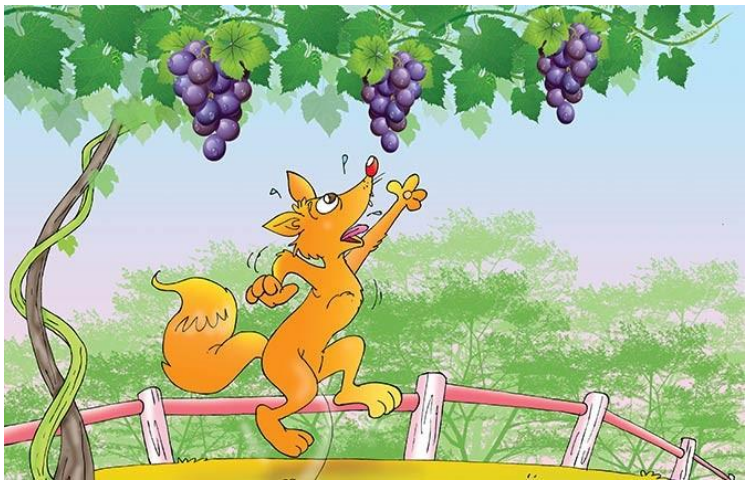

एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी. एक दिन वह भूखी-प्यासी भोजन की तलाश में जंगल में भटक रही थी.

भटकते-भटकते सुबह से शाम हो गई, लेकिन वह शिकार प्राप्त न कर सकी. शाम होते-होते वह जंगल के समीप स्थित एक गाँव में पहुँच गई. वहाँ उसे एक खेत दिखाई पड़ा. भूख से बेहाल लोमड़ी खेत में घुस गई.

वहाँ एक ऊँचे पेड़ पर अंगूर की बेल लिपटी हुई थी, जिसमें रसीले अंगूर के गुच्छे लगे हुए थे. अंगूर देखते ही लोमड़ी के मुँह से लार टपकने लगी. वह उन रस भरे अंगूरों को खाकर तृप्त हो जाना चाहती थी. उसने अंगूर के एक गुच्छे पर अपनी दृष्टि जमाई और जोर से उछली.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

आओ मिलकर करें नमन

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, दुर्ग

आओ मिलकर उन्हें करें नमन
जिनके लिए सब कुछ है वतन.
देश की रक्षा के लिए जिन्होंने
निछावर कर दी तन और मन.

ठंडी,गर्मी और बरसात को सहते
सरहद में दुश्मन से टक्कर लेते
तिरंगे को कभी झुकने न देते.
ईट का जवाब, पत्थर से देते.

दुश्मनों की गोली सीने में खाकर
अपने वतन को महफूज रखते है.
आओ मिलकर उन्हें करें नमन
जो देश के लिए कुछ करते है

*****

चुनमुन बकरी और गोपू हाथी

रचनाकार- डॉ कमलेन्द्र कुमार, जालौन

मुझको गोपू कहे प्यार से,
मोहक वन का मैं वासी.
तुम भी अपना नाम बताओ,
मुनमुन लाड़ो या रासी?

चुनमुन चुनमुन कहे प्यार से,
मैं कोमल वन की वासी.
मम्मी पापा बिछुड़ गए सब,
है छाई बहुत उदासी.

घाटी पार करूँ मैं कैसे,
प्यारे गोपू बतलाओ.
कैसे घर मैं जाऊँगी अब,
तुम ऐसी युक्ति सुझाओ.

पकड़ो मेरी सूड़ तुम्हे मैं,
घाटी पार कराऊंगा.
सुन लो मेरी प्यारी चुनमुन
तुमको घर पहुंचाऊंगा.

गोपू हाथी कहे प्यार से,
हम राग द्वेष सब भूलें.
बांध तने में रस्सी को हम,
झट आओ झूला झूलें.

*****

नया उदय

रचनाकार- सुप्रिया शर्मा, रायपुर

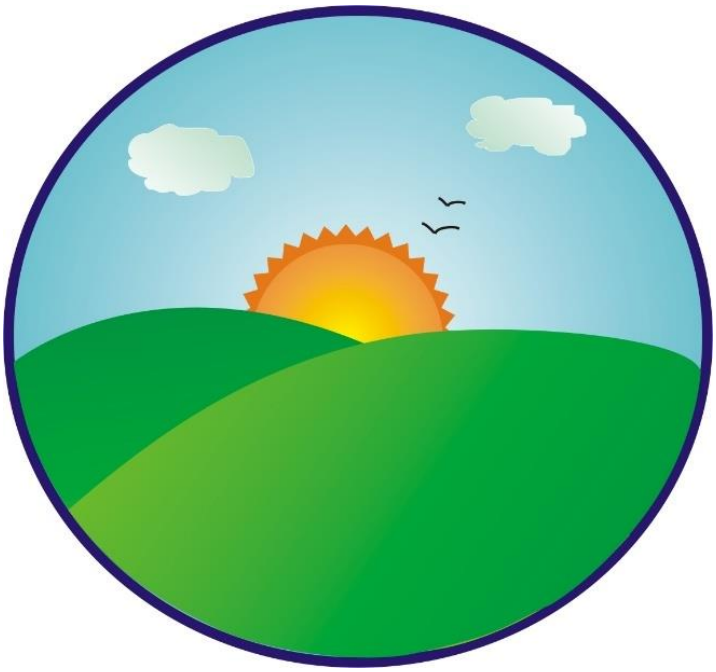

नया उदय, नया भान हो.
नव- नूतन आकाश हो.

नव-उमंग नव साधना.
नया-नया आरंभ हो.

नया स्वप्न, नव कार्य हो.
नई दीप्ति, नई पहचान हो.

नव- नूतन नव सृजन हो.
नया प्रयत्न, नया साध हो.

नव- प्रभात, नव-बेला में.
नए प्रकाश का तेज हो.

नई सोच का नया उदय.
समरसता का भान हो.

नव पथ, नव-निर्माण हो.
नव वर्ष खुशहाल हो.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

आईना झूठ नहीं बोलता

एक गाँव में छोटी सी प्यारी सी लड़की थी,उसका नाम था चंचल, वो बात-बात पर गुस्सा होती थी.उसकी माँ उसे हमेशा समझाती रहती कि 'चंचल बेटा, इतना गुस्सा करना अच्छी बात नहीं है,लेकिन फिर भी उसके स्वभाव में कोई बदलाव नहीं आया.एक दिन चंचल अपना होमवर्क करने में व्यस्त थी.उसकी टेबल पर एक सुंदर-सा खिलौना रखा हुआ था.तभी उसके छोटे भाई का हाथ उस खिलौने से टकराया और गिरने पर उसके कई टुकड़े हो गए.

अब क्या,चंचल गुस्से से बौखला उठी.उन्होंने अपने छोटे भाई को गुस्सा में जो नहीं कहना चाहिए,वह कह डाली.उसकी मानसिक स्थिति खराब हो गई. वह पढ़ना चाहती थी.लेकिन क्रोध की वजह से पढ़ नहीं पा रही थी.तभी वहाँ उसकी माँ ने एक आईना लाकर उसके सामने रख दिया.और वह छुपकर उसे देखने लगी.अब गुस्से से भरी चंचल ने अपनी शक्ल आईने में देखी,जो कि गुस्से में बहुत ही बुरी लग रही थी.अपना ऐसा बिगड़ा चेहरा देखते ही चंचल का गुस्सा छू-मंतर हो गया.कुछ देर पश्चात ही वह सामान्य हो गई.अपनी माँ को आवाज दी.तब उसकी माँ ने कहा, देखा चंचल! गुस्से में तुम्हारी शक्ल आईने में कितनी बुरी लगती है,क्योंकि आईना कभी झूठ नहीं बोलता.अब चंचल को पता चल गया था कि गुस्सा करना कितना बुरा होता है.तभी से उसने गुस्सा न करने का एक वादा अपने आप से किया और अपने छोटे भाई से क्षमा मांगी.

बच्चों इस कहानी के माध्यम से हमने समझा कि क्रोध करना मानसिक एवं शारीरिक रूप से हानिकारक है.अतः थोड़ी-थोड़ी बातों में हमें क्रोध नहीं करना चाहिए. जो भी कहना हो, शांत रूप में अपनी बातों को रखनी चाहिए.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

नन्हे खरगोश

रचनाकार- बलराम नेताम, महासमुन्द

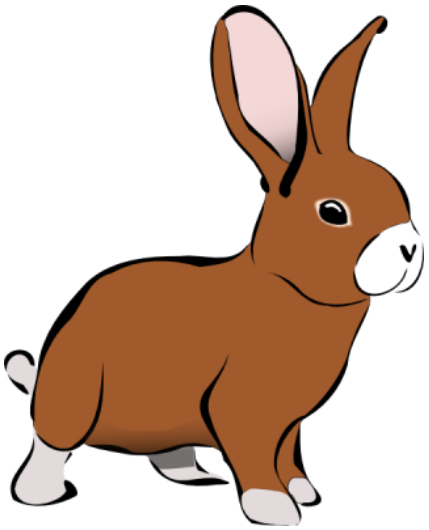

जब आंधी तूफान आया तो नन्हे खरगोश बहुत ही घबरा गया. और उसे कुछ भी नहीं रहा था.वह घर जाने को सोचा पर उनके पांव के निशान मिट चुका था. वह बहुत ही निराश हो गया उसे समझ नहीं आ रहा था क्या करे फिर अपने मम्मी पापा की बात को बार-बार याद कर रो रहा था.और मन ही मन सोच रहा था काश मुझे अपनी मम्मी पापा की बात मानकर घर से बाहर नहीं निकलना था उनका कहना मानता तो यह दिन देखना नहीं पड़ता. फिर उसने घर जाने के लिए सोचा और हिम्मत करके धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा तभी रास्ते में उसके घर में रखे हुए घास फूस जो हवा में उड़ के आए हुए थे दिखाई दिया और वह घास फूस के पीछे तरफ आगे बढ़ने लगा तभी उसे बढ़ा सा बरगद का पेड़ दिखाई दिया जो आते समय ध्यान से देखा हुआ था. अब वह निश्चित हो कर आगे बढ़ने लगा. वह सभी जगह याद आने लगा जो जाते समय देखा हुआ था.और धीरे-धीरे वह अपने घर पहुंच गया और पहुंचते ही चुपके से जाकर सो गया और जब सुबह नींद खुली तो वह झटपट उठकर अपने मम्मी पापा के गले लग गए जब मम्मी पापा ने पूछा क्या हुआ तो नन्हे खरगोश ने कहा कुछ नहीं अब मैं आज से आपकी हर बात मानूंगा. और उस दिन से नन्हे खरगोश अपने मम्मी पापा की बात मानने लगा.

*****

खरगोश और जंगल

रचनाकार- आस्था तंबोली जांजगीर

तेज आंधी से पैर के निशान मिट गए तो नन्हे खरगोश घबरा गया. वह इधर-उधर देखने लगा क्योंकि वह पहली बार ही जंगल की ओर आया था. उसे तो घर का रास्ता भी पता नहीं था. वह डर से कांपने लगा क्योंकि रात थी और जंगल में सन्नाटा था अजीब सी आवाज आ रही थी ठंड बढ़ गई थी. वह अपने आप पर गुस्सा करने लगा यदि मैं अपनी मां की बात मानकर सो गया होता तो मुझे जंगल में ऐसे भटकना नहीं पड़ता मेरे पैर के निशान भी आंधी के कारण मिट गए अब मैं घर कैसे वापस जाऊंगा. मां की बात न मानकर बहुत बड़ी गलती की है. किसी तरह से बस मुझे मेरी मां यहां से बचा कर ले जाए आगे से मैं ऐसी गलती कभी नहीं करूंगा. हमेशा मां की बात मानूंगा यह कहकर वह वहीं बैठ गया. ठंड से कांप भी रहा था. डर भी रहा था. तभी अचानक उसे मां की आवाज सुनाई दी उसकी मां घर में नन्हे को न देख कर उसे ढूंढने के लिए जंगल की ओर आई थी और आवाज लगाते हुए जंगल में इधर-उधर ढूंढ रही थी मां की आवाज सुनकर नन्हे खुश हो गया और मां की ओर भागने लगा जैसे ही मां दिखी वह अपनी मां से चिपक कर रोने लगा और बोला मां मुझे माफ कर दो मैं दोबारा आपका कहना कभी नहीं तोडूंगा. मां ने उसे समझाया बेटा इस प्रकार से घर में बिना बताए कभी नहीं आना चाहिए.अभी तुम छोटे हो इसलिए बड़ों के साथ ही निकालना. मां की बात सुनकर वह अपनी मां से लिपट गया फिर दोनों घर की ओर आ गए.

*****

हैप्पी न्यू ईयर

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

गौरी बहुत खुश थी. स्कूल से चहकती हुई घर आई. शुरू हो गयी- "मम्मी... मम्मी...! कल चौबीस तारीख से हमारी शीतकालीन छुट्टी है; मंडावी सर जी बताये हैं." आज तो वह स्कूल से आते समय छुट्टी में घूमने जाने और नया साल मनाने का प्लान बना डाली थी. कक्षा चौंथी की गौरी एकदम चंट थी, और पढ़ाई-लिखाई में नम्बर वन.

"अरे वाह ! चलो अच्छी बात है. अब घर में पढ़ना, और खेलना भी. जाओ, टंकी के पानी से हाथ-पैर धो लो." झाड़ू लगाती हुई मम्मी बोली.

गौरी बाड़ी गयी. अचानक उसकी नजर एक तोते पर पड़ी. तोता जमीन पर पड़ा तड़प रहा था. गौरी तुरंत अपने पापा को आवाज लगाई. तोते को उठाते हुए पापा बोले- "इसके डैने में चोट लगी है. तेजी से खून बह रहा है. लगता है इसे बिल्ली या नेवले ने काट लिया है. तोते को घर के अंदर ले आये.

दर्द से तड़पते हुए तोते को देख कर गौरी की आँखें डबडबा गयी. बोली- "पापा...पापा...! चलो इसे डाॅक्टर के पास ले चलते हैं. अभी हल्दी लगा दो पापा इसके घाव में; खून रुक जाएगा. एक बार आपने मेरे घाव में लगाया था जब मुझे चोट लगी थी. इसे बहुत दर्द हो रहा होगा. देखो न... कैसे बार-बार मुँह खोल रहा है." गौरी तोते को अपने हाथ से सहलाने लग गयी.

पंद्रह-बीस मिनट बाद डाॅक्टर आये. तोते के घाव को साफ पानी से धोया गया. दवाई लगाई. गौरी बड़े ध्यान से देख रही थी. घर लौटते समय डाॅक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा- "गौरी बिटिया ! इसकी अच्छी तरह केयर करना. बिल्ली, कुत्ते से इसे दूर रखना."

"जी अंकल ! मैं पूरी केयर करूँगी. बिल्ली को तो मैं घर में बिल्कुल घूसने नहीं दूँगी. अब तो इसे आनंदी कहकर पुकारूँगी." गौरी ने तोते के सर पर हाथ फेरते हुए कहा.

अब गौरी आनंदी की तिमारदारी में लग गयी. उसके पापा आनंदी के लिए एक पिंजड़ा भी ले आये थे. गौरी रोज सुबह उठती. आनंदी को बड़े प्यार से पिंजरे से बाहर निकालती. पिंजड़े को

साफ करती. आनंदी को अपने हाथों से सहलाती. कभी अपने बिस्तर पर बिठाती, तो कभी कंधे पर, तो कभी सर पर. खूब बातें करती- "अब ठीक लग रहा है न आनंदी. तू कहीं मत जाना. घर में रहना. कुत्ता तूझे दौड़ा देगा. बिल्ली काट देगी." अब तो आनंदी भी गौरी को पहचानने लग गया था. अपने घावों पर मलहम लगाते हुए गौरी को बड़ी स्नेहिल नजर से देखता था. अपनी चोंच से गौरी को छूता. उसकी मलहम लगी उंगलियों को स्वयं पोंछता. वह सिर्फ गौरी के हाथों के दिये दाल-भात और रोटी खाता था. गौरी को देखते ही वह एक अलग ही तरह की आवाज निकालता; फिर गौरी समझ जाती और उसे लाल मिर्ची खाने को देती. बड़े चाव से मिर्च खाते हुए वह बार-बार गौरी को निहारता. ज्यादा देर तक गौरी के नहीं दिखने पर, आनंदी का टें..टें शुरू हो जाता था. उसकी आवाज सुनकर गौरी कहीं भी रहती; दौड़ कर आ जाती. इस तरह गौरी और आनंदी में बड़ा ही लगाव हो गया.

आज एक जनवरी को सुबह से ही नया साल मनाने की तैयारी पूरे जोर पर थी. गौरी की प्रसन्नता दुगुनी हो गयी थी. गौरी पिंजड़े को आँगन के बाहर निकाल रही थी, तभी पापा गौरी के पास आकर बोले- "गौरी बिटिया ! अब आनंदी का घाव पूरी तरह से ठीक हो चुका है. यह बिल्कुल स्वस्थ हो गया है. गौरी, तुम जानती हो कि आनंदी एक पक्षी है, और पक्षी जंगल का रहने वाला प्राणी है. इसे अब जंगल में छोड़ आते हैं. वहाँ स्वतंत्र रहेगा और अपने साथियों के साथ अधिक खुश रहेगा. स्वतंत्रता सबको बड़ी प्यारी होती है. किसी भी जीव-जंतु को बंधन में रखना अच्छी बात नहीं है बिटिया."

अपने पापा की बात सुन कर गौरी की आँखों में पानी गया. बोली- " नहीं पापा , इसे यहीं रहने दो न पापा. मेरे साथ रहेगा; खेलेगा. मत छोड़ो न...पापा आनंदी को जंगल में. फिर इसे कोई काट देगा; कोई मार देगा." गौरी की बात सुन कर मम्मी-पापा दोनों को बड़ा दुःख हुआ. पापा बोले- "नहीं... गौरी ! जंगल का हर प्राणी अपनी रक्षा स्वयं कर लेता है. यह भी जंगल में अधिक खुश रहेगा." फिर मम्मी बोली- "हाँ बिटिया, तुम्हारे पापा सही कह रहे हैं. जंगल में तुम्हें आनंदी बहुत याद करेगा." गौरी सिसकती हुई मम्मी से लिपट गयी. जैसे भी हो , पापा ने गौरी को मनाकर आनंदी को जंगल में छोड़ दिया.

इस बार नया साल का पहला दिन गौरी को अच्छा नहीं लग रहा था. बड़ी उदास थी. किसी भी चीज में उसका मन नहीं लग रहा था. सुबह निकल गयी; दोपहर चला गया, और सिंदूरी शाम भी आ गयी. गौरी आनंदी को याद कर ही रही थी. तभी उसे लगा कि कोई उसके कंधे को पीछे से टच कर रहा है; मुड़कर देखा. गौरी खुशी से उछल पड़ी. आनंदी था. फिर उसका टें..टें..शुरू हो गया. "मेरा आनंदी...तू आ गया.... अब कहीं नहीं जाएगा तू... हैप्पी न्यू ईयर माय डियर...." गौरी आनंदी के पंखों पर हाथ फेरती जा रही थी.

दोनों को देख ऐसा लग रहा था, जैसे वे एक-दूसरे को कह रहे हैं- "हैप्पी न्यू ईयर...हैप्पी न्यू ईयर...."

*****

चालाक लोमड़ी

रचनाकार- युग उज्ज्वल पात्रे, कक्षा तीसरी, रविन्द्र भारती स्कूल मदनपुर, मुंगेली

अचानकमार जंगल में एक खतरनाक शेर था. शेर के हरकत से लोमड़ी और जंगल के सभी जानवर बहुत परेशान रहते थे.

लोमड़ी सोचने लगा क्यों न किसी उपाय से शेर को मार दिया जाए. ऐसा सोच कर लोमड़ी ने मगरमच्छ से दोस्ती कर ली.

एक दिन लोमड़ी ने शेर से कहा- जंगल के राजा आपके लिए तालाब के पास शिकार की प्रबंध किया गया है. जी भर के मांस खाना और तालाब के पानी पीना. शेर ठीक है कहकर लोमड़ी के साथ तालाब किनारे चल पड़ा. लोमड़ी के बताए अनुसार मगरमच्छ तालाब किनारे इंतजार कर रहा था. लोमड़ी ने शेर को मगरमच्छ के ऊपर बैठने कहा. जो कारपेट जैसा दिख रहा था. शेर के बैठते ही मगरमच्छ धीरे-धीरे गहरे पानी में ले गया और मारकर खा गया.

इस तरह लोमड़ी अपनी चालाकी से शेर को मार दिया. जंगल के सभी जानवर खुशी से रहने लगे.

*****

मेरा शहर बिल्हा

रचनाकार- विनय कुमार टंडन कक्षा पांचवीं , जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा, संकुल कन्या बिल्हा, जिला बिलासपुर

मेरा शहर का नाम बिल्हा है. बिल्हा नगर पंचायत है. जो कि बिलासपुर जिला के अन्तर्गत आता है. बिल्हा एशिया का सबसे बड़ा ब्लॉक है. बिल्हा बिलासपुर से 20 किमी की दूरी पर स्थित है है. हमारे शहर में हम सब एक - दूसरे की मदद करते है. हमारे शहर में बहुत सारे सरकारी स्कूल है जिसमें अच्छे से पढाई होती है. हमारे शहर में फैक्ट्री बहुत कम है. हमारे शहर में बहुत सारे पेड़ पौधे हैं. बिल्हा में सरकारी हॉस्पिटल, आईटीआई, कॉलेज, तहसील ऑफिस, थाना, रेलवे स्टेशन गेस्ट हाउस आदि हैं. मुझे बिल्हा बहुत पसंद है.

*****

कलम

रचनाकार- कु. इच्छा मानिकपुरी, कक्षा - 6वीं, शा. पूर्व माध्यमिक शाला सिल्ली, संकुल दाबो मुंगेली

कलम जीवन की राह दिखाती है
अच्छे और बुरे का फर्क बताती है
कलम सखी-सहेली दोस्त यार है.
सुरक्षा के सबसे बड़ा हथियार है.
कलम हमारी नई-नई सीख है.
सुख-दुख में प्रेरणात्मक गीत है.
जितने भी सपनें अधूरे होंगे.
कलम से आज नहीं कल पूरे होंगे.
जो भी थामते डॉक्टर इंजीनियर वकील बनते.
कलम से नई जीवन गढ़ते.

*****

बचपन की यादें

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

बचपन के वे दिन कितने सुहाने थे,
हँसते खिलखिलाते मस्ती में हम खेलते थे.

दोलन सा बाल शरीर हवा में तरंगित होता था,
पतंग के साथ मन मेरा आकाश को छूता था.

कटी पतंग के पीछे बच्चे दौड़ते रहते थे,
पतंग पाकर ज्यों बादशाह बन जाते थे.

किराये की वह साइकिल भी शानदार थी,
गुड्डे गुड्डी की वह जोड़ी बड़ी बेमिसाल थी.

बचपन के सभी खेल भी निराले होते थे,
विष अमृत खेल कर आनंदित होते थे.

खो खो का वह खेल उमंग भर देता था,
नित खेलकर भी मन तृप्त नहीं होता था.

भूली बिसरी यादें अनमोल खजाना होती हैं,
समय बीत जाने पर भुलायी नहीं जाती हैं.

*****

चन्दन क सपना

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, दुर्ग

चन्दन माँ-बाप का इकलौता वारिस था. चन्दन के पिताजी शहर में शिक्षक थे इस कारण चन्दन भी शहर में रहता पर चन्दन को शहर अच्छा नहीं लगता था. जब भी उन्हें स्कूल से छुट्टी मिलती चन्दन अपने दादा-दादी के घर गाँव चला आता. चन्दन को गाँव की मिट्टी और संस्कृति से बहुत लगाव था.

पिता जी का सपना था कि चन्दन मेरी तरह एक अच्छे शिक्षक बने. पर चन्दन का फौजी बनने का सपना था. पड़ाई करने के साथ-साथ चन्दन फौज में जाने की तैयारी करता. धीरे-धीरे चन्दन अपनी पढ़ाई पुरी कर लेता हैं. अब चन्दन दिन-रात एक कर फौजी बनने की तैयारी कर रहा था. एक दिन चन्दन तैयारी के दौरान पैर के बल अचानक गिर पढ़ता है और चन्दन एक पैर से हमेशा के लिए अपाहिज हो जाता हैं. चन्दन का फौजी बनने का सपना टूट जाता हैं. पर चन्दन हार नहीं मानता.

अब चन्दन अपने पिता जी के शिक्षक बनने के सपने को पूरा करने में लग जाता है. चन्दन अपने पढ़ाई के बल पर शिक्षक की नौकरी हासिल करने में सफल हो जाता हैं. अब चन्दन स्कूल में पढ़ाई कराने लगता हैं. छुट्टी के बाद चन्दन गाँव के युवकों का एक समिति बनाता है और उन्हें फौज में जाने के लिये तैयार करता हैं. स्कूल के पहले और स्कूल के बाद चन्दन फौज में जाने के लिए गाँव के युवकों को तैयार करता.

देखते ही देखते कुछ ही सालों में आस-पास के गाँव के हजारों युवकों का चयन इडियन आर्मी में होने लगा.

चन्दन का फौजी बनने का सपना पूरा तो नहीं हो पाया किन्तु हजारों युवकों को फौजी बनाकर अपना सपना जरूर पूरा किया.

*****

इनसान की लापरवाही और गधे की समझदारी

रचनाकार- उर्मी साहू, छठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम स्कूल, तरबहार बिलासपुर

एक समय की बात है एक गांव में रामू नाम का एक व्यक्ति हुआ करता था. रामू के साथ उसका पालतू गधा और घोड़ा रहता था. वह अपने घोड़े को बहुत आराम से रखता और गधे से दिनभर काम करवाता रहता . उसके बावजूद भी वह गधा अपने मालिक का घर छोड़ कर नहीं गया. एक रात कि बात है रामु और उसका प्रिय घोड़ा आराम से घर के अंदर सो रहा था और गधे को बाहर ठंड में कपकपाते हुए सो रहा था .कुछ देर बाद एक चोर रामू के घर अंदर घुस कर उसका समान को चोरी कर रहा था. तभी वह गधा अपने मालिक को आवाज देने लगा ढेंचू - ढेंचू कर के . उसी वक्त उसका मालिक उठ कर उसको चिलाने लगा और उसको सांत करवाने के लिए उसके लिए लाठी ले के आ ही रहा था कि उसने देखा कि उसके घर में चोर घुस कर उसका समान चुरा कर भागने की तैयारी कर रहा है, तभी रामू ने एक - दो लाठी उस चोर को मारा और उस चोर को पुलिस के हवाले कर दिया. उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने गधे को समान प्यार देना शुरू कर दिया. उस दिन से वह घोड़ा और गधे से बराबर काम करवाता और दोनो को बराबर प्यार करता . शिक्षा - हमे कभी किसी से भेद भाव नहीं करना चाहिए. हमे अपने कर्म अच्छा रखना चाहिए .

*****

समय के फेर

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

करू-करू लोगन के बोली,
मोला अब्बड़ रोवाथे.
कच्चा लकड़ी कस गुगवावत,
अंतस के पीरा सहिथव,
बैरी होगे ये दुनिया हर,
घुट-घुट के मय हा रहिथव,
कोन जनी का करम करे हव,
ये दुनिया बड़ तड़पाथे.

गोसइया हा रहिस संग मा,
रोज मिलय जेवन पानी,
छोड़ चले घर के मुखिया हर,
बिरथा लगथे जिनगानी,
ताना मारे लोगन मोला,
दुरिहा ले सब हड़काथे.

मोर जीव हा कलपत रहिथे,
अब काकर जाव दुवारी,
भीख मांग के हर दिन खाथव,
हाववं मय हा दुखियारी,
मोला आवत देख सबो झन,
फाटक झट ले ओधाथे.

भाग फूट गे मोर देवता,
कइसे तैं नियम बनाये,
जिनगी के का खेल रचे हस,
मोर समझ कुछु ना आये,
अपन शरण मा ले जा मोला,
दुनिया हा बड़ भरमाथे.

*****

जंगल में नया साल

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

मेले ठेले लग गए,जंगल में भी यार,
नए साल के जश्न से,जंगल है गुलजार,
जंगल है गुलजार,लगे हैं जम्बो झूले,
शोर मचा हर ओर,सभी अपना दुख भूले,
भालू बेचे शहद,बेचता बन्दर केले,
सबमे जोश अपार,लगे जंगल में मेले.

*****

नटखट खरगोश

रचनाकार- अनिरुद्ध जोगी, महासमुन्द

जब आंधी तूफान आया तो नन्हे खरगोश के पांव के निशान घास की वजह से दिखाई नहीं दे रहा था. नन्हे ने सोचा की तेज हवा कर रहा है आज रात यहीं रुक जाए नन्हे एक पेड़ के पास रुक गया. सुबह होने पर उसकी मम्मी पापा घर में परेशान हो रहे थे उसके मम्मी पापा ने सोचा कि नन्हे को ढूंढा जाए और उन्हें ढूंढने के लिए जंगल की तरफ चले गए नन्हे ने भी जानवरों से पूछने लगा तभी उसको एक हिरन दिखा नन्हे खरगोश ने पूछा क्या तुम मेरे घर को देखे हो हिरण ने कहा नहीं तभी उसने कबूतर से पूछा क्या तुम मेरे घर के देखे हो कबूतर ने कहा नहीं पर तुम्हारे मम्मी पापा को देखा है वह यही तुम्हें ढूंढ रहे हैं तभी नन्हे खरगोश अपने मम्मी पापा को देख लिया और उनके साथ घर चला गया और उसने अपनी मम्मी पापा के सामने कसम खाई कि आज के बाद ऐसी गलती कभी और नहीं करूंगा.

*****

हमारा तिरंगा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

भारत का अभिमान तिरंगा,
सभी दिलों का गान तिरंगा.
ऊंचे नभ पे जब लहराता,
लगता भारत शान तिरंगा.
वीर शहीदों के गुण गाता,
सारा हिन्दुस्तान तिरंगा.
सैनिक दल के लिये सदा है,
भारत का सम्मान तिरंगा.

*****

अपना भारत

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

अपना भारत सबसे न्यारा.
लगता यह प्राणों से प्यारा.

यहाँ अनेकों भाषा बोली,
बात-बात पर हँसी ठिठोली,
सबसे सुंदर सबसे न्यारा.
अपना भारत सबसे न्यारा.
लगता यह प्राणों से प्यारा.

जाति-धर्म भी यहाँ विविधता,
रीति-नीति में दिखे अधिकता,
सदा एकता का उजियारा.
अपना भारत सबसे न्यारा.
लगता यह प्राणों से प्यारा.

नित विकास के पथ पर बढ़ता,
इतिहास नवल अविरल गढ़ता,
अखिल विश्व का राजदुलारा.
अपना भारत सबसे न्यारा.
लगता यह प्राणों से प्यारा.

*****

नशा नाश की जड़ है

रचनाकार- सुप्रिया शर्मा, रायपुर

नशा नाश की जड़ है,
सुन लो प्यारे बात हमारी,
ये चक्कर घनचक्कर है.
नशा नाश की जड़ है.

शुरुआत में लगे ये प्यारा प्यारा
फिर विष घोले धीरे धीरे
ईश्वर ने दी जो स्वस्थ, सुन्दर काया
जर्जर कर दी इस नशे की लत ने
नशा नाश की जड़ है

धुआं धुआं हो गई जिंदगी,
परिवारों की बलि चढी.
पीकर जब घर आते हैं,
बच्चे छुप जाते हैं डर कर.
नशा नाश की जड़ है.

कैंसर जैसा रोग लगे,
मुख का नक्शा बदले.
फेफड़ों का करे ये नाश,
मन मस्तिष्क न रहे बस में.
नशा नाश की जड़ है.

युवा होते ताकत देश की
होश खो रहे नशे की लत में.
यौवन है आकर्षण जीवन का,
नशे ने किया है घायल सबको.
नशा नाश की जड़ है.

ध्यान योग से रहे निरोगी,
छोड़े नशे की लत को.
अपनी ताकत को पहचानो
मत झोंकों इस नशे की लत में.
नशा नाश की जड़ है.

*****

तरीका

रचनाकार- वर्षा जैन, बेमेतरा

काम करना और तरीके से करना यह मैंने बचपन से अपने पिताजी से सीखा है, तो बच्चों चलिए आज हम इसी पर आपको एक कहानी सुनाते हैं

प्रिंशु नाम का एक बहुत प्यारा बच्चा था, लेकिन एक दिन उसकी माँ उसकी कॉपी देखकर परेशान हो गई, उसने बहुत ही खराब अक्षरों में अपने होमवर्क को निपटाया था.

माँ ने जब प्रिंशु को समझाया कि, बेटा अच्छे अक्षरों में अपनी कॉपी में तुम होमवर्क करो, साफ सुथरा लिखो, तो प्रिंशु ने माँ से कहा : अरे माँ बचपन से होमवर्क करता आ रहा हूँ, हर विषय में बहुत काम रहता है आप मुझे किसी भी पाठ का कोई भी प्रश्न पूछ लो, मुझे सब आता है, फिर इससे क्या फर्क पड़ता है कि कैसी राइटिंग में होमवर्क है. ऐसा कहकर प्रिंशु बाहर खेलने चला गया.

माँ को बहुत दुख हुआ और उन्होंने प्रिंशु की हैंडराइटिंग सुधारने का जिम्मा उठाया,और सोचते सोचते उनको एक आइडिया आया.

जब प्रिंशु खेल कर वापस आया तो माँ ने उसे दूध का गिलास भर कर दिया मगर बिना शक्कर का, प्रिंशु ने यह बात मम्मी को बताई तो मम्मी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और बात टाल दी, आखिर प्रिंस को फीका दूध ही पीना पड़ा.

फिर रात के खाने में माँ ने प्रिंशु को बहुत बेस्वाद सब्जी दी, प्रिंशु को बहुत अजीब लगा, और जब उसने माँ कहा तो माँ ने बस यही कहा कि : अरे इतने सालों से रोज खाना बना रही हूँ, आगे भी बनाना है कौन परवाह करें अच्छा खाना बनाने की, चाहे तो मुझे एक दर्जन व्यंजन

बनाने की विधि पूछ लो मुझे सब आता है, अब रोज-रोज कौन स्वादिष्ट खाना पकाता रहे, जैसे तैसे निगल लो.

माँ की बात सुनकर प्रिंशु सब कुछ समझ गया कि उसकी माँ ने उसे ऐसा फीका दूध, ऐसा बेस्वाद खाना सपने में भी नहीं दिया था तो आज क्यों?

फिर उसने कुछ सोचा और चुपचाप अपना होमवर्क करने बैठ गया.

उधर माँ का मन आज बहुत दुखी था कि उन्होंने अपने बेटे को कुछ ज्यादा ही सजा दे दी, मगर रात को सोने से पहले माँ ने उसे गरम-गरम दूध दिया, और तभी प्रिंशु ने अपने होमवर्क की कॉपी माँ के आगे बढ़ा दी, माँ बहुत खुश हुई :अरे वह क्या बात है प्रिंशु कहकर माँ ने उसे को गले लगा लिया और कहा इतना परफेक्ट होमवर्क, इतनी सुंदर राइटिंग.

माँ को अब कोई फिक्र नहीं थी, वह बहुत खुश थी क्योंकि वह जो बात प्रिंशु को समझाना चाहती थी, प्रिंशु उसे अच्छी तरह से समझ चुका था.

*****

देश हमारा

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

देश हमारा है सतरंगा
शान हमारी, यही तिरंगा.

नील गगन से बातें करता.
इसे देख दुश्मन है डरता.
रक्षक इसके वीर भुजंगा.
शान हमारी, यही तिरंगा.

केसरिया है सबसे ऊपर.
शौर्य वीरता भरता तत्पर.
बोझिल को कर देता चंगा.
शान हमारी, यही तिरंगा.

श्वेत शांति ही चाहे हरदम.
साथ धैर्य के रखना दमखम.
पहले से ना करना पंगा.
शान हमारी, यही तिरंगा.

हरा रंग कहता खुशहाली.
सबको भाये ये हरियाली.
जीवनदात्री जैसे गंगा.
शान हमारी, यही तिरंगा.

देश हमारा है सतरंगा.
शान हमारी, यही तिरंगा.

*****

वंदेमातरम

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

वंदेमातरम मैं भी गाऊँ.
मान सिपाही सा मैं पाऊँ.

ड्यूटी मेरी सीमा पर हो.
ताकि सुरक्षित सबका घर हो.
नभ तक मैं झंडा लहराऊँ.
वंदेमातरम मैं भी गाऊँ.

जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो.
मानवता से नाता जोड़ो.
भाईचारा सदा बढ़ाऊँ.
वंदेमातरम मैं भी गाऊँ.

करें देश की रक्षा पहले.
हृदय शत्रु का हम से दहले..
लड़ते-लड़ते अमर कहाऊँ.
वंदेमातरम मैं भी गाऊँ.

एक सुंदर सुबह हुई

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवारीनारायण

एक प्यारी सी सुंदर सुबह हुई
रवि की सुनहरी, किरणे छाई
आसमान पर है सिंदूरी लाली
चिड़ियों ने स्वागत, गीत गाई.

धन्य-धरा यह मगन हो रही है
कण-कण में है संगीत समाई
फुल-कली अब खिलने लगे है
फुलवारी में, सौरभता है छाई.

तितली, अठखेलियाँ करती हैं
गुन-गुन-गुन सारे भौंरे गाते हैं
रस से भरे यह, फुल ललचाते
सुहानी सुबह, सबको भाते हैं.

शीतल मंद सुगंध बह रही हवा
दिशा-दिशा सुरभित हो रही है
मंत्रमुग्ध हुई है प्रकृति यह सारी
कण-कण में झनकृत हो रही है.

*****

पर्यावरण

रचनाकार- श्रीमती सावित्री साहू, रायपुर

आओ पेड़ लगाए, धरती को सजाये.
पेड़ देती औषधि और छाया,
पेड़ बिना जीवन न काया.
पेड़ो मे बनाते चिड़िया नीड,
पेड़ो से है बादल और नीर.
पेड़ो से धरती रहे हरा -भरा,
खुशहाल रहे जीवन हमारा.
पेड़ कटते, वर्षा घटते,
धरती बंजर मे बदलते.
पेड़ है धरती का श्रृंगार,
पेड़ो की रक्षा हमारा अधिकार.
पेड़ो से होती जलवायु कूल,
पेड़ काटना है हमारी भूल.
पेड़ कटे जंगल उजड़ा,
जंगल वासी किसे सुनाये अपना दुखड़ा.
आओ पेड़ लगाए, धरती को सजाये.

*****

कहानी

रचनाकार- आस्था तंबोली जांजगीर

दीपावली के त्यौहार का समय था. आस्था अपनी मां की मदद दिए जलाने में कर रही थी. साथ ही सभी को प्रसाद खिलाती एवं मां के साथ रंगोली बनाती और हमेशा कहती हमें हमेशा मिठाई खाते रहना चाहिए तभी तो हम मीठे मीठे बोल बोलेंगे ऐसा कह कर सभी से मिठाई लेती और दीपावली की बधाई देती.पूजा करने के पश्चात पटाखे जलाने के लिए सभी बाहर आए आस्था अपने घर में सबसे छोटी थी और वह बहुत चंचल थी हमेशा अधिक पटाखे लेती और अपने दोस्तों के साथ देर रात तक पटाखे जलाती कभी अनारदाना तो कभी फुलझड़ी उसका मन तो बड़े-बड़े पटाखे जलाने का होता लेकिन उसकी मां बड़े पटाखे जलाने से उसे मना कर देती वह मान भी जाती.जब भी वह पटाखे जलाती उसकी मां हमेशा साथ में रहती उन्हें देखते रहती. सभी भाई बहन मिलकर पूरे घर को दिए से सजाते रंगोली बनाते एवं आकाश दिए जलाते हमें हमेशा सावधानी पूर्वक पटाखे जलाने चाहिए पटाखे दूर में रखकर ही जलाने चाहिए.

*****

समय का उपयोग

रचनाकार- शेख कैफ, कक्षा सातवीं, स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम शाला तारबाहर

यूं न समय बर्बाद करो,
हो कोई काम तो आज करो.
समय का पहिया चलता रहता,
ना ये थकता ना ये रुकता.

अपना काम आप करो,
यूं न समय बर्बाद करो.
कठिन परिश्रम से न डरना,
जटिल मार्ग से तुम न हटना.

सारे जग पे राज करो,
यूं न समय बर्बाद करो.
इधर उधर की बातों से,
काबू में रखो जज़्बातों को.

अपने मन को शांत करो,
यूं न समय बर्बाद करो.
जीवन में कल क्या हो जाए,
इसको कोई समझ न पाए.

अपने लक्ष्य पर ध्येय करो,
यूं न समय बर्बाद करो.

*****

पहेलियां

रचनाकार- डा अलका अग्रवाल, जयपुर

1. बचपन में ही हम आ जाते
बिना हमारे कैसे खाते.
अगर रखोगे ध्यान हमारा,
जीवन भर हम साथ निभाते.

2. हवा भरो तो फूल फूल कर,
मोटा मैं हो जाता हूं.
मुझे छोड़ दो तो मैं झट से,
नभ में ही उड़ जाता हूं.

3. चमक- चमक कर नाच दिखाती,
नभ के रंगमंच पर.
गरज- गरज कर ढोल बजाता,
बादल मेरा सहचर.

4. पंख मेरे पर कभी ना उड़ता,
छत पर लटका रहता हूं.
गर्मी सबकी दूर भगाकर,

सबको ठंडक देता हूं.

5. पीला पीला और मधुर हूं,
जो देखे खा जाता.
इन्हीं गुणों से बना हुआ हूं,
सभी फलों का राजा.

उत्तर: 1.दांत, 2. गुब्बारा, 3. नभ में बिजली, 4. पंखा, 5. आम

*****

बाल पहेली

रचनाकार- डॉ. दीक्षा चौबे, दुर्ग

1. नृत्य विधा तमिलनाडु की, भरत मुनि के नाम.
अति प्राचीन रूप है इसका, मंदिर है प्रिय धाम.

2. नृत्य विधा आंध्र राज्य की, कर्नाटक संगीत.
वायलिन मृदंग साथ बजते, श्रृंगारिक है मीत.

3. एक कथा का नाटक होता, पुरुष-मंडली पास.
केरल के तट पर है उद्‌भव,नृत्य-कला अति खास.

4. कृष्ण-समर्पित नृत्य यही, करें ओडिसा-लोग.
देवदासियों की नृत्य-कला, प्रेम-भक्ति संयोग.

5. गायन तांडव लास्य मिले, मणिपुर नर्तक खास.
हाव-भाव गति युक्त नृत्य में, कृष्ण-राधिका रास.

6. गुजरात राज्य में है प्रचलित, नवरात्रि में करें नृत्य.
घेरे में रह करते नर्तन, भाव भक्ति युत कृत्य.

7. फसलों का उत्सव होता, नृत्य करें यह खास.
असम राज्य का नृत्य मनोहर, पर्व बैशाख मास.

उत्तर – 1 भरतनाट्यम 2 कुचिपुड़ी 3 कथकली 4 ओडिसी 5 मणिपुरी। 6 गरबा 7 बिहू

*****

स्ट्राबेरी

रचनाकार- डॉ.अखिलेश शर्मा , इन्दौर

लाल रंग की स्ट्राबेरी
बच्चों की है खास पसंद
खट्टा-मीठा स्वाद है इसका
कुछ विशेष इसकी सुगंध.

खूब रसीली मजेदार है
विटामिन-सी से सरोबार है
सारे जग मे पाई जाती
बड़े चाव से खाई जाती.

आइसक्रीम और मिल्क शेक मे
जेम,पेस्ट्री और केक मे
शक्तिवर्धक स्फूर्ति देती
आँखों को भी रोशनी देती.

हड्डी को भी मजबूत बनाए
त्वचा निरंतर चमकी जाए
बाज़ार मे मिलती खूब
लगे देखकर इसको भूख.

*****

गणित की पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

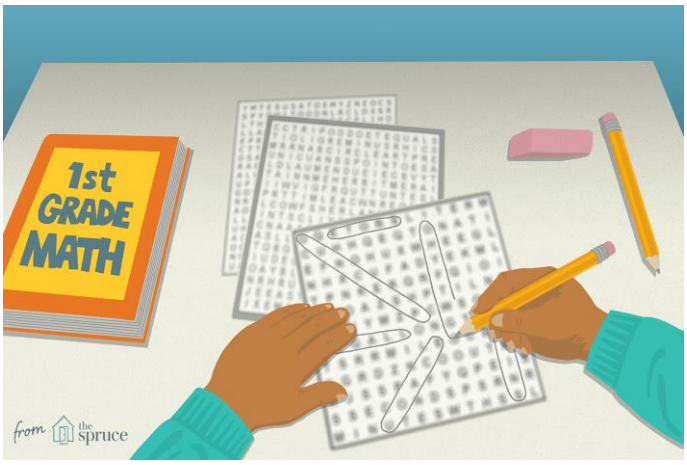

1 कहलाती 'विज्ञान की रानी'
संख्या, सूत्र, संरचनाएं भातीं.
कौन - सी ऐसी विधा है जिसमें
अंक, आकृति, मात्रा आतीं.

2 गणित की एक प्रमुख शाखा है
संख्याओं से संबंधित है.
अंकों के ही अनुप्रयोग के
अध्ययन से आच्छादित है.

3 अंक - बीजीय संरचनाओं से
बोलो गणित की शाखा कौन.
सूत्रों के हेर-फेर की कला
नाम बताओ, रहो न मौन .

4 गणित की बहुत पुरानी शाखा
इसमें आकृतियों के मोड़.
सर्वेक्षण कीजिए माप से
समझो वृत्त, रेखा, कोण.

5 प्राकृतिक संख्या, पूर्णांक अध्ययन
गणित की शाखा जानी-मानी.
अनुसंधान हित बड़ा क्षेत्र है
कहते इसको 'गणित की रानी'.

6 डेटा, समूहों के संग्रह में
प्रसंस्करण में हो उपयोग.
गणित की कौन विशेष है शाखा
समस्याओं के भगा दे रोग.

7 'राष्ट्रीय गणित दिवस' मनाते
22 दिसंबर को प्रतिवर्ष.
किस गणितज्ञ की जन्म - जयंती
दिया गणित को अति उत्कर्ष.

8 भारतीय गणित के पिता कहाए
खगोलशास्त्री बड़े महान.
विकसित की दशमलव प्रणाली
किया 'शून्य' का अनुसंधान.

उत्तर- 1 गणित 2 अंकगणित 3 बीजगणित 4 ज्यामिति 5 संख्या सिद्धांत 6 सांख्यिकी 7 श्रीनिवास रामानुजम 8 आर्यभट्ट

*****

शून्य से शिखर तक

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

लक्ष्य को पाकर दिखाना है मुझको.
जीत का परचम लहराना है मुझको.
इस दुनिया में कठिन कुछ भी नहीं,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

यदि जीवन एक खेल है तो मैं खेलूँगा.
चाहे लाख मुसीबतें आए मैं झेलूँगा.
प्रेरित होकर ध्यान लगाना है कर्म में,
असंभव को संभव करके दिखाऊँगा.

रच सकता है तो रच मेरे लिए चक्रव्यूह.
महारथियों के दल चाहे खड़े हो प्रत्यूह.
ज्ञान हासिल किया है मैंने माँ के गर्भ में,
इस बार सातवें द्वार को भेदेगा अभिमन्यु.

रह-रह कर अभी जवानी ने ली अँगड़ाई.
सुनहरे भविष्य के लिए लड़नी है लड़ाई.
अपने हाथों लिखना है मुझे नया इतिहास,
यही सही समय है, शुरू करनी है पढ़ाई.

*****

उसकी चिट्ठी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

नींद नहीं है इन रातों में,
करती छुपम–छुपाई है.
चांँद रोशनी की मिली झलक ,
है खिड़की पर दुबके से,
टिम–टिम करते इन तारों को,
झाँक रही है चुपके से,
दृश्य देख विचलित होता मन,
वह थोड़ा घबराई है,
नजर टिकाती फिर पन्नों पर,
उसकी चिट्ठी आई है.

कल–कल नदियाँ शोर मचाती,
आकर्षित कर लेती हैं,
जाकर मिलना है सागर से,
संदेशा यह देती हैं,
प्रेम पत्र पढ़ लहर दौड़ती,

देख जरा शरमाई है,
बातें करती वह खुद से ही,
उसकी चिट्ठी आई है.

लिपट गई खुद की बाँहों में,
व्याकुल आंँखें रोती हैं.
श्वाँस भरे स्याही की खुशबू,
शब्द बिखरते मोती हैं,
ठिठक गई सारी घड़ियांँ पर,
हलचल जरा मचाई है,
उमड़ रही हैं खुशियाँ मन में.
उसकी चिट्ठी आई है.

*****

खाएं खजूर

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

पोषक तत्त्वों से भरपूर.
खाएं खजूर, खाएं खजूर.

'पिनिक्स डेक्टाइलिफरा'
है वैज्ञानिक इसका नाम,
उत्तम पुष्टाहार कहाता
खांसी - जुकाम में दे आराम,

हृदय को अधिक शक्ति है देता
करता तन की जलन को दूर.

भरे प्रचुर हैं खनिज, विटामिन
घुलनशील फाइबर भी मिलता,
लाल रक्त कणिकाएं बढ़तीं
हीमोग्लोबिन रंग है खिलता,

हड्डियों को है सुदृढ़ बनाता
ठण्ड में सेवन करें जरूर.

कोलेस्ट्राल न इसमें होता
अधिक मात्रा में पौटैशियम,
करें प्रयोग हृदय के रोगी
न के बराबर मिले सोडियम,

दूध - खजूर से पेय बना लें
दे मस्तिष्क को बल भरपूर.

शीतल-मधुर, वात-कफ - नाशक
चिकना है, पचने में भारी,
इसमें गन्ने जितनी चीनी
अति स्वादिष्ट, महागुणकारी,

तरू पचास वर्षों तक दे फल
निर्धनता हो चकनाचूर.
खाएं खजूर, खाएं खजूर.

*****

जग में सबसे मिलकर रहना

रचनाकार- भूपसिंह भारती, हरियाणा

जग में सबसे मिलकर रहना.
मानो सदा बड़ों का कहना.

करो काम में खुद को लीन,
कभी नहीं होगी तौहीन,
बात बात में नहीं फहना.
जग में सबसे मिलकर रहना.

काम कभी ना टालो कल पर,
हल खोजो तुम अपने बल पर,
दुख दर्दों को सीखो सहना.
जग में सबसे मिलकर रहना.

खुद पर रखना सदा यकीन,
रहो पढ़ाई में तल्लीन,
शिक्षा ही है सच्चा गहना.
जग में सबसे मिलकर रहना.

अपनी संस्कृति को पहचानो,
मां बाप गुरु की आज्ञा मानो,
रहो प्यार से भाई बहना.
जग में सबसे मिलकर रहना.

*****

नववर्ष का स्वागत

रचनाकार- भूपसिंह भारती, हरियाणा

स्वागत स्वागत करते हैं हम.
नववर्ष का स्वागत करते है हम.

आए हमारे आँगन में खुशियां,
प्रेम ही प्रेम हो दिलों के दरमियाँ,
इनायत खुदा की रहे हरदम.
नववर्ष का स्वागत करते है हम.

बेटी बचाएं, बेटी पढाएं,
मौका समान देकर आगे बढ़ाएं,
नव वर्ष में हो, सर्वमंगलम.
नववर्ष का स्वागत करते है हम.

घर आंगन में एक पेड़ लगाएं,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं,
नववर्ष में ना हो दुखी ये जनम.
नववर्ष का स्वागत, करते है हम.

सबको अपने गले लगाएं,
जाति धर्म का भेद मिटाएं,
सपनों सा सुंदर नववर्ष हो सनम.
नववर्ष का स्वागत करते है हम.

'भारती' शिक्षा दीप जलाएं,
अज्ञान अंधेरा दूर भगाएं,
भविष्य अपना उज्ज्वल करे हम.
नववर्ष का स्वागत करते है हम.

*****

रामभक्त केवट

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को हम सदैव अन्याय,अनैतिकता अत्याचार और अधर्म की शक्तियों से युद्ध करते हुए देखते हैं. सामाजिक दृष्टि से वे समदर्शी एवं भक्तवत्सल हैं. उन्होंने निषादराज, शबरी, गीध, जटायु आदि को बड़े प्रेम से अपनाया. अहिल्या और शबरी जैसी पतित नारियों का उद्धार किया. उन्होंने पशु - पक्षियों, पिछड़े, वनवासी, आदिवासी और वंचित लोगों को भी कृपा के योग्य माना.

केवट रामायण का एक महत्वपूर्ण पात्र है, जो श्रीराम का अनन्य भक्त था. वह मल्लाह का काम करता था. यह प्रसंग उस समय का है, जब उसने वनगमन के समय राम, सीता और लक्ष्मण को अपनी नौका में बैठाकर गंगा पार कराया था. यह प्रसंग अत्यंत मनोरम एवं मार्मिक है.

महात्मा तुलसीदास जी ने इस प्रसंग का वर्णन अपनी रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में बड़ी सुंदरता से प्रस्तुत किया है.

भगवान श्रीराम, भगवती सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ गंगा के तट पर आए और पार उतारने के लिए केवट को नाव लाने के लिए कहा. केवट गंगा के किनारे अपनी नाव पर बैठा है और भलीभांति देख रहा है कि वे तीनों मूर्तियाँ सामने से आ रही हैं, फिर भी वह उठा नहीं, उनके साथ निषादराज भी हैं, किंतु अपने राजा पर भी कोई ध्यान नहीं दिया.

मांगी नाव न केवटु आना.

कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना.

चरन कमल रज कहुँ कहई.

मानुष करनि मूरि कछु अहई.

श्रीराम के नौका लाने के लिए कहने पर भी, वह नौका लाता नहीं है. वह कहता है कि मैंने आपका मर्म जान लिया है. लोग कहते हैं कि आपके चरणकमलों की धूल में कोई जड़ी है, जिसको छूते ही पत्थर मनुष्य बन जाता है. यदि मेरी नौका की यही दशा हुई तो मैं अपने परिवार का भरण-पोषण कैसे करूँगा? मैं कोई और धंधा जानता भी नहीं.

यह सब कहने में केवट का एकमात्र उद्देश्य था कि वह सर्वेश्वर के दुर्लभ चरणकमलों का स्पर्श प्राप्त कर सके, उनका प्रच्छालन करके संपूर्ण परिवार को कृतार्थ कर लेना. निश्छल केवट ने उनसे कह भी दिया -

जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू.

मोहि पद पदुम पखारन कहहू.

अर्थात प्रभो! आपको नौका से पार जाना हो, तो मुझे चरण धो लेने दीजिए, अन्यथा यहाँ से थोड़ी ही दूर पर थाह भर जल है, वहाँ से पार हो जाइए. लक्ष्मण जी भले ही मुझे तीर मारें, पर जबतक मैं पैर पखार नहीं लूँगा, तबतक हे कृपालु! मैं पार नहीं उतारूँगा.

बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं.

तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं.

केवट की भक्ति एवं उसकी प्रेममयी अटपटी वाणी सुनकर श्रीराम, जानकी और लक्ष्मण की ओर देखकर मुस्कराने लगे. यही सरलता, निश्छलता, हृदय की पवित्रता और अनूठी प्रीति तो प्रभु को प्रिय है. इसी भक्ति के बल पर ही भगवान भक्त के वश में हो जाते हैं. उन्होंने हँसकर केवट से कह दिया - 'केवट! वही करो जिससे तुम्हारी नाव भी बनी रहे और हम गंगा पार हो जाएँ, मुझे विलंब हो रहा है, जल लाकर पाद - प्रच्छालन कर लो'.

कृपासिंधु बोले मुसुकाई.

सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई.

बेग आनु जल पाय पखारू.

होत विलंबु उतारहि पारू.

यह सुनकर केवट अत्यंत प्रसन्न हो गया. अब वह दौड़ा, घरवालों को सूचना दी और एक लकड़ी के कठौते में जल ले आया. उसने अत्यंत चतुराई और सूझबूझ से पूरे परिवार और पितृगण को तारने की युक्ति खोज ली. उसने अत्यंत प्रेम से प्रभु - पदों का प्रच्छालन किया. चरणामृत को परिवार में बाँटा, सबको पिलाया, स्वयं पान किया, फिर पितृगणों को भवसागर से पार कराया, तब श्रीराम को, सीता माता और लक्ष्मण को गंगा पार ले गया.

प्रभु पार उतरे और गंगा की रेती पर खड़े हो गए. प्रभु को संकोच हुआ कि इसे कुछ पारिश्रमिक नहीं दिया. तब सीता जी ने प्रभु की मन की असमंजस भरी स्थिति भाँप ली. उन्होंने अपने हाथ की मणि की सुंदर अँगूठी उतारी और प्रभु की ओर बढ़ा दी. प्रभु ने मुस्कुराते हुए केवट से कहा - केवट! लो अपनी उतराई, ले लो '. प्रेमविह्वल होकर केवट ने अकुलाकर प्रभु के चरण पकड़ लिये, बोला- प्रभो! आज मुझे क्या नहीं मिल गया. विधाता ने कितने ही जन्मों की मजदूरी आज सब मूलधन ब्याज सहित चुकता कर दिया है. प्रभो! मैंने तो आपसे पहले ही कह दिया था कि' मैं आपसे उतराई नहीं लूँगा, क्योंकि मैं और आप एक ही काम करने वाले हैं. एक मल्लाह दूसरे मल्लाह से क्या उतराई लेता है? आज आप मेरे घाट पर आए, मैंने आपको पार उतार दिया. जब मैं आपके घाट पर आऊँ तो दयानिधान! भूलिएगा नहीं, इस संसार - सागर से पार अवश्य उतार देना.'

प्रभु ने बहुत समझाया कि केवट अपनी उतराई ले ले. सीता जी और लक्ष्मण जी ने भी भरसक प्रयास किया कि कुछ तो स्मृति - स्वरूप ही ले लो परंतु वह कुछ भी लेने के लिए तैयार नहीं हुआ.

भक्त केवट ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि - प्रभो! आपके अनुग्रह से मुझे अब कुछ नहीं चाहिए. आपने तो मुझे सबकुछ दे दिया, किंतु चतुराई से उसने यह भी कह दिया कि वापसी में आप जो कुछ मुझे देंगे, उसको मैं प्रसाद स्वरूप अवश्य ग्रहण कर लूँगा '. परम कृतार्थ श्रीरामचरणअनुरागी केवट ने प्रेम और भक्ति से प्रभु श्रीराम को प्रसन्नतापूर्वक विदा किया. परंतु केवट खाली हाथ नहीं रहा, श्रीराम ने उसे अपनी विमल भक्ति जैसी दुर्लभ वस्तु प्रदान कर दी, जिसे बड़े-बड़े ऋषि - मुनि अनेक जन्मों तक कठोर तपस्या और योग - साधना करके भी नहीं प्राप्त कर पाते.

बिदा कीन्ह करुनायतन, भगति विमल बरु देइ.

विचार करें - जीव ऐसी परिस्थिति में कब पहुँचता है, जब उसे कुछ पाने की इच्छा ही न रहे. अंततः जीवन धारण करने का लक्ष्य क्या है? परमात्मा की प्राप्ति और केवट को परमात्मा की प्राप्ति हो गई. सहज सरल भाव से प्रभु - चरणों में भक्ति - अनुरक्ति से ही प्रभु - दर्शन पाने की मनोकामना पूर्ण हो सकती है.

*****

सूरज बाबू

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह " नीहार", नई दिल्ली

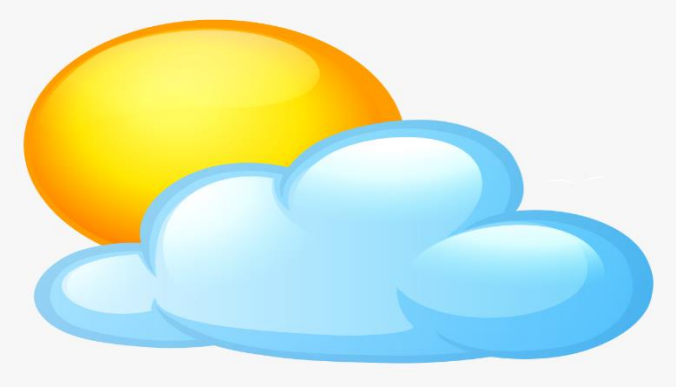

सूरज बाबू अलसाये हो,
या कोहरे से घबराये हो.
सुबह शाम में रहो नदारद,
किससे इतने शरमाये हो ?
सर्द हवा से डरते हो क्या,
चढ़ी धुंध से लड़ते हो क्या ?
टप-टप गिरें ओस की बूंदें,
गागर मटकी भरते हो क्या?
पाले से जब पड़ता पाला,
दफ्तर में लग जाता ताला.
दिनभर आसमान से गायब,
थर-थर कांपे सूरज लाला.
कभी इन्हें भी आंख दिखाओ,
तेज धूप का ज़रा बढ़ाओ.
आलस छोड़ बढ़ो अब आगे,
जग जीवन के प्राण बचाओ.

*****

FLN नारा

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

FOUNDATIONAL LITERACY AND NUMERACY

पढ़बो लिखबो जम्मों छत्तीसगढ़िया,
दुनिया म कहाबो सब ले बढ़िया.

नइ बइठन हमन ठलहा रीता,
पूरा करबो FLN के जम्मो बुता.

पढ़ लिख के जिनगी म बड़ नाम कमाबो,
FLN अभियान ल हमन आगु बड़हाबो.

FLN खोले हे शिक्षा के नवा - नवा दुवार,
लइका के मन म आवत हे नवा- नवा विचार.

सकल पढ़ाई FLN मा होही,
नइ जुड़ही ते मौका खो ही.

बरसत हे FLN म ज्ञान के भण्डार,
शिक्षा जगत के बनगे सुग्घर आधार.

सौ दिन के पठन अउ गणितीय कौशल अभियान,
आवव संगी आधारभूत शिक्षा म लगावव ध्यान.

*****

अवसर की तलाश न कर

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

जिंदगी मिलेगी न दुबारा
अवसर की तलाश न कर.
अच्छे अवसर भी आएंगे
सोंच के यूं इंतजार न कर.

यह जिंदगी बड़ी हसीन है
इसको यूं ही जाया न कर.
जी भर के जी ले इसको
यूं ही ऐसे गंवाया न कर.

जिंदगी तो हसीन ख्वाब है
इसे यूं ही न भुलाया कर.
ख्वाबों को हकीकत करले
इसको यकीन में लाया कर.
जिंदगी में करले मौज-मस्ती
जिंदादिली को हटाया न कर.

मनहुशियत क्या खाक जीते हैं
इसको दिल से न लगाया कर.

जिंदगी का नायाब नजराना है
इसे बेकारा न समाझा कर.
खुद सँवर जा दूसरों को सवाँर
इसको यूं ही गवांरा न कर.

*****

जन्मदिन

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

नन्हा मोनू सोच रहा है,
मेरा जन्मदिन कब आएगा.
माँ कहती है जाड़े में,
पापा कहते, जल्दी ही आएगा.
दादी कहती पूस महीना,
दादा कहते अंधेरी रात में.
अलग अलग है सबका कहना,
करूँ भरोसा किसकी बात में.
केक काट सब खुशी मनाते,
खूब मिठाई खाते हैं.
नये नये कपड़े पहनकर,
विद्यालय वे आते हैं.
नहीं जानता मैं जनम दिन अपना,
चुपचाप देखते रहता हूँ.
आज पता चल जाये शायद,
मैडम जी से पूछता हूँ.

*****

बन्दर का जुखाम

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

बन्दर जी को हुआ जुखाम,
नाक हो गई उनकी जाम,
घर का नुस्खा लेकर मीत,
उनको मिला नहीं आराम.

हाथी दादा ने सुझाया,
भालू डॉक्टरजी का नाम,
जब नर्स ने सुई लगाई
बन्दर जी का गया जुखाम .

*****

कोयल गीत सुनाती है

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

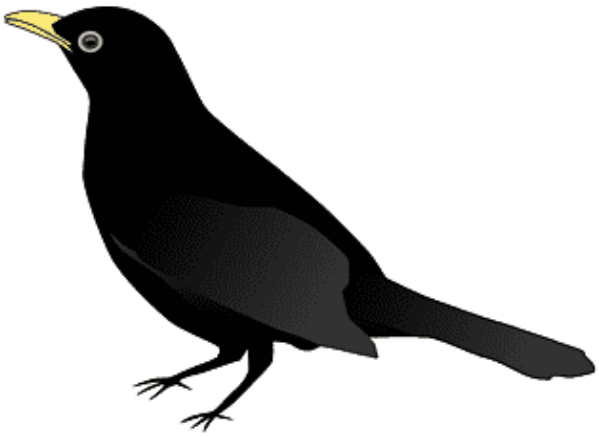

मेरे पास खिलौने हैं,
सारे खूब सलोने हैं.

चले कार फरटि से,
परी डर गई चांटे से.

भालू शहद बहुत खाता,
बदले में सेहत पाता.

बिल्ली दूध चुराती है,
अक्सर पिट के आती है.

कोयल गीत सुनाती है,
सबका मन बहलाती है.

*****

प्यारा घोड़ा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

हरी घास खाता है घोड़ा,
खाकर खूब तेज़ वो दौड़ा.

जब करता वो आनाकानी,
खाता है फिर घोड़ा कोड़ा.

रस्सी से जब उसको बाँधा,
मोटी रस्सी उसने तोड़ा.

जब जब आया मोड़ राह पे,
उसने खुद को झटपट मोड़ा.

ख़ुशी जताता हिन हिन करके,
गुस्सा होता थोड़ा थोड़ा.

मुझे घुमाता दूर दूर तक,
लगता मुझको प्यारा घोड़ा.

*****

जंगल में पिकनिक

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

आज न कहीं काम पर जाना
छुट्टी का दिन था रविवार.
आओ! चलो! मनाएँ पिकनिक
बिल्ली जी ने दिया विचार.

चूहा, चिड़िया, चींटी खुश हो
जा पहुँचे जंगल के तीर.
मौसी का सुझाव अच्छा है
मिलकर सभी पकाएँ खीर.

बिल्ली झट से दूध ले आई
चींटी ले आई चीनी.
चूहा चावल लेकर आया
चिड़िया ने लकड़ी बीनी.

सभी एक बरगद के नीचे
चीजें कर ली गयीं एकत्र.
बिल्ली ने जब खीर पकाई
खुशबू फैल गई सर्वत्र.

खीर पकी तब सबने खाई
कहा-वाह! कितनी स्वादिष्ट.
अच्छा है मिलजुल कर रहना
कोई कर न सके अनिष्ट.

*****

जीवंत गजल

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह

हाथ में लिए गजल संध्या का आमंत्रण कार्ड पढ़ कर बगल में रखते हुए अनुज ने पत्नी से कहा, "तुम्हें पता है, गजल सुनी नहीं, अनुभव की जाती है."

श्वेता ने एक फिर वह आमंत्रण कार्ड अनुज के हाथ में रखते हुए कहा, "गजल न मुझे सुननी ही है और न अनुभव ही करनी है. मुझे तो बस तुम्हारे साथ चलना है. अब यह बताओ कि तुम चलोगे या नहीं?"

दोनों विवाह के सात साल पहले एक-दूसरे के प्यार में पड़े थे और तब से अब तक दोनों के बीच एक भी काॅमन हाॅबी या इच्छा नहीं रही थी, पर प्यार इतना अधिक था कि शिकायतों के बीच से रास्ता निकाल कर आगे बढ़ते रहे. दोनों को एक-दूसरे को समय देने में हमेशा परिस्थितियां और काम के प्रति प्राथमिकता बीच में आती रही. दोनों एक-दूसरे पर गुस्सा जरूर होते, पर प्यार की वेलिडिटी इतनी अधिक थी कि कुछ भी आड़े नहीं आता था.

पिछले एक साल से दोनों की ड्यूटी अलग-अलग शिफ्ट में थी यानी एक घर आता था तो दूसरा ड्यूटी पर जाता था. रोजाना घर के फ्रिज पर रखी चिट्ठी में लिखे जाने वाले मैसेज के नीचे बनाया जाने वाला दिल का निशान ही उनका प्यार था. केवल रविवार को ही दोनों एक साथ होते थे. अब इस परिस्थिति में सप्ताह भर बाद मिलने वाले रविवार को किसी गायक को सुनने में बिताना अनुज को बहुत मुश्किल लग

रहा था. पर प्यार की एक अलिखित शर्त होती है कि कोई भी खुद की अपेक्षा सामने वाले व्यक्ति की इच्छा को समझ सकता है.

रविवार की शाम को दोनों जन खचाखच भरे हाल में जा कर बैठ गए. दो-तीन गजल गा कर माहौल बनाने की कोशिश कोई की गई. जिन्हें गजल का बहुत शौक था, उन लोगों के लिए तो कानों का जलसा शुरू हो गया था. पर अनुज के लिए सहन न हो, इस तरह का अनुभव था. दो-चार बार मोबाइल निकाल कर फेसबुक चेक करने का मन हुआ. पर वह बगल में बैठी पत्नी का मजा खराब नहीं करना चाहता था, इसलिए शांति से बैठा रहा. समझदार पत्नी को पता था कि वह उसी की वजह से यहां बैठा है. इसलिए धीरे से उसने उसके कान में कहा, "अगर तुम्हें मजा न आ रहा हो, तो बाहर जा कर घूम आओ."

अनुज तो यही चाहता था. वह हाल से निकल कर बाहर गैलरी में आ गया. दिसंबर की ठंड में वह सिगरेट निकाल कर सुलगाने जा रहा था कि उसकी नजर किसी पर पड़ी. उसने मोबाइल निकाल कर पत्नी को मैसेज किया, 'गजल देखनी हो तो बाहर आ जाओ.'

बाहर आ कर श्वेता ने सवालिया नजरों से अनुज की ओर देखा. अनुज ने सामने फुटपाथ पर इशारा किया. एक झोपड़ी के बाहर अलाव जल रहा था. अलाव के पास फटी गुदड़ी ओढ़े पति-पत्नी बैठे एक ही कटोरे में चाय पी रहे थे.

दोनों बिना कुछ कहे इस जीवंत गजल को देखते रहे.

*****

गणतंत्र

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

प्राण से प्यारा है गणतंत्र.
विश्व में न्यारा है गणतंत्र.

तिरंगा छूता है आकाश
नित्य प्रति बढ़ता सुख आभास

सुस्मृति बलिदानों की दिव्य
प्रवाहित धारा है गणतंत्र.

सुहाने स्वप्न हुए साकार
नया भारत लेता आकार

अधर पर वंदेमातरम गीत
कभी न हारा है गणतंत्र.

कोटि गण बने विधाता आप
सपूतों ने मेटे संताप

प्रेम - मानवता का प्रतिमान
अटल ध्रुवतारा है गणतंत्र.

नियत कर्तव्य, प्राप्त अधिकार
एकता 'जनगणमन' का हार

अखिल जग एक कुटुम्ब समान
अखण्डता नारा है गणतंत्र.

*****

बने विजेता वो सदा

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

जीवन में सफल होने के लिए धैर्य रखना और अपने सपनों के लिए समर्पित रूप से कड़ी मेहनत करना महत्वपूर्ण है. जीवन में कुछ भी मुफ्त नहीं है, और इसलिए हमें जीवन में बड़ी चीजें हासिल करने के लिए अपने सभी प्रयास करने और अपनी सीमाओं को चरम तक पहुंचाने की जरूरत है. इसके अलावा, असफलताएं और निराशा वास्तव में हर किसी की यात्रा का हिस्सा होती हैं, और हमें उन्हें वैसे ही स्वीकार करना चाहिए जैसे वे आती हैं. हमें हमेशा वर्तमान पर ध्यान देना चाहिए और एक बेहतर और सुखद कल बनाने के लिए इसे पूरी सावधानी और समर्पण के साथ करना चाहिए. हमें बोलना कम और काम ज्यादा करना चाहिए. यह न केवल हमें न्यूनतम संभव समय में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि हमारे महत्वपूर्ण कार्यों में निवेश करने के लिए कुछ आवश्यक ऊर्जा भी देगा.

दुनिया को केवल इस बात की परवाह है कि हम क्या करते हैं, न कि हम क्या कहते हैं कि हम क्या करेंगे. जो शब्द हम आम तौर पर कहते हैं, वे हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों की तुलना में बहुत कम महत्व रखते हैं. हमें बोलना कम और काम ज्यादा करना चाहिए. यह न केवल हमें न्यूनतम संभव समय में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि हमारे महत्वपूर्ण कार्यों में निवेश करने के लिए कुछ आवश्यक ऊर्जा भी देगा. इस तथ्य को समझना जरूरी है कि हमारे पास जो ऊर्जा है वह वास्तव में सीमित है, और इसलिए इसे बुद्धिमानी से उपयोग करना बहुत आवश्यक हो जाता है.

इस तथ्य को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि हमारे कार्य हमें परिभाषित करते हैं न कि हमारे विकल्पों को. एक विजेता हमेशा सही विचारों को अच्छे कार्यों में बदलने के तरीके खोजता है. वह अपने सपनों को देने और उन्हें हकीकत में बदलने के तरीकों की तलाश करेगा. साथ ही, याद रखें कि वास्तविकता कठिन है और इतनी सरल नहीं है जितना हम इसे मान लेते हैं. बाद में भागदौड़ से बचने के लिए हमें अपने कार्यों को पहले ही पूरा कर लेना चाहिए. अपने फैसलों को ध्यान से देखना और उनका आत्मनिरीक्षण करना भी जरूरी है.

हमारे कार्य शब्दों से ज्यादा हमारी प्रतिष्ठा और अखंडता को परिभाषित करते हैं. हम जो कहते हैं उसे करने में असफल होना और इस व्यवहार को बार-बार दोहराना हमारे चरित्र के लिए हानिकारक है जो दूसरे हमें समझते हैं. यह हमारी विश्वसनीयता को मिटा देता है. यदि हम वह नहीं करते जो हम कहते हैं कि हम करने जा रहे हैं, तो हमारी विश्वसनीयता कम हो जाती है. हमारे प्रत्येक वादे के बाद और इसे पूरा करने में विफल रहने से हमारी सत्यनिष्ठा भी कम हो जाती है. इसके बाद हमारी बातों का कोई मतलब नहीं है.

यह अविश्वास भी पैदा करता है. भरोसा छोटी-छोटी क्रियाओं पर बनाया जाता है, न कि फिल्मों के लिए बने नाटकीय पलों पर. अंत में, यह अवसर को सीमित करता है. जब हमारी टीम किए गए वादों पर भरोसा नहीं कर सकती है, तो हमारे लिए खुद को साबित करने के अवसर कम होते जाएंगे. यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं जो वादों और अपेक्षाओं को पूरा नहीं करता है, तो आपको परिणाम भुगतने होंगे. अपने शब्द का कोई बनने का प्रयास करें. खासकर जब यह एक "छोटी बात" है, तो सुनिश्चित करें कि आप इसे करते हैं. आखिरकार, यदि आप "छोटी चीज़ों" में असफल होते हैं, तो कोई भी "बड़ी चीज़ों" पर आप पर भरोसा नहीं करेगा.

इस तथ्य को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि हमारे कार्य हमें परिभाषित करते हैं न कि हमारे विकल्पों को. एक विजेता हमेशा सही विचारों को अच्छे कार्यों में बदलने के तरीके खोजता है. वह अपने सपनों को हकीकत में बदलने के तरीकों की तलाश करेगा. आप जो कहते हैं उसे लगातार करते रहना ईमानदारी की बुनियाद है.

दुनिया को केवल इस बात की परवाह है कि हम क्या करते हैं, न कि हम क्या कहते हैं कि हम क्या करेंगे. जो शब्द हम आम तौर पर कहते हैं, वे हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों की तुलना में बहुत कम महत्व रखते हैं. याद रखें कि जीवन वास्तव में एक खेल है और इसलिए हम सभी को जीतने का प्रयास करना चाहिए. असफलता

और निराशा वास्तव में हर किसी के जीवन का एक हिस्सा है और इन चीजों के बारे में अधिक सोचना बेकार है. वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करना और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करना और अतीत के बारे में भूलना अधिक महत्वपूर्ण है. याद रखें कि विजेता अलग चीजें नहीं करते हैं; वे बस अलग तरीके से करते हैं.

जीवन में सफल होने के लिए धैर्य रखना और अपने सपनों के लिए समर्पित रूप से कड़ी मेहनत करना महत्वपूर्ण है. जीवन में कुछ भी मुफ्त नहीं है, और इसलिए हमें जीवन में बड़ी चीजें हासिल करने के लिए अपने सभी प्रयास करने और अपनी सीमाओं को चरम तक पहुंचाने की जरूरत है. इसके अलावा, असफलताएं और निराशा वास्तव में हर किसी की यात्रा का हिस्सा होती हैं, और हमें उन्हें वैसे ही स्वीकार करना चाहिए जैसे वे आती हैं. हमें हमेशा वर्तमान पर ध्यान देना चाहिए और एक बेहतर और सुखद कल बनाने के लिए इसे पूरी सावधानी और समर्पण के साथ करना चाहिए. हमें बोलना कम और काम ज्यादा करना चाहिए. यह न केवल हमें न्यूनतम संभव समय में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि हमारे महत्वपूर्ण कार्यों में निवेश करने के लिए कुछ आवश्यक ऊर्जा भी देगा.

इस तथ्य को समझना जरूरी है कि हमारे पास जो ऊर्जा है वह वास्तव में सीमित है, और इसलिए इसे बुद्धिमानी से उपयोग करना बहुत आवश्यक हो जाता है. व्यक्ति को हमेशा समय की कद्र करनी चाहिए क्योंकि इसी से हमारा जीवन बना है. इसलिए जीवन में बड़ी चीजें हासिल करने के लिए हमें शुरू से ही बेसिक्स पर काम करने और अपने आधार को मजबूत करने की जरूरत है. जीवन में हमेशा याद रखिये- बने विजेता वो सदा, ऐसा मुझे यकीन. आँखों में आकाश हो, पांवों तले जमीन..

*****

भोले मन की अभिलाषा

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा

क्यो मुझे रटवाते हो पाहड़ो का पहाड़
सीखा क्यो नही देते मुझे बनाना पाहड़ो का संसार
अंग्रेजी रटवाकर करते हो मेरा बुरा हाल
बनाते क्यो नही मेरे लिए सुंदर सा एक माहौल
विज्ञान की जब बात आती, देते हो सैद्धांतिक ज्ञान
बना क्यो नही देते मेरे लिए एक प्रायोगिक विज्ञान
देते हो मुझे ईत्ता सा व्याकरण की सीख
बात तो बनती तब, जब रहती उसमे मजेदार कहानी और संगीत
इतिहास और राजनीति की बात कार्टून फिल्मो में दिखा देते,
किसी तरह से मम्मी पापा और टीचर की डांट फटकार से बचा लेते
हम छोटे बच्चों का दिमाक तो नही है बहुत ज्यादा
लेकिन माता पिता और गुरूजन कर देते है इसको आधा
करने दो कभी हमे भी जो मन करे हमारा
ऐसा करो वैसा करो कहके, दिमाक खराब करो न हमारा
खेलने दो हमे भी खिलौनो से
और सिखा दो खिलौना बनाना हमे
आखिर ये भी तो है सीखना

क्यो करते हो इससे दूर हमे
ऐसा एक संसार हो जिसमें हम स्वयं पंख पसारे
ज्ञान और विज्ञान की बाते सीखकर जगत को हम अपनी आँखो से निहारे

*****

विद्युतचालित सायकिल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

मुझे पिता जी! सायकिल ला दो
बिजली से जो चलती हो.
ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग घंटी बोले
हेड लाइट भी जलती हो.

पैर से नहीं चलाना होगा
चले सड़क पर सर - सर - सर.
समय विद्यालय पहुँचूँगा
पाँच मिनट में आऊँ घर.

घर में उसे चार्ज कर लूँगा
अधिक नहीं आएगा व्यय.
जा सकते बाजार आप भी
नहीं प्रदूषण का कुछ भय.

चलूँगा हेल्मेट नित्य लगाकर
यातायात नियम मानूँगा.
भैया - सी बाइक लेने को
बिल्कुल रार नहीं ठानूँगा.

*****

बहादुर लोमड़ी और खरगोश

रचनाकार- कु. पूनम यादव, पांचवी, शा. प्रा.शाला बरदुली, मुंगेली

एक जंगल मे चार दोस्त लोमड़ी, खरगोश, चूहा और भालू रहते थे. इनमे बहुत गहरी दोस्ती थी और सभी खुशी - खुशी एक साथ रहते थे. एक दिन चारो दोस्त खाना इक्ठ्ठा कर रहे थे , तभी चूहे को लाल मशरूम मिला. चूहे ने अपने तीनो दोस्तो से जाकर कहा कि चलो उधर बहुत से लाल मशरूम मिलेंगे. तब चारो दोस्त उस जगह पर चले गए और लाल मशरूम इक्ठ्ठा करने लगे. चारो मशरूम तोड़ने मे इतने मशगूल हो गए कि झाड़ी के पीछे बना गड्ढा उन्हे दिखाई नही दिया और चूहा उस गड्ढे मे गिर गया और उसके सारे मशरूम जमीन पर गिर कर बिखर गए चूहा बचाओ - बचाओ चिल्लाने लगा. तब तीनो दोस्त उसे बचाने के लिए क्या करे सोचने लगे. तभी लोमड़ी को वही पास की झाड़ी मे लता दिखाई दी ,उसने झट से लता को तोड़ लिया और उसे गड्ढे मे फेक दिया और चूहे से कहा - चूहा भाई तुम डरो नही , मैने जो लता नीचे फेकी है , उसे तुम कसकर पकड़ लो , हम तुम्हे धीरे-धीरे ऊपर खीच लेंगे. इस तरह से लोमड़ी और खरगोश चूहे को बाहर निकालने के लिए लता को खीचने लगे और भालू उनकी हिम्मत बढ़ाने के लिए गाना गाने लगा. सभी ने मिलकर चूहे को बाहर निकाला. चूहे ने अपने दोस्तो को धन्यवाद दिया. तब लोमड़ी , खरगोश और भालू ने कहा - इसमे धन्यवाद की क्या बात है ,ये तो हमाए फर्ज था।आखिर दोस्त ही दोस्त के काम आते है. सभी दोस्त मिलकर उस गड्ढे मे मिट्टी भर दिए कोई अन्य जानवर उसमे न गिरे। फिर चारो दोस्त हंसी - खुशी मशरूम लेकर वापस अपने घर पर आ गए.

कहानी से शिक्षा मिली- हमें मुसीबत आने पर सब्र से काम लेना चाहिए और उससे निकलने के उपाय सोचना चाहिए. घबराना नही चाहिए. हमे मुसीबत मे पड़े लोगो की मदद करनी चाहिए.

*****

हिंदी हमारी शान

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप, मुंगेली

हम हिन्द देश के वासी,
पहचान हमारी हिंदी है.
हिंदी के मस्तक पर शोभित,
देखो कैसे सजती बिंदी है.

स्वदेशी सब मिलकर अपनाओं,
क्योंकि विदेशो तक स्वदेशी पहुँचना है.
आगत भाषाओं को अपना लेने वाली,
ऐसी सरल, सहज हमारी हिंदी है.

जन- जन तक राष्ट्र चेतना भरने वाली,
हमारी प्यारी राष्ट्र भाषा हिंदी है.
सम्मान करते है हम सब इसका,
हमारी आन, बान, शान हिंदी है.

सब भाषाओं के शब्द है इसमें,

भाषाओं का पर्याय है हिंदी.
देश हमारा प्यारा हिंदुस्तान,
भाषाओं की सरताज है हिंदी.

लिपि है इसकी सुन्दर देवनागरी,
हर ध्वनि की अलग पहचान है हिंदी में.
अथक प्रयोगो व अनुभवों का निचोड़,
वैज्ञानिकता से भरपूर है हिंदी.

मशीनों (कम्प्यूटर) को भी जो अच्छी लगती,
हर किसी के अनुरूप है हिंदी.
जो कहते वही लिखते, जो लिखा वही पढ़ते.
कथनी और करनी में समरस है हिंदी.

हिन्द की पहचान है हिंदी,
हम सबका सम्मान है हिंदी.
आओ इसका और भी मान बढ़ाये,
जन- जन तक विश्व में इसे पहुंचाये.

*****

स्वयं पर कविता

रचनाकार- सृष्टी परजापती, स्कूल- स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

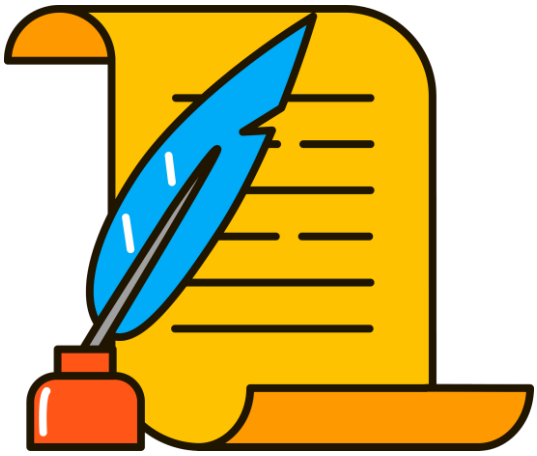

मेरे सपने मेरे अपने
मेरे सपने मेरे जीने की वजह है.
जो मै चाहती हूं वो मै कर के दिखाऊगी.
पूरी दुनिया को गर्व हो मुझ पर कुछ ऐसा कर जाऊगी.
एक दिन अपनी माँ को रानी बाप को राजा बनाऊगी.
जो कहते है तुझसे न हो पायेगा उनको कर के दिखाऊगी.
ऐसे न जीयुगी सबको जीने की वजह बताऊगी.
इतिहास मे अपना नाम रच जाऊ गी.
अभी तो करोडो की भीड मे खोई हूँ एक दिन उभर के आऊगी.
मेरे सपनो का घर देख रहा होगा मुझको उसको ज्यादा इन्तजार न करवाऊगी.
देखना जल्दी ही धमाल मचाऊगी.
मेहनत कर रही हूँ करते रहूँगी
जब तक मेरे सपने पूरे ना हो तब तक चैन से न रहूँगी.
सब कहेगे पागल मुझको इतना मेहनत करुगी.
मेरे माँ बाप को विश्वास है मुझ पर उसको कभी न तोडूँगी.

*****

युवाओं के प्रेरणाश्रोत विवेकानंद जी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

उठो जागो, और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए.

ऐसा कहने वाले युग पुरुष,हिन्दू धर्म के संचेतक, हिन्दू धर्म के रक्षक,युवाओं के प्रेरणा स्रोत युवा दिलों की धड़कन स्वामी जी को जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित है.

ऐसा मात्र शुभकामनाएँ देना पर्याप्त नही है.

यदि हम उन्हें सच्ची शुभकामनाएँ प्रेषित करना चाहते है तो हमे उनके बताए गए आदर्शों पर चलना होगा.उनके सिद्धांतों पर चलना होगा.उनके बताए गए रास्तों पर चलना होगा.

उन्होंने देश की सेवा,मानव की सेवा,दीन-हीन की सेवा, सनातन धर्म की सेवा,आध्यात्मिक चिंतन को सरोपरी बताया.और युवाओं को इसके लिए प्रेरित भी किया.

स्वामी जी ने देश की सेवा और जनजन में राष्ट्रीयता की भावना भरने हेतु हमेशा तत्पर रहे. उनका मानना था कि साम्प्रदायिकता और कट्टरता से देश का कभी भला

नही हो सकता.और वे इसका पूरजोर विरोध भी करते थे.और उनका यही उदार भावना, सहिष्णुता धर्म,राष्ट्रवाद का आधार माना जाता है.

स्वामी जी "नर की सेवा को नारायण सेवा माना करते थे."वो कहा करते थे-"नर की सेवा से ही भगवान की भक्ति,आराधना और सेवा हो जाती है."उन्होंने दीन-हीन गरीब और बीमारों की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया यही पवित्र भावना उन्हें महान बनाती है.

स्वामी जी अपने हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु गेरूवा वस्त्र और सर पर पगड़ी धारण कर हमारे देश की संस्कृति,सभ्यता और खोई हुई अस्मिता को बचाने के लिए कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक हिन्दू धर्म की पताका फहराने में कोई कोर कसर नही छोड़ा.तभी तो उन्होंने शिकागो के धर्म सम्मेलन का प्रतिनिधित्व किया.और अपना पहला सम्बोधन-"भाइयों और बहनों"कहकर पूरे विश्व से आये लोगो को चकित कर अपनी ओर आकर्षित कर लिया.यही हमारी हिंदी और हिन्दू धर्म की पहचान थी.

स्वामी जी युवाओं के प्रेरणाश्रोत और उनके दिलों की धड़कन भी रहे.तभी तो उन्होंने कहा-

उठो,जागो और तब तक आगे बढ़ते रहो जब तक तुम्हे लक्ष्य की प्राप्ति नही हो जाती.

उन्होंने देश की प्रगति,और देश के पुनरूथान में युवाओं को जिम्मेदार माना.उन्होंने युवाओं को आह्वान करते हुए कहा करते थे-

युवाओं में शक्ति है,ऊर्जा है,ताकत है,क्षमता है.युवा का दूसरा नाम वायु है.जिसमे सतत आगे बढ़ने की गति और अपार उत्साह और जोश है.

वो यह भी कहा करते थे-

युवाओं को अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेना चाहिए.और उसके लिए कमर कस के भीड़ जाना चाहिए.

स्वामी जी ने राष्ट्रीयता की भावना को जागृत किया,युवाओं को जागृत किया.युवाओं के धर्म को और उनके कर्तव्यों को जागृत किया.

स्वामी जी ने शिक्षा पर भी सारगर्भित बात कही-शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के

चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा बालक आत्मनिर्भर बने. बालक एवं बालिकाओं को समान शिक्षा दिया जाना चाहिए."

इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि स्वामी जी के बारे में जितना भी कहा जाए कम है.स्वामी जी के आदर्श सिद्धान्त और उनके विचार हमेशा प्रासंगिक हैं,और रहेंगे.जो भारत के युवाओं के लिए प्रेरणा देते रहेंगे.

*****

मेरी बातें

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

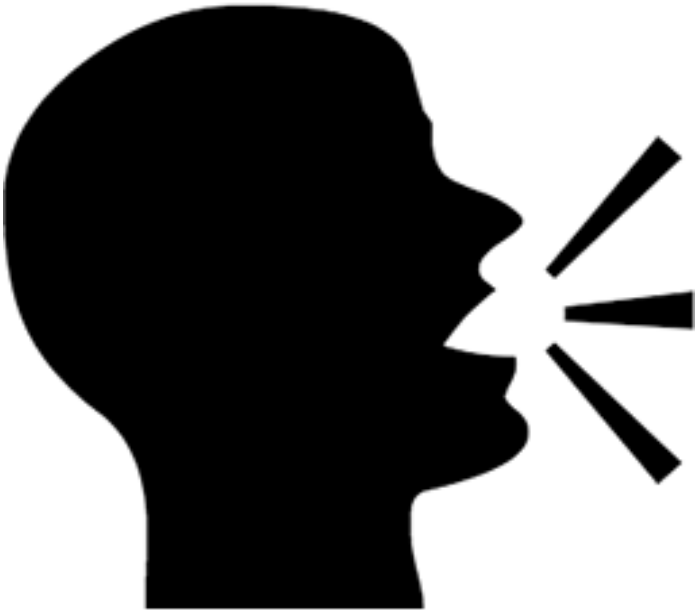

छोड़ चलो तुम अहंकार को, बनो नेक इंसान.
सदा सत्य मीठी वाणी हो, प्राप्त करो सम्मान.
आज जमाना सुंदरता का, यहीं लगाते ध्यान.
चन्द्र तेज सा मुखड़ा जिनका, खूब उन्हें अभिमान.

चार दिनों का जीवन सब का, कभी छाँव अरु धूप.
उम्र ढलेगी वृद्धावस्था, ढल जाएगा रूप.
पढ़े लिखे मानव हैं सारे, फिर भी कैसी सोच.
गोरा मुखड़ा मन को भाये, काले से संकोच.

नहीं सिखाती है संस्कृति ये, मानव करना भेद.
भाईचारा प्रेम जगाओ, पढ़ो सभी तुम वेद.
मत भागो तुम इसके पीछे, रहे कभी ना यार.
हाथ सभी मलते बैठोगे, होगा दिन बेकार.

अगर मिले जी सच्चा साथी, ग्रहण करो तुम ज्ञान.
ज्ञान बिना इस माटी तन का, नहीं बनै पहचान.
गर संस्कार नहीं जीवन में, रंग रूप बेकार.
सुनो ध्यान से मेरी बातें, खुशी मिलै भरमार.

*****

समय सबके पास होता है

रचनाकार- शिखा मसीह, कक्षा 7, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार गवर्नमेंट इंग्लिश मीडियम स्कूल, तारबाहर, बिलासपुर

समय सबके पास होता है

सबके पास 24 घंटे होते हैं
कुछ लोग समय का उपयोग अच्छे से नहीं करते हैं
हम समय का उपयोग करना सीख जाए तो हमें अपनी जिंदगी में कुछ हासिल होगा
समय बलवान होता है इंसान नहीं यह शायरी सभी के ऊपर लागू है
जो समय का कदर करता है समय उसका कदर करता है
समय को व्यर्थ में जाने दे तो हमें जिंदगी में नुकसान होगा

*****

BAD INFLUENCE

Shivedita Singh, Class - 7th, Bilaspur

Once a girl named Sita lived in a small town with her single mom.She had all good habits a child could have. Sita had only one close friend named geeta who was really good in studies and belonged to a wealthy family. In there childhood they were really close friends but as they grown up geeta grew a distance between their friendship. She used to hangout with bullies and even got into bad influence . whenever she used to meet Sita she used to yell at her for small things and bully her. Seeing this transformation in her friend Sita couldn't believe and even tried to make her understand. After sometimes it was the time of their examination and this time geeta badly failed her examinations and whereas Sita ranked top 3 in state level. On the day of result seeing her friend sad she came towards geeta and said her Dear i tried to make you understand and you didn't listen to me but i hope you don't make this mistake again and you learned from it.

*****

हौसला जिंदगी का

रचनाकार- शुभम गोयल, सातवी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबाहर, बिलासपुर

जिंदगी की जंग तुम्हे जितना होगा
हर एक मुसीबत से तुम्हे लड़ना होगा

तेरे कल सवारने को मेहनत किये तेरे अपने
हर इच्छा हर शौक को दफ़न किया और सपने
तुमको भी अपनों के,सपनो को पूरा करना होगा
आसमा को धरती पर, तुम्हे झुकाना होगा.
जिंदगी की जंग तुम्हे जितना होगा
हर एक मुसीबत से तुम्हे लड़ना होगा

सुबह कि सूरज जगा, देता है संसार को
एक छोटी सी जुगनू चिर देती है अंधकार को
फुलुओ कि कुस्भु महकती है पुरे चमन में
पर्वत सा अडिग – इरादे रखो अपने मन में

जिंदगी की जंग तुम्हे जितना होगा
हर एक मुसीबत से तुम्हे लड़ना होगा

समुंदर कि सीना चिर कर, तुम्हे मोती निकलना होगा
आत्म विश्वास तुम्हे राग राग, में दौड़ाना होगा
तक़दीर भी रूठे पर हिम्मत,ना टूटे तुम्हारे
होसले को तुम्हे आसमान, से बुलंद करना होगा.
जिंदगी की जंग तुम्हे जितना होगा
हर एक मुसीबत से तुम्हे लड़ना होगा

*****

बचपन

रचनाकार- सागर कुशवाहा, कक्षा - 7 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबाहर, बिलासपुर

एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था.
चाहत चांद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दीवाना था.

मां की कहानी थी,
परियों का फसाना था.
बारिश में कागज की नाव थी,
वह हर मौसम सुहाना था.

चैन से नहीं था, सोचते थे हम,
थककर आना स्कूल से पर,
खेलने भी जाना था.

कसरत की कश्ती थी,
पानी की धारा थी.

खेलने की मस्ती थी,
पागल दिल हमारा था.

खबर न थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था.
कहां आ गए हैं हम,
इस समझदारी के दलदल में.

वह नादान बचपन ही हमारा,
कितना प्यारा था.

*****

नारी

रचनाकार- कु. संजना मानिकपुरी, पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, मुंगेली

हमको जन्म देती है नारी
भगवान से भी बड़ी है नारी
शक्ति का अवतार है नारी
हम सबकी माँ भी है नारी
सब कुछ सहन करती है नारी
वक्त आने पर लड़ती है नारी

*****

भले इंसान

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न "सुलेखा"

एक गाँव में रामभरोस नाम का एक गरीब किसान रहता था. उसके पास केवल एक बीघा जमीन था.वह उस खेत में दिन- रात मेहनत करता था.अषाढ़ का महीना था, सभी किसान अपने -अपने खेतों में फसल बुवाई शुरू कर दिये थे. रामभरोस भी अपने खेत पर धान का बुवाई कर आया. बारिश भी अच्छी हुई और कुछ ही दिनों में फसल लहलहाने लगी. रामभरोस मन लगाकर अपने खेत में निंदाई गुड़ाई का काम करता था. फसल इस साल और भी अच्छा दिख रहा था. अचानक आसमान पर घनघोर घटाएँ घिर आई और मुसलाधार बारिश शुरू हो गई. लगातार एक दिन, दो दिन...पूरे हफ़्ते भर दिन-रात बारिश होती रही. खेत खलिहान सब पानी- पानी हो गया. बाढ़ के कारण खेतों से फसलें बह गईं. बारिश थमने के बाद रामभरोस खेत देखने गया, सारा फसल बाढ़ में बह गया था. रामभरोस की आँखों में भी बाढ़ आ गया, वह रोने लगा. झुंझलाकर वह घर लौट आया. रात हो चुकी थी, रामभरोस को नींद नहीं आ रही थी, रात भर चारपाई में लेटकर वह सोचता रहा.अब तो यहाँ दो वक़्त का रोटी जुटा पाना मेरे लिए बहुत मुश्किल हो जाएगा,यहाँ कैसे गुजर बसर होगी? जैसे-तैसे उसनें रात काटी और भिनसारे ही जाग गया. रामभरोस ने कुछ जरूरत का सामान एक गठरी में बांधा, अपने घर की टूटी हुई दरवाजा बंद किया और शहर की ओर निकल पड़ा.शहर वहाँ से लगभग बीस कोस की दूरी पर थी.शाम होने वाली थी , तभी थोड़ी ही दूरी पर उसे एक बछड़ा दिखाई दिया, उसका एक पैर कीचड़ में बुरी तरह से फँसा हुआ था. बछड़ा उसे बार - बार निकालने का प्रयास कर रहा था लेकिन निकाल नहीं पा रहा था. उसका पैर जख़्मी हो गया था और खून भी बहनें लगी थी.

रामभरोस को बछड़े पर दया आ गई, उसनें बछड़े को सहारा देकर बाहर निकाला, और बड़े ही प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा.रामभरोस पास की झाड़ियों में से कुछ पत्ते तोड़ कर लाया और पत्थर से पीसकर बछड़े के पैर में लेप लगाया. इतने में रात हो चुकी थी, रामभरोस को बहुत भूख लगी थी लेकिन इस समय उसके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था उसनें अपने गठरी में से एक मैला कुचैला पानी का बोतल निकाला बछड़े को पानी पिलाया और बचा हुआ पानी पीकर बछड़े के पास बैठकर उसका पीठ सहलाने लगा. थकावट और भूख के मारे वह गहरी नींद में सो गया.

सुबह होते ही जब उसकी आँख खुली तो बछड़ा वहाँ पर नहीं था. रामभरोस ने इधर-उधर नजरें दौड़ाई, आवाजें भी लगाई लेकिन बछड़ा कहीं भी दिखाई नही दिया.गीली मिट्टी में बछड़े के पैरों का निशान दिखाई दे रहा था.रामभरोस पैरों के निशान का पीछा करते- करते लगभग एक कोस निकल गया. वह थककर एक पेड़ के नीचे बैठकर इधर-उधर देखने लगा, तभी रामभरोस ने देखा कि बछड़ा एक टीले के ऊपर बैठकर जुगाली कर रहा है.रामभरोस दौड़कर उसके पास गया और उसे गले लगा लिया ,उसके आँखों से आँसू बहने लगे.बछड़ा उसे कृतज्ञता से देखने लगा और खड़े हो गया. रामभरोस का आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जहाँ बछड़ा बैठा था उसके नीचे अशर्फियों से भरा एक घड़ा दिखाई देने लगा, रामभरोस ने उन अशर्फियों को हाथ भी नही लगाया और दो कदम पीछे हट गया. वह बछड़े को इधर- उधर देखने लगा लेकिन बछड़ा वहाँ से गायब हो चुका था.तभी आसमान से ये आवाज आई कि रामभरोस, तुम बहुत ही दयालु, ईमानदार और भले आदमी हो.यह धन तुम्हारे लिए है जाओ इसका उपभोग करो. रामभरोस को समझ में आ गया कि वह बछड़ा एक दैवीय बछड़ा था.उसने धन से भरा घड़ा निकाला और गठरी में रखे धोती से कसकर बांध लिया.

रामभरोस धन लेकर गाँव वापस आ जाता है और खुशी खुशी जीवन व्यतीत करने लगता है.

*****

दोस्त की मदद

रचनाकार- संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली

शहर के कुछ ही दूर में एक बहुत बड़ा जंगल था.वहाँअनेक प्रकार के जीव जंतु रहते थे.जहाँ भालू,खरगोश,लोमड़ी एवं चूहा सभी जानवरों से अलग रहते थे.चारों में एक दूसरे के प्रति अटूट प्रेम था.वे सब जहाँ भी जाते,चारो एक साथ रहते और मौज मस्ती करते थे. चारों दोस्त में से चूहा नटखट एवं चंचल प्रवृति का था.

उस जंगल में हर वर्ष की तरह,इस वर्ष भी मानव जाति ने नए वर्ष में पिकनिक मनाने आए हुए लोगों को सभी ने देखा. उनके द्वारा खेल खेलना,पेड़ से कूदना,झूला झूलना,पेड़ पर चढ़ना,तालाब में तैरना,रखे हुए खाद्य सामग्री को एक साथ बैठकर मौज-मस्ती करते हुए खाना आदि गतिविधियों को देखकर चारों साथी खुश थे. उसे देखकर उन लोगों को भी इच्छा हुई कि हम लोग भी इन्हीं लोगों की तरह कल पास के दूसरे जंगल में जाकर पिकनिक मनाएंगे.

अगले दिन प्रातःसभी ने अपनी सुविधा अनुसार खाने-पीने की चीजें, खेलने की सामग्री एवं अन्य जरूरी वस्तुएं की व्यवस्था कर पास के जंगल में चले गए.चुकि चूहा बहुत ही नटखट एवं शैतान था.इस कारण भालू , खरगोश और लोमड़ी ने चूहा को समझाया कि नए स्थान पर जा रहे हैं.वहाँ इस जंगल की भांति ज्यादा शैतानी नहीं करना है. उन्होंने हाँ कहते हुए खेलना- कूदना प्रारंभ कर दिया.सभी साथी ने भी अपने-अपने इच्छा अनुसार खेल खेलते हुए मौज मस्ती किया और पिकनिक का आनंद उठाया.

कुछ क्षण पश्चात देखा कि चूहा गायब है.सभी ने चारों ओर उसे ढूंढने की कोशिश किया पर वह कहीं नजर नहीं आया. अचानक सभी ने पेड़ के ऊपर को देखा -ये क्या? पास में ही एक छोटा सा तालाब था जिसके किनारे पेड़ पर चढ़कर चूहा उस तालाब में छलांग लगा दिया. सभी ने दौड़ते हुए तालाब के पास गया. वहाँ देखा कि चूहा पानी में जाते ही डर गया, उसे तैरना नहीं आता था.उन्होंने बचाओ-बचाओ की आवाज लगाया.तालाब छोटा था लेकिन बहुत ही गहरा होने के कारण किसी का हिम्मत नहीं हुआ कि उसे निकाल सके.तभी लोमड़ी ने अपने दोस्त चूहा की मदद करने के लिए उपाय सोचा.उसकी चलाकी काम आई.पास में ही एक छड़ी था उसे तालाब में फेंककर,चूहा को पकड़ने कहा और धीरे-धीरे उस छड़ी को लोमड़ी और खरगोश ने खींचा. चूहा बाहर आकर वह जोर-जोर से रोते हुए कहने लगा.अगर आप लोग मुझे नहीं निकालते तो मेरी मृत्यु निश्चित था. मैंने सोचा कि मानव जाति के लोग पिकनिक मनाने आते हैं.उनके बच्चे भी ऐसे ही पेड़ पर चढ़कर छलांग लगाते हैं.यही सोच कर मैं भी उसका नकल किया. आप सब मुझे क्षमा कर दो.आप लोगों के मना करने के बाद भी मैंने शैतानी किया.

तभी उसके साथी भालू ने कहा-"चूहा भाई,हमें दूसरे की नकल सोच समझकर करनी चाहिए.अच्छी चीजों की नकल करें.जहाँ हमारे जान को खतरा है,वहाँ किसी की नकल नहीं करनी चाहिए.कहीं भी अनजाने जगह पर जा रहे हैं तो जगह के बारे में अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए.ताकि कोई दुर्घटना की स्थिति ना रहे.चारों साथी भगवान की शुक्रिया करते हुए,लाए हुए फल को एक साथ बैठकर खाते हैं.तत्पश्चात वह अपने जंगल में चले जाते हैं.

बच्चों इस कहानी से हमने समझा कि चूहा की तरह ज्यादा शैतानी नहीं करना चाहिए और ना ही दूसरों का नकल करना चाहिए.समाचार के माध्यम से आप सब लोगों को जानकारी प्राप्त होता होगा कि पिकनिक मनाने गए बच्चे बांध या तालाब में डूब गया और उसकी मृत्यु हो गई.ऐसा इस कारण होता है कि हमें तैरना आता नहीं और ना ही उस जगह के बारे में पूरी जानकारी होती है.जिसके कारण इस प्रकार की दुर्घटना आए दिन होती रहती है. हम कहीं भी पिकनिक में जाते हैं तो हमें अपने पालक या शिक्षक के निर्देशन में ही कार्य करना चाहिए. साथ ही इस कहानी से हमें जानकारी प्राप्त होती है कि लोमड़ी और खरगोश की तरह विपत्ति आने पर अपने दोस्त की मदद करनी चाहिए.

*****

एक घमंडी हाथी और चींटी

रचनाकार- संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली

चींटी ठंड से कांपने लगी. उसके घर को अपने पैरों से मसलते हुए हाथी आगे निकल गया.उसके इस हाल को देखकर पेड़ पर बैठे हुए तोते उसके पास आकर कहा-" चींटी बहन,यह हाथी को अपनी ताकत का बहुत घमंड है.जंगल में रहने वाले सभी जानवर को परेशान करता है.हम सबको मिलकर इसको सबक सिखाने का तरकीब निकालना चाहिए." तब चींटी ने कहा-" तुम ठीक कहते हो तोता भाई, मेरे पास इसको सबक सिखाने के लिए एक तरीका है.पास में ही एक कुआं है.इसे टहनियों एवं पत्तों से ढंक देते हैं. हाथी रोज इसी रास्ते से नदी में पानी पीने आता है.वह मेरा घर समझकर तोड़ने की कोशिश करेगा और वह कुआं में निश्चित ही गिर जाएगा. हम अपने इस कार्य में सफल हो जाएंगे."

योजना अनुसार तोते अपनी चोंच से टहनियों एवं पत्तों से कुएं को ढकता है और चींटियाँ कुएं के चारों ओर मिट्टी इकट्ठा कर अपना घर जैसा स्वरूप देता है.

अगले दिन रोज की तरह हाथी नदी में पानी पीने के लिए आता है.रास्ते में बने हुए कुएं पर बने हुए चींटी के घर को देखकर गुस्सा से हाथी चींटी को कहता है- चींटी!तुमने अच्छा नहीं किया मेरे आने-जाने के रास्ते पर घर बनाकर मुझसे दुश्मनी किया है.मैं तुम्हारे घर को अभी अपने पैरों से कुचल देता हूँ.जैसे ही घर को पैरों से दबाता है वैसे ही हाथी धड़ाम से कुआं में गिर जाता है.हाथी को क्रोध के आवेश में आकर उसे यह भी पता नहीं रहता कि उस रास्ते में वहाँ पर कुआं था.जैसे ही हाथी कुआं में गिरता है तब उसे होस आता है कि यहां कुआं था.वह अपने मन ही मन सोचता है-मुझे अपने शरीर और अपनी ताकत का बहुत घमंड था.जिसकी वजह से मुझे अपने कर्म का फल भोगना पड़ा. हाथी समझ जाता है कि यह कार्य चींटी और

तोते ने मुझे सबक सिखाने के लिए किया है. उन्होंने अपने किए कार्य पर शर्मिंदा होते हैं.चींटी और तोते से क्षमा मांगता है और निकालने के लिए उससे प्रार्थना करता है.तोते और चींटी को उन पर दया आ जाती है.कुआं के पास बैठकर तोता आने जाने वाले राहगीरों को देखकर जोर-जोर से आवाज करता है.उसकी आवाज को सुनकर राहगीर वहाॅं पहुॅंच जाते हैं. राहगीर कुएं में गिरे हुए हाथी को देखकर उसे बाहर निकालते हैं.

हाथी अपने किए पर शर्मिंदा होते हैं और जंगल में रहने वाले सभी जानवर से क्षमा मांगते हैं.उसको सभी लोग क्षमा कर देते हैं. अब जंगल में रहने वाले सभी जानवर एक परिवार की तरह खुशी-खुशी से जीवन व्यतीत करते हैं.

बच्चों हमने इस कहानी के माध्यम से समझा कि हाथी की तरह किसी को भी कमजोर या छोटा नहीं समझना चाहिए और चींटी और तोते की तरह मिलकर कार्य करने से बड़ा से बड़ा कार्य भी पूरा हो जाता है.यदि किसी से जाने अनजाने में गलती हो जाती है तो उसे एक बार सुधरने का अवसर जरूर देना चाहिए.

*****

घमंडी हाथी और चींटी

रचनाकार- दर्श नागरालय, अरुणाचल प्रदेश

एक दिन एक कुत्ता रास्ते में गन्ना चूस रहा था. उसे बहुत दिनों के बाद गन्ना चूसने को मिला था. हाथी को यह देखकर शरारत करने को सूझी. उसने अपने सूंड में कीचड़ भर लिया और कुत्ते पर डाल दिया. इसके बाद उस गन्ने को हाथी ने कुत्ते से ले लिया. गन्ना लेकर हाथी ने खा लिया. यह देखकर कुत्ता उदास होकर चला गया.

दूसरे दिन हाथी को एक चिड़िया दिखाई दी. हाथी उसके पास गया और बोला कि तुम मुझे प्रणाम करो. पर चिड़िया ने कहा, "क्यों? प्रणाम करूं!"

इस बात पर हाथी को गुस्सा आ गया. वह गुस्से में चिड़िया को मारने के लिए दौड़ा. हाथी का पैर फिसला और वह गड्ढे में जा गिरा. उसकी सूंड झाड़ी में फंस गई. हाथी दर्द से कराहने लगा.

अतः ठीक ही कहा गया है कि अपने बल के ऊपर या ताकत के ऊपर घमंड नहीं करना चाहिए.

*****

मनुष्य

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह

मनुष्य रंग बदलता मनुष्य,
ढ़ंग बदलता मनुष्य.
चाल बदलता मनुष्य,
ढ़ाल बदलता मनुष्य.

पल में फिरता मनुष्य,
पल में विफरता मनुष्य.
संग छोड़ता मनुष्य,
व्यंग बोलता मनुष्य.

तंग करता मनुष्य,
दंग करता मनुष्य.
सत्संग करता मनुष्य,
तब भी छल करता मनुष्य.

हालचाल पूछता मनुष्य,
बदहाल करता मनुष्य.
ऊपर उठता मनुष्य,
नीचे गिरता मनुष्य.

हक हड़पता मनुष्य,
लाज लूटता मनुष्य.
स्वार्थ साधता मनुष्य,
नियम लादता मनुष्य.

*****

युवाओं के प्रेरणास्रोत- स्वामी विवेकानंद

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर", महासमुंद

दिव्य सोच साधना से अपनी,पावन ज्ञान का दीप जलाया.
सोए लोगों की आत्मा को,स्वामी जी ने पहली बार जगाया.
भगवा हिंदुत्व का संदेश सुनाकर,भारत को विश्वगुरू बनाया.
तंद्रा में सोई दुनिया के लोगों को,विश्वश्रेष्ठ विवेकपुंज ने जगाया.

11 सितंबर1893 को शिकागो में हिंदुत्व का ध्वज फहराया.
संभव की सीमा से परे,असंभव को भी कर दिखलाया.
समता,ममता से परहित परोपकार का मंत्र जो बतलाया.
रूको न जब तक लक्ष्य न पाओ का प्रेरणा पुंज फैलाया.

प्रेम योग से भक्ति योग के सफर को जीना सिखलाया.
नव भारत के स्वप्नद्दष्टा,इंसानियत का पाठ है पढ़ाया.
ज्ञान,भक्ति,त्याग,तप साधना समर्पण से ही बाल नरेंद्र.
आत्मज्ञानी,विश्वश्रेष्ठ विवेकपुंज स्वामी विवेकानंद कहलाया.

12जनवरी 1863 मकर संक्रांति के दिन कलकत्ता में जन्मे विवेकानंद.
पिता विश्वनाथ दत्त व माँ भुवनेश्वरी देवी को दिव्यशक्ति ने किया आनंद.
भगवा वसन,भगवा साफा,लाल रंग के कपड़े का था उनका कमरबंद.
भारतीयता का उदघोषक,आत्मविश्वास से जीने वाला फैलाता सुगंध.

चेहरे पर आकाश की थी व्याप्ति,हृदय में सिंधु सी अतल गहराई थी.
कदमों में प्रकृति सी अपरिमित गति,मृगनयनों से दिव्यता दिखलाई थी.
व्यक्तित्व में कठिन तप की ऊष्मा,मंजी देह से झरता था संयम का अनुनाद.
दृढ़ प्रतिज्ञ सन्यासी ने भारत को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करने की बीड़ा उठाई थी.

तार्किक ओजस्वी वाणी इनकी प्रतिभा मेधा का सबने लोहा माना.
भाई बहन के संबोधन से शुरू होता वक्तव्य जग ने पहली बार जाना.
सनातन धर्म की संस्कृति विरासत को विश्व ने पहली बार पहचाना.
विवेकानंद की वाणी से गूँज उठा शिकागो धर्मसभा का कोना कोना.

*****

चलो मदारी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

चलो मदारी खेल दिखाओ,
सब बच्चों का मन बहलाओ.

कहाँ छुपाया काला भालू,
उसको भी तो पास बुलाओ.

बन्दर और बंदरिया वाला,
खेल अनोखे चलो दिखाओ.

हम सब लाएं हैं कुछ पैसे,
खेल दिखाओ पैसे पाओ.

सरकारें कहती हैं भैया,
पशु पक्षी को नहीं सताओ.

बोल मदारी चला गया है ,
बच्चों अब तुम भी घर जाओ.

*****

ख़ुशी मनाओ जी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

हर दिन ख़ुशी मनाओ जी,
जीवन सफल बनाओ जी,
राहों के अवरोधों को,
झटपट दूर हटाओ जी.

ये जीवन इक मेला है,
इसमें बहुत झमेला है,
जीवन को आसान करो,
मस्ती मौज मनाओ जी.

धीरज से आगे बढ़ना,
प्रगति की सीधी चढ़ना,
अव्वल आने की खातिर,
पढ़ लिख आगे आओजी.

*****

गीत सुनाती

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

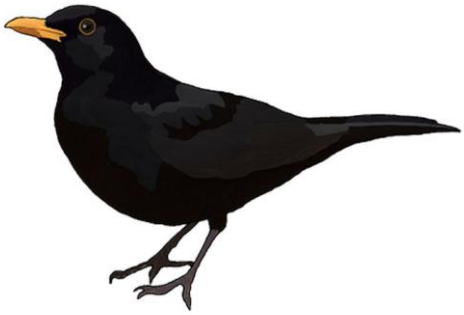

वन में सब पे प्रीत लुटाती,
मीठे सुर में कोयल गाती.

महकी महकी हवा चले तो,
कोयल खुशियों से इठलाती.

तितली देख बहुत खुश होती,
कोयल उसको गीत सुनाती.

देख गुलाब चमेली गेंदा,
कोयल रानी खुश हो जाती.

नीम पेड़ में छुप के कोयल,
कुहू कुहू का शोर मचाती.

*****

प्यारा चम्मच

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

छूरी कांटे वाला चम्मच,
खूब खिलाता दावत चम्मच.

हलवा हो या खीर कटोरी,
खूब खिलाता प्यारा चम्मच.

चावल दाल मजे से खाते,
अगर साथ में होता चम्मच.

रसगुल्ला हो या हो चमचम,
पहले हाजिर होता चम्मच.

बिन चम्मच लगता है सूना,
भोजन में जब खोता चम्मच.

*****

परीक्षा

रचनाकार- संतोष कुमार कर्ष, कोरबा

चलो पढ़ते हैं
परीक्षा है करीब
अभी भी समय है
कुछ करते हैं
चलो पढ़ते हैं
हिंदी समझते हैं
गणित अभ्यास करते हैं
इंग्लिश को रटकर
विज्ञान पढ़कर
खेलने निकलते हैं
चलो जल्दी से
हम सब पढ़ते हैं
जल्दी सो कर जल्दी उठते हैं
चलो मित्रों पढ़ते हैं

*****

गीताली और गिल्लू

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी

मास्टर जी की लाडली बिटिया गीताली सुंदर सुशील अपनी मम्मी के जैसे ही थी. गीताली सुबह जल्दी उठकर अपने पापा के साथ टहलने जाती मैदान का एक चक्कर लगाकर वापस आती और अपना होम वर्क करती .गीताली के तैयार होने तक मम्मी उसके लिए रोटी बनाती . गिताली रोज चार रोटी लेकर स्कूल जाती और खाना छुट्टी में अपने दोस्त परी के साथ स्कूल के गार्डन में अशोक पेड़ के नीचे टीपिन करती.

एक दिन गीताली की नजर अशोक पेड़ के नीचे उछल-कूद करती हुई गिलहरी पर पढ़ती है. गीताली को गिलहरी बहुत अच्छी लगती है और उसे पकड़ने की कोशिश करती है पर गिलहरी झट से पेड़ पर चढ़ जाती है .

स्कूल की छुट्टी होने पर गीताली घर आती है और अपने ड्राइंग बुक में गिलहरी की सुंदर स ड्राइंग बनाती है और उसका नाम " ,गिल्लू " रखती है .

अब गिताली रोज स्कूल जाती और खाना छुट्टी में एक रोटी गिल्लू को भी दे देती . एक दिन गिताली गिल्लू को रोटी देना भूल जाती है तब गिल्लू उछल कूद करते हुए गीताली के पास आती है. गीताली गिल्लू को रोटी देती है और उसे पकड़कर घर ले आती है. अब गीताली गिल्लू के साथ खेलती और उसे खाना दाना देती .

पर मम्मी को यह सब अच्छा नही लग रहा था .एक दिन गीताली की मम्मी गीताली को बिना बताये अपने मायका चली जाती है. गिताली जब स्कूल से घर आती है तब वह घर मे मम्मी को नही देख रोने लगती है और उन्हे मम्मी की बहुत याद आने लगती है.

दो दिन बाद मम्मी मायका से घर आती है. मम्मी को घर में देख गीताली बहुत खुश हो जाती है .गीताली मम्मी से कहती है मम्मी आप मुझे बिना बताये और अकेली क्यों चली गई थी. आपके बिना मुझे अच्छी नही लग रही थी मुझे रोना आ रहा था .

तब मम्मी कहती है तुमने जो गिल्लू गिलहरी को उनके मम्मी पापा से दूर अकेले ले आई हो क्या उन्हें अच्छा लग रहा होगा! उन्हें भी अपने मम्मी-पापा की याद आती होगी ना ! गीताली को मम्मी की बातें समझ मे आने लगी और गिल्लू गिलहरी को अपने घर ले आने की जो भूल की थी. उनका एहसास उन्हें होने लगा था.

अगले ही दिन गीताली गिल्लू गिलहरी को उनके घर अशोक पेड़ के पास जैसे ही छोड़ती है गिल्लू गिलहरी फिर से उछल-कूद करने लगती है. और पेड़ पर चढ़ जाती है. यह दृश्य देख गीताली बहुत खुश हो जाती है.

*****

यूँ ही नही मिलती मंजिल

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, दुर्ग

यूँ ही नही मिलती मंजिल
चलना पढ़ता है..
कोशिशें बार-बार करना पढ़ता है,
सपनों को साथ लिए,जोश और जुनून लिए
चलना पढ़ता है...!!
मेहनत दिन-रात कर, लक्ष्य के मार्ग पर..
चलना पढ़ता है..!!
यूँ ही नहीं मिलती मंजिल चलना पड़ता है..!!
कांटो भरी राहों में ,संघर्ष की मैदानों में ..!
चलना पढ़ता है...!!
सुख चैन का त्याग कर,हौसलो का दामन थाम कर..!
चलना पढ़ता है..!!
यूँ ही नहीं मिलती मंजिल चलना पड़ता है..!!
लोगों से लड़कर,राहें अपनी गड़कर.
चलना पढ़ता है...!!
जीत का जूनून लिए,हार कर भी जीत के लिए..!
लड़ना पढ़ता है...!!
यूँ ही नहीं मिलती मंजिल चलना पड़ता है..!!

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, दुर्ग

1. सर्दी में मेरे पास सब आए
गर्मी में मुझे कोई न भाए
"सू" से मेरा नाम है आता
बतलाओ मैं क्या कहलाता

2. एक फूल,सौ फल लगते है
फल में बीज नहीं रहते है
"के"से उनका नाम है आता
बतलाओं वह क्या कहलाता..?

3. पानी में हरदम रहती वह
जल की रानी कहलाती वह
"म" से उनका नाम है आता
बतलाओं वह क्या कहलाता

4. शेर नहीं,पर दिखती वैसी वो
हम सब की है मौसी वो
“बि “से उनका नाम है आता
बतलाओं वह क्या कहलाता

1.सूरज,2.केला,3.मछली,4.बिल्ली

*****

एक अनोखी दोस्ती

रचनाकार- रेणुका अग्रवाल

है तेरी मेरी दोस्ती बड़ी ही प्यारी
मैं कोरा कागज और तू कलम है न्यारी
खाली मेरा कोई वजूद नहीं
तेरे जैसा दोस्त मेरा, कोई और नहीं
लिख देती हो जब तुम इन पर प्यार से
मशहूर हो जाता हूं दुनिया में किताब के नाम से
तुमने कितने रंग है मुझमें भर दिए
ना जाने कितने फसाने कितने जंग लिख दिए
जब देखता हूं अपने को
तो फक्र तुम पर होता है
अगर तुम ना होती
तो मेरा वजूद कुछ ना होता
कोरा कागज ,कोरा ही रहता
कोरा कागज ,कोरा ही रहता

*****

मेरा, भारतवर्ष महान है

रचनाकार- संजय चन्द्राकर, दुर्ग

तीन रंग से बना तिरंगा,
मेरे भारत की पहचान है.
जिसमें भारत का गौरव है,
और माटी का यशगान है.
ऊपर के केसरिया रंग में,
जोश, उमंग व त्याग है.
मध्य के श्वेत पट्टिका में,
शांति और अनुराग है.
हरी पट्टिका नीचे,जिसमें
हरियाली और खुशहाली है.
मध्य में अंकित अशोक चक्र,
जो नित प्रेरित करने वाली है.
त्याग शांति व खुशहाली का
मेरा भारतवर्ष महान है.

*****

मंजिल का ताला कैसे मैं खोलू

रचनाकार- आदित्य बघेल, कक्षा-आठवीं, शास.पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, मुंगेली

कठिन परिश्रम करता हूँ,
सफलता के लिए मरता हूँ.
मंजिल का कोई पता नहीं?
फिर भी मैं न जाने किस राह चलता हूँ,
चलते-चलते पैरों पर छाला पड़ गया,
मैं अपने बनाए हुए रास्ते में चला गया.
आस-पास के पड़ोसी भी मुझे कहते थे,
क्या तुम करके दिखाओगे?
मैंने मंजिल के चाॅबी के लिए कठिन परिश्रम किया,
अन्त में मैंने पढ़कर मंजिल का ताला खोल दिया.

*****

मेरी पाठशाला

रचनाकार- श्रीमती सुनीता साहू, कानाकोट

मेरी पाठशाला में,
शिक्षक है पांच.
रोज है करते,
कक्षा कार्य की जांच .
प्रथम कालखंड में करते,
हम हिंदी की पढ़ाई.

वर्ण और मात्रा की,
है मैडम ने ग्रीड बनाई.
दूसरा कालखंड है,
गणित का आया .
खेल खेल में हमे,
अंको का ज्ञान कराया.

अंग्रेजी के कालखंड में,

साहू सर जी है आते.
काफ़ी कप की मदद से,
नए नए शब्द बनवाते.
पर्यावरण विषय की,
शुरू हुई पढ़ाई.

अभी धूप थी,
यह छांव कहा से आई.
मैडम जी ने यह,
बात हमे समझाई.
मौसम में बदलाव,
हमेशा होता रहता भाई.

*****

मेरा सबसे प्यारा तिरंगा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

मेरा सबसे प्यारा तिरंगा
भारत की शान बढ़ाता है
सबसे ऊँचा, न्यारा तिरंगा
आसमान पर फहराता है.

तीन रंग का है, ये तिरंगा
अपना, प्रतिक बताता है
केशरिया सफ़ेद हरा इसमें
सब रंग परिचय कराता है.

केशरिया ये कहता तिरंगा
त्याग, बलिदान, बताता है
सफ़ेद हरा भी कहता कुछ
शान्ति हरियाली से नाता है.

हमसे है कुछ कहता तिरंगा
राष्ट्र-प्रेम का पाठ पढ़ाता है
मातृभूमि है सबसे सरोपरी

*****

न हारो कभी मन से

रचनाकार- श्रीमती मंजू साहू, बेमेतरा

जीवन एक संघर्ष है,
न हारो कभी मन से.

जीवन पथ पर डटे रहो,
न हरों कभी मन से.

जीवन एक नइया है,आएगी बाधा,
उठेगी लहरें ,न हारो कभी मन से.

जीवन एक फूल है,महकेगी बगिया ,
चुभेगी काटें,न हारो कभी मन से.

जीवन एक सफर है,
कभी हार ,कभी जीत,
मिलेंगी मंजिलें, ना हारो कभी मन से.

बचपन बीती, जवानी गई,
ठोकरें खाकर, बालों में सफेदी आयी ,
न रुको,न झुको, आगे बढ़ते चलो,
क्योंकि न हारो कभी मन से.

*****

हिंदी से हम हिंदुस्तान

रचनाकार- श्रीमती मंजू साहू, बेमेतरा

हिंदी से हम हिंदुस्तान
हिंदी से है, हमारा सम्मान
हिंदी से है हमको अभिमान,

हिंदी है, हम सब की जान,
आओ मिलकर, बढ़ाते मान
हिंदी पर है, सभी कुर्बान,
हिंदी से हम हिंदुस्तान.

करो न कभी, इसका अपमान
मातृभाषा का फैलावो सम्मान
करो बहिष्कार ,लगा दो प्राण
हिंदी से हम हिंदुस्तान.

हिंदी का सब करो सम्मान,
नहीं तो, मिट जाएगा नामो ,

कर लो ,यह प्रण सब ठान,
हिंद देश की ,है यह शान ,
हिंदी से हम हिंदुस्तान.

*****

10 जनवरी विश्व हिंदी दिवस विशेष

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

आज 10 जनवरी "विश्व हिंदी दिवस" है,भारत साहित पूरे विश्व में आज हिंदी दिवस धूमधाम के साथ मनाई जा रही है. विश्व हिंदी दिवस हम भारतियों के लिए विशेष दिन है क्योंकि एक यही हिंदी है जो सबसे सहज,सरल,शालीन और मर्यादित भाषा है.यही हमारी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है,हमारे विचार हमारी मनोवृतियाँ,हमारे हाव-भाव,हमारे मनोभावों की सबसे सुंदर माध्यम है.हिंदी के द्वारा हम अपने आचार विचार को सरल सहज रूप में व्यक्त करते हैं.जिसको हर कोई बड़ी आसानी से समझ सकता है.

विश्व हिंदी दिवस को मनाने का कारण-

विश्व हिंदी दिवस मनाये जाने का मात्र एक ही कारण है और वह है,हिंदी का पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार करने ताकि इसकी लोकप्रियता बनी रहे.इसका प्रभाव और महत्व हमेशा बढ़ता रहे.हिंदी हमारी सांस्कृतिक विरासत है, हमारी पहचान है,हमारे एकता का परिचायक है.एक मात्र यही हिंदी है जो हमे आपस में एक सूत्र में बाँध के रखती है.हमे मान-सम्मान मर्यादा शालीनता सिखाती है.

विश्व हिंदी दिवस कब से मनाया जा रहा है-

10 जनवरी सन 1975 को नागपुर में पहला विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुई.इसके बाद मॉरिशस, त्रिनिदाद और टोबैगो, यूनाइटेड किंगडम, सूरीनाम, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका में 11 ऐसे सम्मलेन भी हुए.इस प्रकार से हिंदी को पूरे विश्व में प्रसार-प्रसार

करने के लिए और 10 जनवरी को विशेष दिन मानते हुए हमारे देश के तात्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह जी ने 2006 में हिंदी दिवस मनाने की घोषणा की.उसके बाद विदेश मंत्रालय ने सबसे पहले 10 जनवरी को विदेश में विश्व हिंदी दिवस 2006 में मनाया.

और तब से लेकर आज तक 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जा रहा है.इसका मूल उद्देश्य यही रहा कि हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुंचाना और इसको अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में दर्जा दिलाना है.

हिन्दी भाषा कहाँ-कहाँ बोली जाती है-

हिंदी भाषा भारत के अलावा नेपाल, गुयाना, मॉरिशस, त्रिनिदाद और टुबैगो, सूरीनाम और फिजी में भी बोली जाती है.यहाँ पर हिंदी दिवस कार्यक्रम धूमधाम के साथ मनाया जाता है.हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हिंदी विषय पर कविता कहानी लेखन प्रतियोगिता कराई जाती है.साथ ही साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं.

अंततः यह कहा जा सकता है की हमारी हिंदी हमारी पहचान है,हमारी अभिव्यक्ति है,आइए इसे हम पूरे विश्व में एक अलग पहचान दिलाने हेतु भरसक प्रयास करें,इसका पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार करें.ताकि हमारी हिंदी का पूरे विश्व में भी एक अलग पहचान बन सके,और यह जन-जन की भाषा बन सके.

*****

मकड़ी

रचनाकार- सोनल मंजू श्री ओमर, गुजरात

मकड़ी रानी, मकड़ी रानी
छोटी-सी है, बड़ी सयानी
पूरे घर मे बना-बना के जाले
करती है ये खूब मनमानी
मकड़ी रानी, मकड़ी रानी.

कोई न जाए जिस भी ओर
ढूँढ लेती है ये वो छोर
बुनकर अपना जालाघर
ठाठ से रहती है महारानी
मकड़ी रानी, मकड़ी रानी.

घात लगाकर करती शिकार
घण्टे-घण्टे ये करे इंतज़ार
फँसे जाल में जैसे ही कीड़ा
खत्म करती उसकी कहानी
मकड़ी रानी, मकड़ी रानी.

मम्मियों को ये बड़ा अखरती
जाल पर इसके झाड़ू चलती
बनाती बार-बार अपना जाला
इसने कभी न हार मानी
मकड़ी रानी, मकड़ी रानी.

*****

आम

रचनाकार- सोनल मंजू श्री ओमर, गुजरात

आम बड़ा रसीला है
रंग इसका पीला है
खाने में बड़ा मज़ेदार
आमरस हो या हो अचार
कहलाता ये फलों का राजा
इससे बनते स्लाइस, माजा
दूध-आम से शेक बन जाता
पीकर जिसे बड़ा मजा आता
गर्मियों के दिनों में हैं आते
सबके मन को ललचाते
लेलो तुम भी खुश हो जाओ
काट के या फिर चूस के खाओ

*****

छुक-छुक करती रेलगाड़ी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

छुक-छुक रेलगाड़ी.
एक भारी इंजन और,
पीछे लम्बी पिछाड़ी.
छुक-छुक रेलगाड़ी.
कोयले से चलती थी पहले,
धुंआ छोड़ती थी ये भारी.
छुक-छुक रेलगाड़ी.
इंजन आया फिर डीजल का,
होता था जो बड़े अश्वबल का.
आई फिर रफ्तार की बारी.
छुक-छुक रेलगाड़ी.
अब बिजली से चलती है.
जो,खूब रफ्तार पकड़ती है.
सुविधा में आई दमदारी.
छुक-छुक रेलगाड़ी.

*****

आदित्य एल - 1 यान

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

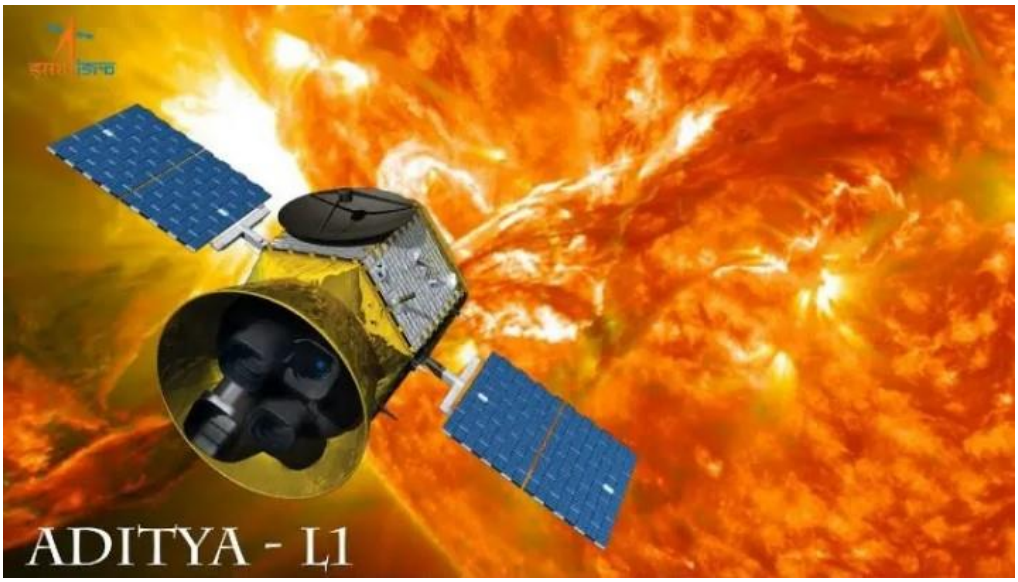

जय भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान.
किया सूर्य को नमस्कार है
आदित्य एल - 1 यान महान.

अंतरिक्ष विज्ञान में हमको
मिल गई सफलता और एक.
देश को गर्व अनुभूति हुई
शुभ अवसर पर उपलब्धि नेक.

भारत का पहला सूर्य मिशन
सौर का अध्ययन लिया ठान.

'इसरो' ने कर दी सुस्थापित
पहली अंतरिक्ष वेधशाला.
कक्षा, लैंग्रेज विंदु बना
वैज्ञानिक गतिविधियों वाला.

हो गया सफल पहला प्रयास

जग में भारत का बढ़ा मान.

अब पंद्रह लाख किलोमीटर
पृथ्वी से एल - 1 की दूरी.
खोलेगा सूर्य - रहस्यों को
आदित्य - साधना है पूरी.

होते विस्फोट सूर्य पर जो
उनके अध्ययन से मिले ज्ञान.

कैसा है सौर वायुमण्डल
सौर कंपन क्यों होते रहते.
प्लाज्मा, सौर ऊर्जा विषयक
पेलोड सात' सच ही कहते.

चौदह सौ चालिस तस्वीरें
प्रतिदिन भेजेगा सूर्य यान.

हो रहा आत्मनिर्भर भारत
अंतरिक्ष तकनीक स्वदेशी है.
सांस्कृतिक अनोखा देश जहाँ
विज्ञान - ज्ञान उन्मेषी है.

नमनीय समर्पित विज्ञानी
जो सूर्य - चंद्र पर रखें ध्यान.
जय भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान.

*****

मड़ई- मेला

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

हमर छत्तीसगढ़ के माटी म,
सुघर परब आथे.
मन म भरथे उमंग,
जउन मड़ई मेला कहाथे.

गाँव के मड़ई मेला म,
सोर भेजथन सम्बन्धी सगा म .
बेटी माई दीदी बहनी,
जम्मो पहुंचथे मेला ठउर जगा म.

बाजार हाट भरागे,
किसम -किसम के चीज आगे.
आनी बानी के चीज बिसाय बर,
लइका मुंदरहा ले जागे.

लइका पिचका रोये फुग्गा बर,
पेठा ठेला सजगे ओरि ओर.
नोनी के चुड़ी फूली खिनवा,
उहू चिल्लावत हे तोरी तोर.

रच -रच ढेलवा के बोली,
कोलबिल कोलबिल लइका सियान.
सोर करत हे झुनझुना वाला.
चसमा डहर नइये कोनो के धियान.

माई पीला बाजार करें,
मुँह ल टेररवित हे बहुरिया.
महू घूम लेतेव मेला मड़ई,
संगे संग होतिस मोर जहुरिया.

संझा के बेरा म राउत भैया,
मोहरी के संग गड़वा बाजा भागे.
सज धज निकले पारे दोहा.
मड़ई के संग राउत नाचत आगे.

मंच सजगे राम कथा के,
बाचत सत्संगी भैया मन रामायण.
गाँव घर तीर तखार के बइठे मनखे,
सियान बबा बांध पगड़ी बइठे करें जमायन.

छत्तीसगढ़ के लोक परम्परा,
बेरा नाचा गम्मत के आगे.
होवत बियारी लइका सियान,
अतेक भीड़ म ओरि ओर भागे.

हमर गाँव के अतेक सुघघर संस्कृति,
उमंग भरे हे जम्मो लइका जवान म.
भीड़ -भाड़ म धक्का खावत,
नइ आवत कोनो ह पहचान म.

*****

टामी

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

रात के दस बजे थे .गली में कोई कुत्ता जोर जोर से रो रहा था.उसकी आवाज में कातरता थी.आमतौर पर जब कुत्ते रोते हैं तो लोग उसे मनहूस मान कर भगा देते हैं लेकिन प्राची ने उस आवाज में छिपी व्यथा को मानो भाँप लिया था.

वह अपने बेटे यश से बोली - "गली में जाकर देखो बेटा.कोई कुत्ता भीषण कष्ट के कारण जो र जोर से रो रहा है."

यश-"मम्मी ये कुत्ते ऐसे ही गला फाड़ कर रोते हैं.आप परेशान मत होइये.चुपचाप सो जाइये."

प्राची -"बेटा,तुम मना कर रहे हो तो मैं ही जाकर देखती हूँ कि क्या बात है??"

यश -"ठीक है मम्मी मैं देखता हूँ."

यश एक छोटे से कुत्ते के बच्चे को गोद में उठकर घर के आँगन में ले आता है."देखिये मम्मी इसकी चोट से खून बह रहा है."

नन्हा कुत्ता कातर भाव से प्राची को देख रहा था जैसे वह अपनी व्यथा बहते हुये आँसुओं से बताना चाहता था.

यश-"मम्मी ,इसे किसी कुत्ते ने काट लिया है इसलिये यह दर्द के कारण रो रहा था."

प्राची-"बेटा ,इसके घाव को धोकर मैं मलहम लगा देती हूँ."

घायल कुत्ता दर्द से छटपटा रहा था .कूँ कूँ की आवाज में भी करुण चीत्कार छिपी थी.

प्राची एक प्लेट में गुनगुना दूध लाकर कुत्ते को पिलाने लगी.भूखा होने का कारण उसने सारा दूध पी लिया.

दूध में कुछ गोलियाँ मिश्रित थीं जिससे उसे बहुत आराम मिला और वह घर के सामने सो गया.

दूसरे दिन नन्हे कुत्ते की हालत में सुधार आ गया था.प्राची को देखकर वह पूँछ हिलाने लगा मानो प्रात:अभिनंदन करके बताने लगा मैं अब ठीक हूँ बस भूखा हूँ.यश उसके सामने बिस्कुट रख दिया.नन्हा कुत्ता प्रेम पूर्वक खाने लगा.

यश-"मम्मी !आपने इस बच्चे को जीवन दान दे दिया है.आज इसे डाक्टर को दिखा देंगे.ये बिल्कुल ठीक हो जायेगा.देखिये मम्मी इसकी आँखें कितनी सुंदर हैं.हम इसे पालेंगे .भगवान जी इसे सफेद टीका लगा कर भेजे हैं.इसका नाम हम टामी रखेंगे."

सचमुच वह भूरे रंग का नन्हा कुत्ता बहुत सुंदर दिखायी दे रहा था.उसके माथे पर सुंदर सफेद टीका सुसज्जित था.

प्राची-"ठीक है यश बेटे.पहले इसे डाक्टर को दिखा देते हैं.कल ये बहुत तकलीफ में था.अब देखो कितना प्रसन्न दिख रहा है!"

*****

बेटी

रचनाकार- श्रीमती सुनीता सिंह राजपूत, बेमेतरा

जब-जब जन्म लेती है बेटियां
खुशियां साथ लाती है बेटियां
ईश्वर की सौगात है बेटियां
सुबह की पहली किरण है बेटियां
तारों की शीतल छाया है बेटियां
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटियां
नए-नए रिश्ते बनाती है बेटियां
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटियां
बार-बार याद आती है बेटियां
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास नहीं है बेटियां

*****

पर्यावरण से मत कर खिलवाड़

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

अरे इंसान पर्यावरण से मत कर तु खिलवाड़
पेड़-पौधों को काटकर, क्यों करता है उजाड़.
इन्ही पेड़-पौधों से होती है वसुंधरा का श्रृंगार
यही है सारे जीव-जगत का, सुंदर वन विहार.

ये पेड़-पौधे हमारे, हितैषी और शुभचिंतक हैं
इनके बिना हमारा, जीवन बेकार निरर्थक है.
यही तो हमारे जीवन के आधार मार्गदर्शक हैं
इनसे ही तो यह जीवन सफल और सार्थक है.

विकास की आड़ में विधवंस को नही बुलाएं
प्रकृति से खिलवाड़ करके फर्ज नही भुलाएँ.
जैसा भी हो प्रकृति से, जरूर संतुलन बनाएं
प्रकृति का संरक्षण करें,इसको गले में लगाएं.

अभी न सम्हलेंगे और इनसे खिलवाड़ करेंगे
तब हमे भयानक परिणाम भी, भुगतने होंगे.
जमीन-आसमान,पर्वत-पठार हिम ये दहलेंगे
ये धरती कांपेगी,भूकंप आएगा,बादल फटेंगे.

और धरा में भयानक काल-कयामत आएगी
सब जीव-जगत को अपने आगोश मे ले लेगी.
और फिर इस मानव को, करनी याद आएगी
भूल सुधारना चाहेगा पर बहुत देर हो जाएगी.

*****

वसंत

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

मनमोहक वसंत आया है
पुष्प खिले हैं उपवन - उपवन.

ऋतुओं का राजा कहलाता
नई उमंगें देकर जाता

वसंत पंचमी की शुभ तिथि को
माँ वाणी का करते पूजन.

नवल प्रकृति की सुषमा न्यारी
महक रही है क्यारी - क्यारी

बीत गई है ऋतु पतझड़ की
हवा बजाती पायल छन-छन.

अमराई में कोयल बोले
कानों में जैसे मधु घोले

रंगबिरंगी उड़ें तितलियाँ
चंचल भौंरे करते गायन.

हम भी कलियों - सा मुस्काएँ
सदा सुहाने स्वप्न सजाएँ

जाग उठे हैं भाव सुकोमल
मुदित हुआ आशामय जीवन.

*****

दिल्ली

रचनाकार- श्रीमती रेणुका अग्रवाल, बेमेतरा

एक चूहे से बोली बिल्ली
चलो दिल्ली चलो दिल्ली
क्या करेंगे दिल्ली जाकर
बिल्ली से बोल चूहा
फिर चूहे से बिल्ली बोली
ले लालच का खुमार,
दिल्ली में हम देखेंगे,
लाल किला और कुतुब मीनार!
खाकर छोले कुलचे,
जाएंगे इंडिया गेट,
जंतर मंतर घूम कर,
देखेंगे वेस्ट टू वंडर पार्क
अलग-अलग पक्षियों की आवाजे

सुनेंगे ओखला पक्षी अभ्यारण में
नेशनल रेल म्यूजियम में जाकर
जानेंगे रेलों के बारे में
और भी बोलो क्या बतलाऊं
दिल्ली के बारे में
जहां-जहां तुम्हें घुमाओ
और भी जगह है बहुत सारी
बिल्ली से फिर बोला चूहा
बस करो भुआ,
ठंड बहुत है दिल्ली में
और मुझे जुकाम है हुआ!

*****

परीक्षा पे चर्चा

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियां के हर देश के छात्रों के लिए जो अनेक शिक्षा क्षेत्र में अध्यनरत हैं, अनेकों के लिए चिंता मुश्किल व सोचनीय स्थिति तब उत्पन्न हो जाती है जब उनके जीवन पर असर डालने वाले बोर्ड की परीक्षाओं का पल सामने आता है. यह एक ऐसी घड़ी होती है कि अच्छे-अच्छे होशियार छात्र भी उम्मीद के विपरीत स्थिति महसूस करते हैं, या यू कहें कि परीक्षा के प्रति उनकी घबराहट चिंता ही कभी-कभी असफलता का कारण बन जाती है, इसलिए तो हमारे माननीय पीएम महोदय ने 7 वर्ष पूर्व छात्रों के लिए परीक्षा पे चर्चा, सहजता ग्रहण करने परीक्षा पर चर्चा की शुरुआत की गई थी जो आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है. 29 जनवरी 2024 को होने वाले इस कार्यक्रम में रिकॉर्ड एक करोड़ से अधिक रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं, जो 12 जनवरी 2024 तक अभी चलते रहेंगे.उल्लेखनीय है कि इस सातवें संस्करण के लिए 11 दिसंबर 2023 से इसके रजिस्ट्रेशन शुरू हुए थे, जिसमें छात्र अभिभावक और शिक्षकगण बहुत बड़ी मात्रा में तेजी से रजिस्ट्रेशन करवा रहे हैं, जो अभी से ही इतनी विशाल संख्या में रजिस्टर्ड हो चुके हैं, जिसके और बढ़ाने की संभावना है जो एक एतिहासिक रिकॉर्ड बनेगा. इसीलिए ही परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम की ओर हितग्राहियों का झुकाव वह इसकी लोकप्रियता का अंदेशा लगाया जा रहा है, उससे कहीं अधिक होने की उम्मीद है. क्योंकि पिछले छह संस्करणों में छात्रों शिक्षकों व अभिभावकों को इस कार्यक्रम से अनेक फायदे और संतुष्टि का एहसास हुआ है. चूंकि परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम छात्रों को तनाव से मुक्ति का माहौल देता है, इसलिए आज हमपीआईबी और मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, देश भर के छात्रों अभिभावकों शिक्षकों में परीक्षा पे चर्चा के प्रति व्यापक उत्साह का माहौल बना हुआ है.

साथियों बात अगर हम परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम 2024 को समझने की करें तो, इस वर्ष कार्यक्रम 29 जनवरी 2024 को सुबह 11 बजे से भारत मंडपम, आईटीपीओ,

प्रगति मैदान, नई दिल्ली में टाउन-हॉल प्रारूप में आयोजित किया जाएगा. कार्यक्रम में लगभग 4000 प्रतिभागी प्रधानमंत्री के साथ बातचीत करेंगे. प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश से दो छात्रों और एक शिक्षक तथा कला उत्सव एवं वीर गाथा प्रतियोगिता के विजेताओं को मुख्य कार्यक्रम के लिए विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जा सकता है. प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए 6 से 12वीं कक्षा के छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए ऑनलाइन बहुविकल्प प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता 11 दिसंबर, 2023 से 12 जनवरी, 2024 के बीच माइगोव पोर्टल पर लाइव है. 5 जनवरी, 2024 तक, 90 लाख से अधिक छात्र, 8 लाख से अधिक शिक्षक और लगभग 2 लाख अभिभावक यानी एक करोड़ से ऊपर प्रतिभागी पंजीकरण करा चुके हैं. पीएम के स्कूली छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ बातचीत कार्यक्रम परीक्षा पे चर्चा 2024 के 7वें संस्करण के लिए, अब तक मायगोव पोर्टल पर 1 करोड़ से अधिक पंजीकरण दर्ज किए गए हैं. यह देश भर में छात्रों के बीच व्यापक उत्साह को दर्शाता है. इस विशिष्ट कार्यक्रम में भाग लेने और पीएम के साथ बातचीत करने के लिए छात्रों में बहुत उत्साह है. प्रधानमंत्री ने इस अनूठे कार्यक्रम - परीक्षा पे चर्चा (पीपीसी) की परिकल्पना की है - जिसमें देशभर के साथ-साथ विदेशों से भी छात्र, अभिभावक और शिक्षक परीक्षाओं और स्कूल के बाद के जीवन से संबंधित चिंताओं पर चर्चा करने के लिए उनके साथ बातचीत करते हैं. यह आयोजन शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा पिछले छह वर्षों से सफलतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है. परीक्षा पे चर्चा युवाओं के लिए तनाव मुक्त वातवरण बनाने के लिए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में बड़े आंदोलन -एग्जाम वॉरियर्स का हिस्सा है. यह एक ऐसा आंदोलन है जो प्रधानमंत्री के छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और समाज को एक साथ लाने के प्रयासों से प्रेरित है ताकि एक ऐसे माहौल को बढ़ावा दिया जा सके जहां प्रत्येक बच्चे के अद्वितीय व्यक्तित्व का उत्सव मनाया जाए, प्रोत्साहित किया जाए और आत्माभिव्यक्ति की अनुमति दी जाए. प्रधानमंत्री की सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक एग्जाम वॉरियर्स इस पहल को प्रोत्साहित कर रही है. लगभग 2050 प्रतिभागियों का चयन मायगोव पोर्टल पर उनके प्रश्नों के आधार पर किया जाएगा. उन्हें एक विशेष परीक्षा पे चर्चा किट प्रदान की जाएगी जिसमें प्रधानमंत्री द्वारा लिखित पुस्तक हिंदी और अंग्रेजी में एग्जाम वॉरियर्स और एक प्रमाण पत्र शामिल होगा. 12 जनवरी (विवेकानंद के जन्म दिवस) 2024 यानी युवा दिवस से शुरू होकर 23 जनवरी (सुभाष चंद्र बोस के जन्म दिवस) 2024 तक मुख्य कार्यक्रम के अग्रदूत के रूप में, स्कूल स्तर पर विभिन्न गतिविधियों काआयोजन किया जाएगा जिनमें मैराथन दौड़, संगीत प्रतियोगिता जैसी आनंददायक सीखने की गतिविधियाँ शामिल होंगी. इनमें मीम प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, छात्र-एंकर-

छात्र-अतिथि चर्चा आदि शामिल हैं. आखिरी दिन, 23 जनवरी 2024 यानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती की जयंती पर, देश भर के 500 जिलों में एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी. इसके लिए चंद्रयान, भारत की खेल सफलता आदि विषय शामिल होंगे - जो दिखाते हैं कि परीक्षाएं कैसे जीवन का उत्सव हो सकती हैं.

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम के पिछले एपिसोड में विचारों की करें तो उन्होंने कहा था, 30-40 साल बाद गर्व होगा पीएम ने आखिर में कहा, था आज जो मेरे सामने हैं, वो नया भारत हैं. 2047 में भारत जब आजादी की शताब्दी मनाएगा, तो आपके पास नेतृत्व होगा. आज से 30-40 साल बाद जब सफलता को चूमेंगे और मैं अगर जीवित रहूंगा तो गर्व से कहूंगा कि यह वही लोग हैं जिनका मुझ जनवरी को दर्शन करने का सौभाग्य मिला था. मैं गर्व करूंगा कि जब आपके हाथ में देश का नेतृत्व होगा. संतोष होगा कि इनसे मैंने बात की थी. परीक्षा जिंदगी नहीं है, परीक्षा जिंदगी में महज एक मुकाम है. आप में से बहुत से लोग हैं, जिन्हें शायद यहां मौका नहीं मिला. मैं उनसे क्षमा चाहता हूं. पीएम ने कहा था, जीवन में हर किसी को कुछ न कुछ जिम्मेदारियां निभानी होती हैं. अगर आप किसी की देखादेखी में कोई काम करते हैं, तो बहुत निराशा हाथ लगेगी. अगर अपने मन का काम करेंगे, तो मजा आएगा. जिंदगी में अगर एकाध एंट्रेंस में रह गए तो क्या. लाखों लोग पीछे रह जाते हैं. लेकिन अगर हम डर के कारण कदम ही न रखें तो उससे बुरा कुछ नहीं. हमेशा अपने अंदर के विद्यार्थी को जीवित रखें. जीवन जीने का यही मार्ग है, नया-नया जानना.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम छात्रों को तनाव से मुक्ति का सशक्त माहौल देता है.परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम 29 जनवरी 2024 के एतिहासिक रिकॉर्ड बनाने की संभावना-पंजीकरण की 12 जनवरी 2024 अंतिम तारीख.देशभर के छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों में परीक्षा पे चर्चा के प्रति व्यापक उत्साहजनक माहौल है.

*****

बेटियाँ

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली

बेटियाँ सृष्टि की अनुपम सौगात होती हैं. ईश्वर का वरदान होती है, बेटी शारीरिक रूप से भले ही नाजुक होती है परंतु मानसिक रूप से बहुत मजबूत होती है. उनके पास अतुलित धैर्य होता है कुदरत का अद्भुत वरदान लड़कियाँ होती है ,बुद्धि विद्या का भली भांति उपयोग करना जानती हैं ,बहुत ही भावनात्मक रूप से सोचती समझती हैं, परिवार अभिभावकों के प्रति उनके मन में बहुत ही लगाव और जिम्मेदारी की भावना होती है, जिस घर में बेटियों का मान सम्मान होता है, उन्हें छोटा बड़ा नहीं समझा जाता या जेंडर समानता असमानता की बात नहीं होती , ऐसे घर की लड़कियां बहुत ही प्रगति करती हैं, घर परिवार समाज राष्ट्र में बहुत ही अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है, बेटियों को शिक्षित कीजिए, उन्हें अच्छे संस्कार दीजिए, प्रोत्साहित करिए ,उन्हें आत्मनिर्भर बनाये सही गलत का ज्ञान दीजिए ,सुरक्षा की बातें बताइए शारीरिक बदलाव के बारे में, सही ढंग से बात कर उनको स्वस्थ ज्ञान देना चाहिए,समझाइश देकर हम उनका जीवन बहुत अच्छे से सवांर सकते हैं, हर क्षेत्र में बालिकाओं को प्रोत्साहन दिया जाता है अनेक योजनाएं सिर्फ बालिकाओं के लिए ही चलाई जा रही है ताकि यह बच्चियों यह बेटियां पढ़ लिखकर आगे बढ़े ,एवं अपने साथ ही साथ पूरे परिवार की जिम्मेदारी बखूबी निभा सके. बेटियां पढ़ाई भी करे,रुचि का काम करे, साथ ही अन्य कला भी सीखें. यह जिंदगी के किसी न किसी मोड़ पर आपके काम ही आएंगे कोई भी कला व्यर्थ नहीं जाती है यह प्रतिफल जरूर देती है. शारीरिक मानसिक रूप से सभी में कुछ ना कुछ अंतर होता है रूप रंग अच्छा,बुरा,तुलनात्मक,पारिवारिक स्थिति को लेकर कभी भी मन में कोई भ्रम न

पालने दे, गोरी ,काली ,सांवली ,यह सब चीज अतीत में चली गई है शिक्षा व्यवहार संस्कार आपको प्रत्येक क्षेत्र में सम्मान दिलाएंगे. बेटियों को कभी भी कमजोर नहीं समझना चाहिए, बेटियां हर वह काम कर सकती हैं जो एक आम इंसान कर सकता है. बस आवश्यकता है बेटियों को प्यार दुलार देने का, एक पुष्प के रूप में उन्हें पुष्पित पल्लवित होने का अवसर देने का, उनके ऊपर विश्वास कीजिए,उनके साथ मित्रवत व्यवहार करके उनके मन को उनकी सोच, सपने, को समझने जानने की कोशिश करे,बेटियां अपना समय अपने समय का सदुपयोग करें , अच्छे से मन लगाकर पढ़ाई करें मेहनत करें और अपना लक्ष्य , अपना सपना जरूर पूरा करें ,संस्कारो की खुशबू से उनके व्यक्तित्व को और भी उभारे,पहले से तय कर ले उन्हें क्या करना है, कहां जाना है, उनका उद्देश्य क्या है, वह क्या बनना चाहती है क्या करना चाहती है ,उनके लिए क्या करना अच्छा होगा यह सब चीज जानिए सोचिए उसे पाने का अपना उद्देश्य बना लीजिए, और उन्हे घर का ,रसोई का काम, अर्थात खाना बनाना, और घरेलु ,दैनिक जीवन के काम जरूर सिखाये,इसके बगैर पूर्णता अधूरी लगती है, गुणो को ज्यादा महत्व दे, बेटी होना बहुत ही गर्व की बात है. अगर आप एक बेटी हैं तो बेटी होने का क्या महत्व है. अपने सत्कार्यो और सद्व्यवहार से अपने घर परिवार को जरूर ही अवगत कराये, हर पिता अपनी बेटी को बहुत ही स्नेह,अपनत्व, लाड-प्यार से पालन पोषण करता है ,जरा सा भी उसके लिए गलत नही सुन पाता, बाहर से कितना भी भावनात्मक रूप से मजबूत दिखने की कोशिश करता है पर बेटी के लिए उसके मन मे बहुत ही कोमल भावनाऐ होती है अतः सभी बेटियां अपना बेटी होने का फर्ज निभाये,और मेरी बेटी मेरा अभिमान का सपना जरूर सच करके दिखाएं.

*****

शून्य से शिखर तक जाना है मुझको

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

राह कितना भी कठिन क्यों न हो,
मंजिल की ओर बढ़ता है मुझको,
लक्ष्य को हासिल करना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

आज हार गए तो कोई गम नही,
फिर से कोशिश करना है मुझको,
जीत का परचम लहराना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

जीवन में कैसे भी परिस्थितियों आए,
इन परिस्थितियों से लड़ना है मुझको,
अपने सपने को सच करना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

राह में चाहे हजारों लाखो कांटे बिछे हो,
कांटों को पारकर निकलना है मुझको,
पुष्प की आशा छोड़ बढ़ना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

जीवन में कोई कार्य असंभव हो तो,
इसे संभव करके दिखाना है मुझको,
सफलता की सीढ़ी चढ़ना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

*****

रंगीली गुड़िया

रचनाकार- वर्षा जैन, बेमेतरा

सुंदर-सुंदर प्यारी गुड़िया
लाल रंग की ओढ़ चुनरिया
मटक मटक कर चलती जाए
सबके मन को खूब लुभाए
हरे रंग की पहने चोली
लागे सुंदर कितनी भोली
नीला पीला लिए रुमाल
ठुमक ठुमक कर करे धमाल
होंठ रंगे कत्थई गुलाबी
बिंदी लगा दो काली काली
नजर लगे न उसको भैय्या
नाचे वह तो ता ता थैय्या
मन उसका है स्वच्छ सफेद
बहुत ही कोमल ना कोई भेद
इतनी अच्छी प्यारी गुड़िया
सुंदर सुंदर प्यारी गुड़िया

लाल टमाटर

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर, सक्ती

सब्जी मंडी में मची है शोर,
लाल टमाटर करे किलोल.

भाजी हो या मखनी दाल,
मैं ही सब में करूं धमाल.

हर मौसम में मुझको खाओ,
खाकर अपनी सेहत बनाओ.

जो करता मुझसे है यारी,
न होती उसको बीमारी.

देखो कैसा मैं हूं लाल,
रहते सब मुझसे खुशहाल.

बच्चे,बूढ़े सबको हूं भाता,
बड़े मजे से हर कोई खाता.

*****

नटखट बंदर

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर, सक्ती

देखो नटखट बंदर आया,
उछल कूद कर सबको हंसाया.

इस डाली से उस डाली पर,
उछल - उछल करतब दिखलाया.

अमरूद, केला उसको भाया,
बड़े मजे से उसको खाया.

जब भी उसको पास बुलाया,
दांत दिखला सबको डराया.

देखो नटखट बंदर आया..

*****

NEP 2020 शिक्षा गीत

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली

NEP 2020 का छाया खुमार
घर-घर शिक्षा की चली बयार
शिक्षा से रोशन घर संसार
निपुण भारत का सपना साकार
शिक्षा लाये जीवन मे बहार
जय शिक्षा ,जय शिक्षा

NEP से बालवाड़ी गुलजार
माताओ में छाया हर्ष अपार
पोषण संग मिले मान सम्मान
बच्चे पाते प्यार दुलार
जय शिक्षा. जय शिक्षा

एफ एल एन की हवा चली
अंक और अक्षर गली गली
घर-घर में यह बात चली
बहु भाषा शिक्षण की अलख जगी
जय शिक्षा. जय शिक्षा

अंगना में शिक्षा आया है
वस्तुओं का महत्व बताया है
जोड़ घटाना गुणा और भाग
पिता, बच्चे माता के साथ
जय शिक्षा. जय शिक्षा

पांच धन तीन तीन धन चार
यही शिक्षा का सूत्रधार
पालन करना हमारा काम
सबके सपने हो साकार
जय शिक्षा. जय शिक्षा

साग भाजी संग गणित का ज्ञान
रंगों से सुंदर स्वप्न संसार
तर्क आकार शब्द पहचान
खेल-खेल में शिक्षा ज्ञान
जय शिक्षा. जय शिक्षा

*****

पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित'

1. रहिथे बादर के ओ पार. सूरुज चंदा के घर द्वार.
दिखथे नीला-नीला रंग. लगथे जइसे हावय संग.

2. लकलक-लकलक बरते जाय. लाली करिया लपट उठाय.
येखर ताकत सबो डराय. जेला पावय राख बनाय.

3. जिनगी खातिर अमरित मान. जीव जगत के बसथे प्रान.
भाप, बरफ येहा बन जाय. ऊपर ले खाल्हे बोहाय.

4. दिखय नहीं पर चलथे जोर. सरसर-सरसर करथे शोर.
जीव जगत के सिरतों आस. येखर बल मा सबके साँस.

5. गोल-गोल मैं घूमत जाँव. बइठ सकँव नइ एक्के ठाँव.
दाई कहिथे मोला संसार. रखँय तभो तरपौंरी पार.

6. धरती के ये संग सहाय. ढेला, फुतका जघा कहाय.
दुनिया भर ला ये उपजाय. आखिर अपने संग मिलाय.

7. बड़े बिहनिया येहा आय. संझौती बेरा मा जाय.
येखर संगे संग अँजोर. नइ ते अँधियारी घोर.

8. सरी जगत के करथे सैर. भुँइयाँ मा नइ राखय पैर.
दिन मा सोवय, जागय रात. करय अँजोरी रतिहा घात.

9. गिनत-गिनत मनखे थक जाँय. बगरय बादर कहाँ समाँय.
रतिहाकुन मा इन टिमटाम. बोलव झटपट का हे नाम.

10. ना भुँइया मा माढ़े भार. ना ऊपर मा रहय सवार.
करै अँजोरी अउ अँधियार. कभू बरसजय मूसलधार.

1. अगास, 2. आगी, 3. पानी, 4. हवा, 5. धरती, 6. माटी, 7. सुरुज, 8. चंदा, 9. चँदैनी, 10. बादर

*****

ठंड का मौसम

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित'

सूरज दादा 'लेट', ठंड के कारण होते.
उठना नहीं पसंद, देर तक रहते सोते.

सर्दी हुई प्रचंड, लगे ठंड़ी अब ज्यादा.
जकड़ रही है शीत, ढूँढ़ता फिरे लबादा.

बादल रोके राह, धुंध की बेड़ी डाले.
सिकुड़ी-सिकुड़ी धूप, पड़ी है ओढ़ दुशाले.

कैसे भी दिन काट, साँझ को सरपट भागे.
देख शरद के ढंग, सूर्य को भी डर लागे.

फँसा कोहरे बीच, पग न अब आगे जाता.
शीत लहर की मार, गाल पर नहीं सुहाता.

खूब काँपता हाड़, दाँत किटकिट कर बजता.
काटे गिन दिनरात, नहीं आदित्य सहजता.

*****

आवव खाबो गुपचुप

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित'

अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.
सरदी-खाँसी के डर नइ हे, बइठव झन तुम चुपचुप.

देख सँझौती बेरा सुग्घर, घर ले बाहिर निकलव.
अमसुर-गुरतुर सेवाद भरे, थोर-थोर सब चिखलव.
अमली पानी मिला-मिला के, मुँह मा डारव गुपगुप.
अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.

कोनो खावव चाट बना के, मटर, मसाला डारे.
तुरतेताही तात-तात बड़, झन पुछ येखर बारे.
मन होथे बस खाते जावँव, सरपट सँइया टुपटुप.
अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.

भेल, पापड़ी, आलू टिकिया, गजब मिठाथे नट्टा.
आनी-बानी खाये खातिर, चलव चलिन चौगट्टा.
हाथ लमा के जम्मों खाथें, कहन न कोनो छुप छुप.
अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाबो गुपचुप.

सरदी-खाँसी के डर नइ हे, बइठव झन तुम चुपचुप.
अल्लू-बल्लू, अमलू-रमलू, आवव खाइन गुपचुप.

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र , लखनऊ

जय 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' की
विज्ञान को शत - शत बार नमन.
'रमन प्रभाव 'है खोज अनोखी
धन्य - धन्य सर सी वी रमन.

रमन प्रभाव की ही घटना है
रंग समुद्र का दिखता नीला.
रसायन - अध्ययन से समझें
आणविक संरचना की लीला.

28 फरवरी, सन 1930 को
रमन को मिला नोबेल पुरस्कार.
औषधि, जीव, खगोल, भौतिकी
क्षेत्रों में हुए आविष्कार.

घर की रसोई से प्रयोगशाला तक
छाए अनुपम अनुसंधान.
वैज्ञानिक धारणायुक्त हैं
धार्मिक - संस्कृति के अनुष्ठान.

कण-कण में विज्ञान समाहित
इसका अध्ययन बहुत जरूरी.
जन - जन हित विज्ञान सुलभ है
कठिन समझ, न बनाएँ दूरी.

जीवन को उन्नत करने के
है विज्ञान दिलाता अवसर.
शिल्प और तकनीक सीखकर
युवा बना सकते हैं करियर.

पाएँ सब विज्ञान की शिक्षा
वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाएँ.
साथ चलें प्रौद्योगिकी के
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' मनाएँ.

*****

निपुण बना दो

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

निपुण बना दो गुरुजी, निपुण बना दो तुम.
छोटे- छोटे बच्चे प्यारे, हैं बगिया के फूल.
निपुण बना दो गुरुजी, निपुण बना दो तुम.

अनार के अ, आम के आ.
पका- पका आम को खाते जा.
इमली के इ, ईख के ई.
ईख के रस को, पी लो जी.
उल्लू के उ, ऊन के ऊ.
बुन के स्वेटर, पहन के घूम.
निपुण बना दो गुरुजी, निपुण बना दो तुम.

दो एकम दो, दो दूने चार.
गुरुजी की बोलो, जयजयकार.
दो तिया छै, दो चौके आठ.
गीत कहानी और, पढ़लो पाठ.

दो पंचे दस, दो छक्के बारह.
पढ़ाते गुरूजी, ध्यान से सुन.
निपुण बना दो गुरूजी, निपुण बना दो तुम.

*****

पहेलियाँ

रचनाकार- उर्मी साहू, छठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम स्कूल, तारबहर बिलासपुर

1 होता है रंग सफेद , फट जाए तो मीन हो खेद क्योंकि फिर भी काम काम का होता .

2 ऐसी कौन सी चीज है जो लाल भी है, और खाती है सुखी घास पर पीकर पानी मर जाए, और जो भी आए उसके पास मर जाए जल कर .

3 एसी कौन सी चीज है जिसको हम खाते भी है और उसके पेट पर दात भी है .

4 एसा कौन सा चीज है जो हमे बुद्धि भी देते हैं, और अच्छी चीजों का ज्ञान भी देते हैं , और हमे हमेशा सही राह पर लेजाते है.

उत्तर - 1 दूध 2 आग 3 अनार 4 शिक्षक

*****

गणित के खेल

रचनाकार- वर्षा जैन, बेमेतरा

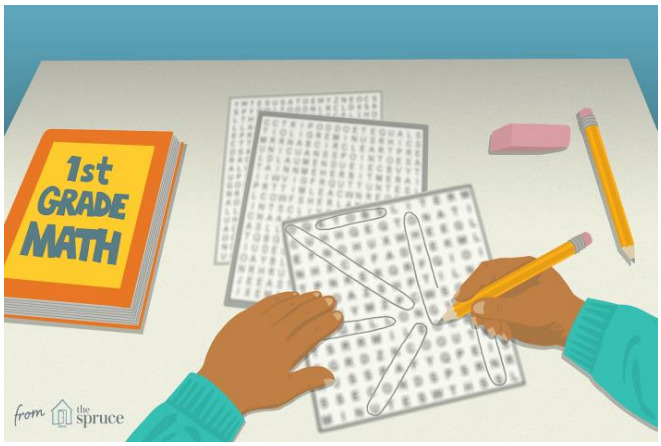

लड़ रहे थे अंक सारे
मैं बड़ा भई मैं बड़ा
उचक के आया शून्य निराला
और हंसकर बोला
जिसके पीछे मैं खड़ा
वह बड़ा भई वह बड़ा
तुम अकेले एक इकाई
मैं जुड़ा तो बने दहाई
अब यह बात समझ में आई
बोलो मेरे प्यारे भाई

जीवन का यह मूल्य भी जानों
साथ रहो और बढ़ते जाओ
एक दूजे से जुड़ते जाओ
जुड़-जुड़ कर तुम बढ़ते जाओ
यही सिखाता नियम जोड़ना
कभी किसी का साथ ना छोड़ना

जो किसी से हुए अलग
ज्यादा से तुम हो गए कम
बड़े अंक से छोटा घटता
घटाना इसी तरह से बनता

अंकों के यह खेल निराले
प्यारे प्यारे और ढेर सारे
आगे आगे बढ़ते जाओ
नए नियम और नए खेल से
गणित की दुनिया में घूम आओ

*****

बेटी

रचनाकार- संजय जांगिड 'भिरानी', राजस्थान

मेरी बेटी की एक बात बतलाऊ,
उसकी कला मै आपको सिखलाऊ,
करती मेहनत का कोई जबाब नही,
उसके जैसा बनना आसान नही.

उठती है सबसे पहले अपने घर मे,
सबसे पहले करती स्नान हम सबमे,
समय पाबंद की कीमत है सिखाती,
हर रोज स्कूल है समय पर जाती.

हर रोज पलटती है पचासो पन्नो को,
नही पलटते हम केवल दो पन्नो को,
सामना करती अनेक अध्यापको का,
विचारो के द्वंद्व को भी सुलझाने का.

वह बहुत है बहादुर हर क्षेत्र मे भी,
करती है कमाल सब क्षेत्र मे भी,
रात देर तक जाग करती है पढ़ाई,
मंजिल पाने को जी जान भी लगाई.

*****

अपना विद्यालय

रचनाकार- रेशमी चौधरी, कक्षा - 9, उच्च प्राथमिक विद्यालय बैनिवालो की ढाणी, राजस्थान

स्कूल हमारा सबसे प्यारा, जग में है सबसे न्यारा.
बचपन बीता इस हस्ति में और स्कूल की मस्ती में.
सबसे प्यारा सबसे न्यारा है यह स्कूल हमारा.
जीवन रूपी मेरे मकान का, पहला पत्थर यहीं लगा.
ज्ञान मिला यहां अपार, और यही मिला अपनों का प्यार.
जो है दुनिया में सबसे प्यारा, यह है स्कूल हमारा.
उद्यान रूपी इस स्कूल में, फिरती है रंग बिरंगी तितली.
रंग रंग के फूलों पर सुंदर, फूल खिलते फूल स्वंय.
उड़ उड़ फूलों से फूलों पर, जीवन अपना बनाए सारा.
स्कूल हमारा सबसे न्यारा, ना कोई इससे प्यारा.

*****

कहते मुझसे पर्यावरण

रचनाकार- पोषण कुमार मारकण्डे, दुर्ग

मैं पेड़ हूँ, मैं हूँ हवा,
मैं सृष्टि का उपहार हूँ.
मैं स्वच्छ निर्मल नीर हूँ,
मैं ही जगत आधार हूँ.

निष्कपट सहित वरदान मैं,
दूषित किया अभिशाप हूँ.
शिक्षित - अशिक्षित सब करें,
मैं स्वच्छता का जाप हूँ.

मुझमें बसा हर आवाज़ है,
मैं ही सृजन-संगीत हूँ.
मैं हूँ, अचेतन चेतना,
मैं ही धारा का मीत हूँ.

सुन ले, समझ ले, तू मानव,
मेरा परम है आवरण.
मैं हूँ प्रबल निरपेक्षता,
कहते मुझसे पर्यावरण.

*****

धन्य एक्सपोसेट मिशन

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

नए वर्ष में नई उड़ान
'इसरो' का नूतन अभियान

धन्य 'एक्सपोसेट' मिशन
सफल हो गया प्रक्षेपण

प्रक्षेपित उपग्रह का कमाल
अंतरिक्ष में मचा धमाल

एक्स - रे किरणों का उद्गम
खोजेगा ब्लैकहोल का भ्रम

एक्स - रे, गामा - रे, रेडियो तरंग
जानेगा ब्रह्मांड के ढंग

कुआसार्स, सुपरनोवा, न्युट्रान
करेगा प्राप्त तारों का ज्ञान

पाँच वर्ष तक करेगा काम
देगा डेटा के पैगाम

वैज्ञानिकों का आभार
भारत को है खुशी अपार

प्रक्षेपण पा गया ऊँचाई
चौंका विश्व देख सच्चाई

*****

सर ना झुकाएंगे जीवन में हम

रचनाकार- श्रीमती मंजू पाठक, दुर्ग

सर ना झुकाएंगे,
जीवन में हम.
भले सर कटाएंगे,
मां भारती की कसम.
सर ना झुकाएंगे,
जीवन में हम.
लाखों कुर्बानियां,
वीरों ने चढ़ाई .
तब यह आज़ादी,
अंग्रेजो से पाई.
इसे हम ना खोएंगे,
यही हमारा प्रण.
सर ना झुकाएंगे,
जीवन में हम.
हिंदू - मुस्लिम,
सिख - इसाई.

आपस में सब,
भाई - भाई.
मिला कर चलेंगे,
कदम -से -कदम.
सर ना झुकाएंगे,
जीवन में हम.
भले सर कटाएंगे,
मां भारती की कसम.
सर ना झुकाएंगे,
जीवन में हम.

*****

बड़प्पन

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला", बालोद

उमरादाह वन में चुनाव सम्पन्न हुआ. इस बार अरण्य ध्वज पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ. पिछले तीन वर्षों से सत्ता में रह रही पार्टी कानन स्वराज दल को पराजय का मुँह देखना पड़ा. विजयी पार्टी प्रमुख गजेश हाथी के उमरादाह वन के नये मुख्यमंत्री बनने की सम्भावना बहुत ज्यादा थी. कुछ दिनों पश्चात सबका कयास सच निकला. गजेश जी के नये मुख्यमंत्री बनने पर सारा जंगल फुला नहीं समा रहा था.

राज्यपाल जबर जेब्रा ने गजराज गजेश जी को मुख्यमंत्री की शपथ दिलवाई. फिर सत्ता में आई अरण्य ध्वज पार्टी ने अपने मंत्रिमंडल का गठन किया. चतुरा लोमड़ ने गृहमंत्री का पद सम्भाला. कैमल ऊँटनी को वित्तीय प्रभार दिया गया. हिन्नी हिरणी विदेशमंत्री बने. शेरसिंह को रक्षामंत्री बनाया गया. लल्लन लकड़बग्घा को स्वास्थ्य प्रभाग मिला. खग्गू खरगोश शिक्षामंत्री का पद पाकर संतुष्ट व खुश था. इसी तरह बिट्टू बंदर, भालू भल्ला, भैरव भेड़िया, सिंघू बारहसिंघा, जैरी जिराफ जैसे अन्य वन्यपशु मंत्रिमंडल में शामिल हुए.

अरण्य ध्वज पार्टी की सरकार बने लगभग दो साल पूरे हो गये. मंत्रीगण मुख्यमंत्री गजेश जी के आदेशों का सहर्ष पालन करते थे. गजेश जी के सरल-सहज व्यवहार मिलनसारिता सबको पसंद थी. वे समस्त वन्य पशुओं का ख्याल तो रखते ही थे; साथ ही अपने मंत्रियों के भी बड़े हितैषी थे. अतएव समस्त वन्यपशुओं के हृदय में उनका एकछत्र राज्य था.

एक बार की बात है. ठण्ड का मौसम था. उमरादाह वन कड़ाके की ठण्ड के चपेट में आ गया. चूँकि वन के दक्षिण दिशा में सिवनी नामक नदी बहती थी; सो नदी से उठने वाली ठण्डी हवाओं की वजह से आसपास के क्षेत्रों में बहुत ही ज्यादा ठण्ड पड़ने लगी. वैसे वह क्षेत्र मूलतः खरगोशों का ही निवास स्थान था. वह स्थान उन्हें भा गया था, क्योंकि नदी किनारे उगने वाली घास दूब खरगोशों का मनपसंद भोजन था. वे वहाँ बहुत खुश थे. पर इस बार देह कँपकँपाने वाली सर्द हवाएँ खरगोशों के लिए जानलेवा साबित होने लगी थी. वे बीमार पड़ने लगे. उनकी स्थिति बद से बदत्तर होने लगी. इस तरह उमरादाह वन का समूचा दक्षिणी क्षेत्र निमोनिया के चपेट में आ गया. यह खबर देखते ही देखते पूरे उमरादाह वन में जंगल की आग की तरह फैल गयी.

दक्षिणी क्षेत्र के खरगोशों में फैली निमोनिया बीमारी का समाचार स्वास्थ्य विभाग को पता चला. अब इस बात की भनक स्वास्थ्य मंत्री लल्लन लकड़बग्घा को भी लग गयी. फिर वे तुरंत अपने सहयोगी व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी व कर्मचारी के साथ वन के दक्षिणी क्षेत्र की ओर रवाना हुए. पूरी स्वास्थ्य टीम शासकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र - गुरूर पहुँची.

स्वास्थ्य मंत्री लल्लन जी सीधे रैबिट वार्ड पहुँचे. सभी बीमार खरगोशों की स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारी लेने लगे. जैसे ही वे एक बूढ़े खरगोश का हालचाल जानने के बाद आगे बढ़ रहे थे कि उन्हें एक युवा खरगोश राशु की रोने की आवाज सुनाई दी. लल्लन जी ने उनके पास जाकर रोने का कारण पूछा, तब राशु खरगोश ने बताया- "मुझे बचा लो मंत्री साहब. मैं मरना नहीं चाहता. घर में मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं. उनकी माँ नहीं है. अगर मैं भी चला गया तो वे अनाथ हो जाएँगे." लल्लन जी ढाँढस बँधाते हुए बोले- "घबराइए मत भैया. आप ठीक हो जाएँगे. देखिए न, ये बड़े-बड़े डॉक्टर आप लोगों के ट्रीटमेंट में लगे हुए हैं. पूरी स्वास्थ्य टीम लगी हुई है. यहाँ किसी को भी कुछ नहीं होगा. राशु जी, ये शारीरिक अस्वस्थता नदी की बाढ़ की तरह होती है. आती है तो अचानक और बड़ी तेजी से; और यह उतरती धीरे, पर उतरती जरूर है. इसलिए बिल्कुल निश्चिंत रहिए. सब ठीक होगा."

लल्लन जी पूरे रैबिट वार्ड की ओर अपनी नजर दौड़ाने लगे. उन्होंने देखा कि सभी डॉक्टर, नर्स व अन्य कर्मचारी इलाज में लगे हुए हैं. वे आगे बढ़ ही रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि एक माँ अपने शरीर से अपने बच्चे को ढँक रही है. कभी वह उसे जीभ से चाटती, तो कभी अपनी पूँछ से सहलाती. लल्लन जी ने खरगोश माँ से पूछा- "क्या नाम है बहनजी आपका ? "

"गिशी. " माँ खरगोश उठकर बैठी.

"और इस छोटू का ?" लल्लन जी ने उसके बच्चे पर बड़े प्यार से उंगलियाँ चलाई.

"खगेश." गिशी खरगोश ने मुस्कुराते हुए कहा.

"क्या हुआ है इसे ?" लल्लन जी ने बच्चे के बारे में जानना चाहा.

"बहुत सर्दी है इसे." गिशी खगेश के कान को अपनी पूँछ से ढँकती हुई बोली.

फिर लल्लन जी बोले- "बिल्कुल चिंता मत करना बहन. तुम्हारा खगेश जल्दी ठीक हो जाएगा. यहाँ से आप दोनों माँ-बेटे हँसते-मुस्कुराते हुए अपने घर जाएँगे." फिर लल्लन जी रैबिट वार्ड के मरीजों के शीघ्र स्वास्थ्य की कामना करते हुए लकड़बग्घा वार्ड की ओर गये.

लल्लन जी के लकड़बग्घा वार्ड पहुँचते ही डॉ. लक्की लकड़बग्घा ने उन्हें अकेले में उम्रदराज लालू लकड़बग्घा के बारे में बताया कि इस पर उम्र का असर है. यह दो-तीन बीमारियों से पीड़ित है." डॉ. लक्की कुछ और बता ही रहे थे कि लल्लन जी ने पूछा- "फिलहाल इनका इलाज कैसे किया जा सकता है ?"

डॉ. लक्की बोले- "इनके कुछ अंग ठीक से काम भी नहीं कर रहे हैं. फिलहाल तो इन्हें खून की जरूरत है. इनके शरीर में बहुत ही कम खून रह गया है, और अपने पास ब्लड बैंक में इनके ब्लडग्रुप का खून भी उपलब्ध नहीं है. ब्लड डोनेट करने वाले भी नहीं है. खून की व्यवस्था नहीं हुई तो इनकी जान को खतरा है."

डॉ. लक्की के बात खत्म होते ही लल्लन जी ने लालू लकड़बग्घे की ओर देखा. बोले- "डॉक्टर लक्की जी, मैं दूँगा लालू जी को खून. आप मेरा खून टेस्ट कर लीजिए. प्लीज़. हरि-अप." स्वास्थ्य मंत्री लल्लन जी की बातें सुनकर वार्ड में उपस्थित सभी लकड़बग्घों के चेहरे पर मुस्कान पसर गयी.

*****

तिरंगा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

भारत माँ की शान तिरंगा.
जनगणमन' जयगान तिरंगा.

सियाचिन सर्वोच्च शिखर पर
विखराता मुस्कान तिरंगा.

न्याय, धर्म, अभिव्यक्ति, प्रतिष्ठा
स्वतंत्रता प्रतिमान तिरंगा.

राष्ट्र एकता, अखण्डता की
सर्वोत्तम पहचान तिरंगा.

साहस, बल, प्रेरणा जगाकर
दूर करे व्यवधान तिरंगा.

'वंदेमातरम' का स्वर सुनकर
भरता नव लय - तान तिरंगा.

हम भारत के लोगों के हित
मिला अभय वरदान तिरंगा.

कभी नहीं हम झुकने देंगे
आन - बान, अभिमान तिरंगा.

*****

नन्हीं चिड़िया

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

मैं नन्हीं - सी चिड़िया हूँ.
करती रहती चीं चीं चूँ.

मेरा नीड़ उजाड़ दिया
बोलो! मैं अब कहाँ रहूँ.

कहीं घरों में जगह नहीं
अण्डे अपने कहाँ धरूँ.

डर है विद्युत - तारों का
किसी को क्या है, जियूँ-मरूँ.

रहे नहीं जलस्रोत कहीं
कैसे अपनी प्यास हरूँ.

तरस रही हूँ दानों को
कैसे अपना पेट भरूँ.

पौधे - पेड़ नहीं दिखते
हवा विषैली, बहुत डरूँ.

टॉवर फैलाते विकिरण
हो उन्मुक्त. कहाँ विचरूँ.

*****

मैं हूँ किताब

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

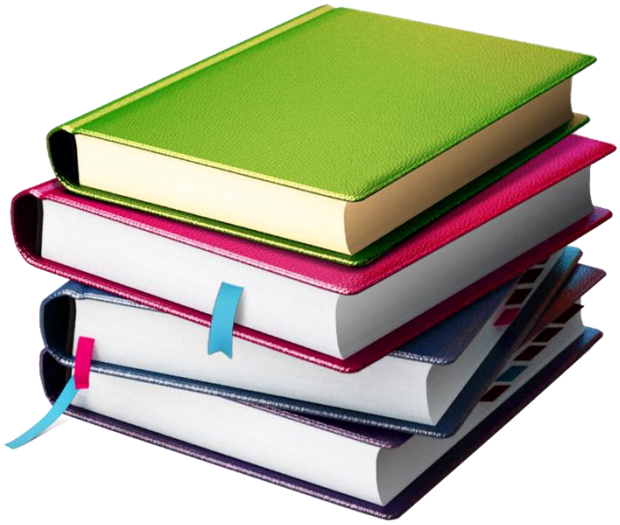

जी हां मैं हूँ किताब.
करती हूँ मैं दुनिया की बात.

सर्वोपरि है विश्व में मेरा स्थान.
देती हूँ मैं नैतिक शिक्षा का ज्ञान.

कभी हल्की कभी भारी.
पर देती हूँ सदैव जानकारी.

हो जाती है जब बात पुरानी.
बन जाती हूँ ऐतिहासिक रानी.

सफलता का मार्ग दिखलाती हूँ.
जीवन के रहस्यों को सुलझाती हूँ.

आता है जब आर्गन और निऑन.
बन जाती हूँ मैं विज्ञान.

ऐसा कोई प्रश्न नहीं दुनिया का.
जिसका जवाब पास नहीं मेरे.

कभी दोस्त कभी मार्गदर्शन बनकर.
राहगीरों को मंजिल तक पहुंचती हूँ.

सबसे बुद्धिमान सलाहकार भी मैं हूँ.
हूँ सबसे बुद्धिमान शिक्षक भी.

करते है सब मुझ पर विश्वास.
जी हां मैं हूँ किताब.

*****

ऊर्जा संरक्षण

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

ऊर्जा है जीवन का आधार,
सब मिलजुल कर करे विचार.

लाए नए स्रोत करे नवाचार,
ले संकल्प करे प्रचार प्रसार.

राखे इसके संरक्षण का ध्यान,
भविष्य में मुश्किल है निर्माण.

मोटर गाड़ी यूँ ना दौड़ाएं,
जरूरत पड़े तभी चलाएं.

डीजल पेट्रोल है सीमित,
भावी पीढ़ी के लिए बचाए.

करो बंद बल्ब और पंखे,
होगा कम बिजली पर खर्चे.

है जरूरी जनसंख्या नियंत्रण,
संभव तभी ऊर्जा संरक्षण.

मिलकर चलाएं एक अभियान,
सबको ऊर्जा संरक्षण का दे ज्ञान.

*****

नया साल, नई उम्मीदें, नए सपने, नए लक्ष्य

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हिसार

नए साल पर अपनी आशाएँ रखना हमारे लिए बहुत अच्छी बात है, हमें यह भी समझने की ज़रूरत है कि आशाओं के साथ निराशाएँ भी आती हैं. जीवन द्वंद्व का खेल है और नया साल भी इसका अपवाद नहीं है. यदि हम 'बीते वर्ष' पर ईमानदारी से विचार करें, तो हमें एहसास होगा कि हालांकि यह आवश्यक नहीं है कि वर्ष ने वह प्रदान किया हो जो हमने उससे चाहा था, लेकिन इसने हमें कुछ बहुमूल्य सीख और अनुभव अवश्य दिए. ये अलग से बहुत महत्वपूर्ण नहीं लग सकते हैं, लेकिन संभवतः ये प्रकृति का हमें उस उपहार के लिए तैयार करने का तरीका है जो उसने हमारे लिए रखा है जिसे वह अपनी समय सीमा में वितरित करेगी. साथ ही, अगर साल ने हमसे कुछ बहुत कीमती चीज़ छीन ली है, तो निश्चित रूप से उसने उसकी समान मात्रा में भरपाई भी कर दी है. वर्ष के अंत में, हमें एहसास होता है कि हमारी बैलेंस शीट काफी उचित है. तो, आइए हम आने वाले वर्ष में इस विश्वास के साथ प्रवेश करें कि नए साल का जादू यह जानने में निहित है कि चाहे कुछ भी हो, हर निराशा के लिए मुआवजा होगा, हर इच्छा की पूर्ति के लिए एक सीख होगी.

नया साल हमारे लिए नया समय ही नहीं बल्कि नए समय के साथ नई उम्मीदें, नए सपने, नया लक्ष्य, नए विचार और नए इरादे लेकर आता है. हम सभी को नए साल की शुरुआत अच्छे और नेक कामों के साथ करनी चाहिए. नया साल हमारे मन के

भीतर आशा की नई किरण जगाता है. नया साल तो हर साल आता है लेकिन क्या कभी हमनें ये सोचने की कोशिश की है कि हमने इस साल क्या नया और खास किया जिससे ये साल हमारे लिए यादगार साल बन जाए. हम अपनी जिंदगी में बहुत से उतार-चढ़ाव का सामना करते हैं और ये जरूरी नहीं है कि हर व्यक्ति के लिए हर साल अच्छा ही जाए या हर साल हर किसी के लिए बुरा ही जाए लेकिन इसका मतलब ये नहीं होता है कि हम बीते कल को भूल जाएं. बीता हुआ कल तो हमें आज के लिए और आने वाले कल के लिए सीख देकर जाता है कि कैसे हम अपने कल को आज से बेहतर बना सकते हैं-

*बीत गया ये साल तो, देकर सुख-दुःख मीत.

क्या पता? क्या है बुना ? नई भोर ने गीत.

जो खोया वो सोचकर, होना नहीं उदास.

जब तक साँसे ये चले, रख खुशियों की आस.*

हर साल, साल-दर-साल, हम अपने दिल में एक गीत और कदमों में वसंत के साथ नए साल में प्रवेश करते हैं. हमें विश्वास है कि जादुई वर्ष अपने साथ हमारी सभी समस्याओं का समाधान लाएगा और हमारी सभी इच्छाएँ पूरी करेगा. चाहे वह सपनों का घर हो, सपनों का प्रस्ताव हो, सपनों की नौकरी हो, सपनों का साथी हो, सपनों का अवसर हो.. और भी बहुत कुछ बेहतर हो. लेकिन जैसे-जैसे साल शुरू होता है और हम जो कुछ भी सामने आता है उससे निपटते हैं, नए साल की नवीनता, नए संकल्प, नई शुरुआत पहली तिमाही तक लुप्त होने लगती है. वर्ष के मध्य तक हम बहुत अधिक सामान्यता और कई फीकी आशाओं की चपेट में होते हैं, जो उस वादे से बहुत दूर है जिसके साथ हमने शुरुआत की थी. और आखिरी तिमाही तक हम अपनी वास्तविकता से इतने अभिभूत हो जाते हैं कि हम साल खत्म होने का इंतजार नहीं कर सकते. हम वर्तमान वर्ष को छोड़ते हुए और एक और 'नया साल' मनाने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाते हैं और शुभकामनाएं बांटते है-

*बाँट रहे शुभकामना, मंगल हो नववर्ष.

आनंद उत्कर्ष बढ़े, हर चेहरे हो हर्ष.

गर्वित होकर जिंदगी, लिखे अमर अभिलेख.

सौरभ ऐसी खींचिए, सुंदर जीवन रेख.*

नववर्ष वह समय है जब हमें अचानक लगता है कि, ओह, एक साल बीत गया. हम कुछ पलों के लिए स्तब्ध हो जाते हैं कि समय कितनी जल्दी बीत जाता है, और फिर हम वापिस अपने काम में व्यस्त हो जाते हैं. मजेे की बात यह है कि ऐसा साल में लगभग एक बार तो होता ही है. यदि हम आश्चर्य के इन क्षणों की गहराई में जाएं, तब हम पाएंगे कि हमारे भीतर कुछ ऐसा है जो सभी घटनाओं को साक्षी भाव से देख रहा है. हमारे भीतर का यह साक्षी भाव अपरिवर्तित रहता है और इसीलिए हम समय के साथ बदलती घटनाओं को देख पाते हैं. जीवन की वे सभी घटनाएं जो बीत चुकी हैं, एक स्वप्न बन गई हैं. जीवन के इस स्वप्न-जैसे स्वभाव को समझना ही ज्ञान है. यह स्वप्न अभी इस क्षण भी चल रहा है. जब हम यह बात समझते हैं तब हमारे भीतर से एक प्रबल शक्ति का उदय होता है और फिर घटनाएं व परिस्थितियां हमें हिलाती नहीं हैं. हालांकि, घटनाओं का भी जीवन में अपना महत्व है. हमें घटनाओं से सीखना चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए. नया साल नई उम्मीदें, नए सपने, नए लक्ष्य और नए आइडिया की उम्मीद देता है, इसलिए सभी लोग खुशी से बिना किसी मलाल के इसका स्वागत करते हैं-

*आते जाते साल है, करना नहीं मलाल.

सौरभ एक दुआ करे, रहे सभी खुशहाल.

छोटी सी है जिंदगी, बैर भुलाये मीत.

नई भोर का स्वागतम, प्रेम बढ़ाये प्रीत.*

हालाँकि नए साल पर अपनी आशाएँ रखना हमारे लिए बहुत अच्छी बात है, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि आशाओं के साथ निराशाएँ भी आती हैं. जीवन द्वंद्व का खेल है और नया साल भी इसका अपवाद नहीं है. यदि हम 'बीते वर्ष' पर ईमानदारी से विचार करें, तो हमें एहसास होगा कि यह आवश्यक नहीं है कि वर्ष ने वह प्रदान किया हो जो हमने उससे चाहा था, लेकिन इसने हमें कुछ बहुमूल्य सीख और अनुभव अवश्य दिए. ये अलग से बहुत महत्वपूर्ण नहीं लग सकते हैं, लेकिन ये संभवतः प्रकृति का हमें उस उपहार के लिए तैयार करने का तरीका है जो उसने हमारे लिए रखा है जिसे वह अपनी समय सीमा में वितरित करेगी. साथ ही, अगर साल ने हमसे कुछ बहुत कीमती चीज़ छीन ली है, तो निश्चित रूप से उसने उसकी समान मात्रा में भरपाई भी कर दी है. वर्ष के अंत में, हमें एहसास होता है कि हमारी

बैलेंस शीट काफी उचित है. तो, आइए हम आने वाले वर्ष में इस विश्वास के साथ प्रवेश करें कि नए साल का जादू यह जानने में निहित है कि चाहे कुछ भी हो, हर निराशा के लिए मुआवजा होगा, हर इच्छा की पूर्ति के लिए एक सीख होगी, दर्द-दुखों का अंत होगा, अपनेपन की धूप होगी-

*छँटे कुहासा मौन का, निखरे मन का रूप.

सब रिश्तों में खिल उठे, अपनेपन की धूप.

दर्द- दुखों का अंत हो, विपदाएं हो दूर.

कोई भी न हो कहीं, रोने को मजबूर.*

नए साल पर अपने लिए लक्ष्य निर्धारित कर लें. छात्र हों या नौकरीपेशा, सभी के लिए कोई न कोई लक्ष्य होना जरूरी होता है. भविष्य को बेहतर बनाने के लिए क्या कर सकते हैं और किस दिशा में प्रयास करना है, इन सब का निर्धारण करने के बाद उसे पूरा करने का संकल्प ले लें. आपका संकल्प हमेशा लक्ष्य को पूरा करने की याद दिलाता रहेगा. सभी 'नए साल' को जीवनकाल से जोड़ते हैं और हमारा जीवनकाल आशाओं और निराशाओं, सफलताओं और असफलताओं, खुशियों और दुखों के बारे में है और यह वर्ष भी कम जादुई नहीं होगा. तो इस वर्ष आप अपने संकल्पों को कैसे पूरा कर सकते हैं? इस बारे सोच समझकर आगे बढिये, दूसरों से समर्थन मांगें, अपने मित्रों और परिवार से आपका उत्साह बढ़ाने के लिए कहें. उन्हें अपने लक्ष्य बताएं और आप क्या हासिल करना चाहते हैं. अपने लिए एक इनाम प्रणाली बनाएं, अल्पकालिक लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें पूरा करने के लिए स्वयं को पुरस्कृत करें. अपने ऊपर दया कीजिये, कोई भी एकदम सही नहीं होता. अपने आप को कोसने की बजाय गहरी सांस लें और नव उत्कर्ष के प्रयास करते रहें-

*खोल दीजिये राज सब, करिये नव उत्कर्ष.

चेतन अवचेतन खिले, सौरभ इस नववर्ष.

हँसी-खुशी, सुख-शांति हो, खुशियां हो जीवंत.

मन की सूखी डाल पर, खिले सौरभ बसंत.*

ऐसा माना जाता है कि साल का पहला दिन अगर उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाए, तो पूरा साल इसी उत्साह और खुशियों के साथ बीतेगा. हालांकि भारतीय परम्परा के अनुसार नया साल एक नई शुरुआत को दर्शाता है और हमेशा आगे बढ़ने की सीख देता है. पुराने साल में हमने जो भी किया, सीखा, सफल या असफल हुए उससे सीख लेकर, एक नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ना चाहिए. ताकि इस वर्ष की एक सुखद पहचान बने-

*खिली-खिली हो जिंदगी, महक उठे अरमान.

आशा है नव साल की, सुखद बने पहचान.

छेड़ रही है प्यार की, मीठी-मीठी तान.

नए साल के पँख पर, खुशबू भरे उड़ान.

*****

नया साल : लक्ष्य की ओर

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

चलो नया साल में कुछ नया करेंगे,
हार को फिर भव्य जीत में बदलेंगे.
अतीत की बीती बातें याद आयेंगी,
कभी रुलायेंगी तो कभी हँसायेंगी.
क्या खोया है और क्या पाया हमने?
खुद उन्नति की गणित लगाया हमने.
समय लाता परिवर्तन और स्थिरता,
मानव मानसिक शक्ति में गंभीरता.
सब कुछ भूल कर नव शुरुआत होगी,
एक बार फिर संघर्ष से मुलाकात होगी.
प्रयासों का बीज धरती पर बोते चलेंगे,
तभी हमको कर्म का मीठा फल मिलेंगे.
उम्मीद की कलम से तकदीर लिखेंगे,
जीवन की पुस्तिका में सात रंग भरेंगे.
बढ़ेंगे आगे सभी भर कर मन में जुनून,
लक्ष्य को पाकर हमको मिलेगा सुकून.

*****

छत्तीसगढ़ के माटी

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर", महासमुंद

अन धन के भंडार महि अँव,मैं ही धनहा डोली अँव.
दया मया अउ सुख सुमता के,मैं ही गुरतुर बोली अँव.
गौरा करमा सुआ ददरिया,भोजली के परिपाटी अँव.
मैं छत्तीसगढ़ के माटी अँव,मैं छत्तीसगढ़ के माटी अँव.

मोर हरियर भुइयाँ म बइठे, है अकइसो दाई.
मड़वारानी सरमंगला, महमाया अउ बम्बलाई.
शवरीनारायन गिरौदपुर,अउ हे राजिम लोचन.
जगा जगा हनमान बिराजे,बनके संकट मोचन.
सब देवता के मान करोइया,मैं ही नँगरिया खाँटी अँव.
मैं छत्तीसगढ़ के माटी अँव,मैं छत्तीसगढ़ के माटी अँव.

इही धरती म रामचन्द्र के,जनमे हे महतारी.
तेकरे बर भांचा के पाव,परथन सब नर नारी.

बीरनारायन इही भुइयाँ बर,दिस अपन बलिदानी.
लोरिक के चंदा के भी हावय,जग म अमर कहानी.
परम्परा के भरे खजाना,जेकर महि मुँहाटी अँव.
मैं छत्तीसगढ़ के माटी अँव,मैं छत्तीसगढ़ के माटी अँव.

मैं ही राहेर तिवरा ओनहारी,के सोनहा होरा.
ये दुनिया मोला जाने ,कहिथे धान कटोरा.
मैं ही नांगर मैं बईला, मैं ही सुघ्घर तुतारी.
सुघ्घर लिपे पोते अँगना, हरियर कोला बारी.
मैं ही छानी खपरा अउ,मैं ही फइका टाटी अँव.
मैं छत्तीसगढ़ के माटी अँव,मैं छत्तीसगढ़ के माटी अँव.

*****

कोहिनूराँचल

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर", महासमुंद

कण कण में हैं जो बसे,इस जग के सुखधाम.
हम सब पर करने कृपा, आज पधारे राम.

आज अयोध्या का हुआ,अतुल अजब विस्तार.
व्यापित हैं रघुवर जहाँ, जग के पालनहार.

राम-राज्य की कामना, पूर्ण हुई हर चाह.
रामलला के दर्श से, खुशियाँ मिले अथाह.

पुण्य अयोध्या में लगा, राम-राज्य दरबार.
मंदिर के निर्माण का , स्वप्न हुआ साकार.

कोहिनूर करते रहो, राम नाम का जाप.
कुंदन बनता है हृदय,सहज स्वयं ही आप.

*****

परीक्षा पर चर्चा

रचनाकार- सुप्रिया शर्मा, रायपुर

परीक्षा पर चर्चा,होती रहना चाहिए.
तनाव हो कम,
एसा माहौल होना चाहिए.
माता-पिता और शिक्षकों को,
बच्चों को समझना चाहिए.
परीक्षा पर चर्चा, होती रहना चाहिए.
ईमानदारी से हो मेहनत,
परिणाम का स्वागत होना चाहिए.
है मोबाइल सबके पास अब,
पर प्रयोग समझदारी से होना चाहिए.
हर चीज है जरूरी,
नियमित दिनचर्या होनी चाहिए.
खाना हो पौष्टिक,
नींद पूरी होनी चाहिए.
परीक्षा पर चर्चा होती रहना चाहिए.
दोस्तों से मिलते रहना चाहिए,
द्वेष को छोड़ सहयोग करना चाहिए.
परीक्षा पर चर्चा,होती रहना चाहिए.

विश्वास पर टिका हर रिश्ता,
पारदर्शिता बनाए रखना चाहिए.
लगा लो ध्यान स्वयं पर,
इधर उधर देख घबराना नहीं चाहिए.
पढ़ो लिखो,
ध्यान रखो स्वास्थ्य का भी.
साथ साथ, सरल व्यायाम होना चाहिए.
परीक्षा पर चर्चा होती रहना चाहिए.
नवाचार नव गतिविधि का बोध होना चाहिए.
लोकल व्यवसाय को बढ़ावा मिलना चाहिए.
बहु-भाषीय हो शिक्षण, मातृ- भाषा का ध्यान रखना चाहिए.
परीक्षा पर चर्चा होती रहना चाहिए.
चुनौतियों से डरना नहीं,
चुनौतियों को चुनौती देना चाहिए.
परीक्षा पर चर्चा होती रहना चाहिए.

*****

पीपल की पुकार

रचनाकार- विकास बिश्नोई, हिसार

दादी मां दादी मां, आपके लिए गांव से चिट्ठी आई है', 10 साल के पोते राहुल ने अपनी दादी को पुकारते हुए कहा. मेरे लिए चिट्ठी, भला किसने लिख दी, दादी ने अचंभित होकर कहा. 'पता नहीं, अभी एक भैया चिट्ठी देकर गए', राहुल ने उत्तर दिया.

दादी मां ने चिट्ठी देखी तो गांव के सबसे पुराने पीपल के पेड़ की चिट्ठी थी. अपनी व्यथा सुनाते हुए पीपल के पेड़ ने लिखा था, मेरी बहन, तुमने मुझे राखी बांधी थी ना, आज मुझे तुम्हारी जरूरत है. तुम्हारा बेटा तुम्हें शहर ले गया, हो सके तो गांव वापस आकर मुझे बचा लो. आज यहां कुछ लोग पास के एक शहर से आए. मेरी छांव में बैठकर हाईवे बनाने के लिए मुझे काटने की बात कर रहे थे. बहुत से पेड़ों को तो काट भी दिया है. मैं फिर भी अपनी जिंदगी लगभग जी चुका. मुझे मुझसे ज्यादा चिंता मुझपर रहने वाले छोटे बड़े पक्षियों की है, उनका क्या होगा. वो सब बेघर हो जाएंगे. इसलिए हो सके तो गांव लौटकर इन लोगों को रोक लेना मेरी बहन. पत्र पढ़कर दादी मां की आंखें आंसू से भर गई और वह गाँव की ओर रवाना हो गई.

*****

आज राम का दिन है

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गांव गांव शहर शहर
नगर नगर हर्ष छाया है.
बहुत साल के बाद
राम का दिन आया है.

गली गली शहर शहर
भगवा लहरा रहा है.
हर कोई राम का
जय कारा लगा रहा है.

शहर शहर नगर नगर
राम की झांकी निकली है.
भक्तों की भारी भीड़
आज देखो उमड़ी है.

चलो राम का नाम ले कर
अपना पाप सब धो लें.
आओ हम सब राम के
खूब गुणगान गा लें.

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 मो		2		■	3 ब	4			■
	■		■	5 प			■	■	6
	■	7 कु			■	8 ला	9	10	
■	11		■	12 जा		■	13		■
14 खु			■		■	■		■	15
16		■	17 कु		18	■	19 ह	20	
21		22 न	■	■	23		■		■
■	■	24		25 स		■	26 क		27 ल
28 को			■		■	29 ग		■	
	■		■	30 उ				■	

बाएँ से दाएँ

1. प्रेम या दिखावा के लिए किया गया कार्य 3. बिखराया 5. जूता 7. कुत्ता 8. रिश्तेदार 11. करो 12. जामुन 13. कपास का रेशा / पोनी (हिंदी)14. पशुओं का रोग 16. प्रेम का शब्द 17. मुर्गा 19. पहुँच 21. मित्रता का रिश्ता 23. कील 24. वैसा 26. बांस का कोपल 28. हिरण 29. मछली पकड़ने का कांटा 30. उदंड

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 ह	रे	2 ली	■	3 रि	4 को	■	5 अ	ऊँ	6 क
रो	■	7 मा	8 चा	■	9 ट	र	का	■	री
नी	■	10 न	ह	11 डो	री	■	12 र	13 थि	या
■	14 क	■	■	क	■	15 चि	थ	रा	■
■	16 छे	र	17 छे	रा	■	ख	■	य	■
18 टू	री	■	री	■	19 ची	ला	■	■	20 ता
क	■	21 ह	या	■	वां	■	22 क	23 ई	त
24 ना	र	द	■	25 म	र	26 हा	■	र	■
■	■	र	■	ड़	■	27 ल	28 ग	वा	29 र
30 आ	ठे	क	न्ह	ई	या	■	31 ज	र	हा

ऊपर से नीचे

1. गठरी 2. शर्मिला 3. जंगल 4. गहरा 5. दुसरे जाति का 6. बोली. 9. गर्भवती 10. मुख्य, माता 11. एक भाजी का नाम 14. छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध व्यंजन 15. जला 18. रखा/रखें 20. झाड़ू 22. नवेला 25. करने योग्य, आजमाईश 26. काला 27. वापस हो 28. बाड़ी 29. ताश का खेल